जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 19 संख्याः 26 प्रभात जालोर, शुक्रवार 3 मई, 2024 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

बांग्लादेश में गत कुछ समय से टाइगर के अंगों से बनी वस्तुओं व दवाओं का उपभोग बढ़ गया है। इससे यहाँ के संकटग्रस्त बंगाल टाइगर के लिए खतरा और बढ़ गया है। आमतौर पर तो विदेशी मांग पूरी करने के लिए इनका शिकार किया जाता था पर अब स्थानीय स्तर पर भी बंगाल टाइगर के अंगों से बने उत्पादों की मांग बढ़ रही है। अध्ययन के प्रमुख लेखक, चीन में यूनान के शीशाँगबाना ट्रॉपिकल बॉटैनिकल गार्डन के नासिर उद्दीन ने कहा कि, एतिहासिक रुप से बांग्लादेश जीवित टाइगर और टाइगर के अंगों का प्रमुख सप्लायर रहा है, पर हाल ही में हमने देखा कि घरेलू स्तर पर इन उत्पादों की खपत बढ़ी है, खासकर सम्पन्न वर्ग में। इस मांग की पूर्ति के लिए भारत और म्यानमार में टाइगर के अवैध शिकार में तेजी आई है। शोध में पता चला है कि, बांग्लादेश 15 देशों तथा उन स्थानों पर, जहाँ बड़ी संख्या में बंगलादेशी रहते हैं, टाइगर के अंगों की आपूर्ति करता है। इनमें भारत, चीन, मलेशिया टॉप पर हैं तथा यू.के., जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया एवं जापान जैसे देश भी इसमें शामिल हैं। शोध के अनुसार, टाइगर की खाल, हड्डियां, दांत और सुखाए हुए मांस की मांग बहुत ज्यादा है। टाइगर के शावकों की तस्करी के प्रमाण भी मिले हैं। मोहम्मद सनाउल्लाह पटवारी, जो कि बांग्लादेश वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल यूनियन के प्रमुख हैं, ने कहा कि, वन्यजीवों की तस्करी भारी चुनौती है। बांग्लादेश के विभिन्न समुदायों में टाइगर के अंगों को लेकर जो सांस्कृतिक मान्यताएं हैं, उनकी वजह से यह अवैध व्यापार ज्यादा बढ़ा है और अब यह देश टाइगर और उसके अंगों की तस्करी का केन्द्र बन गया है। वर्ष 2022 में आई रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2000 से जून 2022 के बीच टाइगर व उसके अंगों की बरामदगी के 36 मामले सामने आए, जिसमें 50 टाइगर बरामद किए गए। लेकिन, इस अवधि में मात्र 6 लोगों को ही जेल हुई और चार पर जुर्माना हुआ।

''दरबार पॉलिटिक्स'' के कारण अभी तक अटका हुआ है कांग्रेस का अमेठी व रायबरेली का निर्णय

प्रियंका गाँधी, रायबरेली से चुनाव लड़ने के लिये काफी आतुर दिखती हैं

- पर, राहुल उनको यह चुनाव नहीं लड़ाना चाहते।
- राहुल के सलाहकारों ने राहुल को पूरी तरह समझा रखा है कि, अगर प्रियंका रायबरेली से चुनाव जीत कर संसद में पहुंच जाती हैं तो वे एक बड़े ''पावर सेन्टर'' के रूप में उभरकर, राहुल के लिये, उनके नेतृत्व के लिए भारी चुनौती बन सकती हैं।
- अतः राहुल गाँधी, प्रियंका को रायबरेली से चुनाव लड़ाने के काफी खिलाफ हैं।
- हाल ही में कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे राहुल गाँधी से शिमोगा एयरपोर्ट पर मिले तथा पूरा प्रयास किया, राहुल को अमेठी से चुनाव लड़ने के लिए मनाने का। इसके बाद के.सी. वेणुगोपाल ने भी राहुल को अमेठी से चुनाव लड़ने के लिये मनाने की कोशिश की, सोनिया गाँधी भी यह तर्क सही मानती हैं कि, राहुल अगर अमेठी से चुनाव नहीं लड़ेंगे तो इण्डिया गठबंधन को नुकसान होगा।
- पर, राहुल गाँधी इन सभी तर्कों से सहमत नहीं है, अतः अमेठी का टिकट कांग्रेस के गले की घंटी हो गया है तथा इस मुद्दे का कोई समाधान किसी की भी समझ में नहीं आ रहा है।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। अमेठी और रायबरेली लोकसभा सीटों पर कांग्रेस से कौन चुनाव लड़ेगा, इसे लेकर बहुत ज्यादा भ्रामक स्थिति बनी हुई है।

कल नामांकन पत्र दाखिल करने का अंतिम दिन है और गाँधी परिवार के अलावा इस विषय में किसी के पास कोई जानकारी नहीं है और यह परिवार इस बात को लेकर बिल्कुल चुप्पी साधे हुए है कि, क्या राहुल और प्रियंका क्रमशः अमेठी और रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे।

जयराम रमेश जब यह कहते हैं कि, प्रत्याशियों की लिस्ट आ रही है, तब उनके चेहरे पर बेचैनी स्पष्ट नज़र आती है क्योंकि पिछले कुछ दिनों से यही कुछ चलता रहा है।

उधर, भाजपा ने उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री दिनेश को रायबरेली से अपना उम्मीदवार बनाने की घोषणा की है। दिनेश पिछली बार रायबरेली में सोनिया गाँधी से चुनाव हार गए थे और अमेठी में स्मृति ईरानी, राहुल गांधी के चुनाव मैदान में उतरने की प्रतीक्षा कर रही है।

राहुल गांधी पिछली बार अमेठी में स्मृति ईरानी से सामने चुनाव हार गए थे। स्मृति ने उसके बाद अमेठी में एक घर खरीदा और वहीं बस गईं।

अमेठी और रायबरेली के कांग्रेसी राहुल अैर प्रियंका, दोनों से यह पुरजोर अनुरोध कर रहे हैं कि वे अपने परिवार की सीटें बचाएं।

सोनिया गाँधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और इण्डिया गठबंधन की सहयोगी पार्टियों द्वारा भी यही तर्क दिया जा रहा है कि, चुनाव नहीं लड़ने का निर्णय उत्तर भारत में कांग्रेस और विपक्ष के इंडिया गठबंधन को क्षति पहुंचाएगा क्योंकि कांग्रेस ने भाजपा के खिलाफ जो गति पकड़ी है वह इससे समाप्त हो जाएगी।

ज्ञात हुआ है कि अमेठी और रायबरेली की सीटों को लेकर राहुल और मल्लिकार्जुन खड़गे ने शिमोगा एयरपोर्ट पर चर्चा हुई थी, लेकिन सूत्र बताते हैं कि राहुल असहमत से नज़र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चूरू में भाजपा प्रत्याशी कांग्रेस के राहुल कस्वां से नहीं बल्कि अपनी पार्टी के वसुंधरा गुट से हारेगा?

राहुल कस्वां को हमेशा से वसुंधरा गुट का माना जाता है, पर इस बार राहुल कस्वां का टिकट काट दिया गया

- टिकट कटने के बाद राहुल कस्वां रातोंरात कांग्रेस के प्रत्याशी बन गए, इससे कांग्रेस में भारी असंतोष फैला और टिकट के दावेदार माने जाने वाले सभी नेता घर बैठ गए। कांग्रेस कार्यकर्ताओं की उदासीनता को आमजन ने भी समझ लिया था, कस्वां पिछड़ से रहे थे।
- राहुल कस्वां को हो रहे इस नुकसान की भरपाई वसुंधरा गुट ने कर दी। इस गुट ने भाजपा में रह कर ही भाजपा के देवेन्द्र झांझड़ियां की भारी खिलाफत की। समझा जाता है कि, इन्हीं लोगों ने राजेन्द्र राठौड़ को तारानगर चुनाव हरवाया था।
- पूरे चुनाव में जाट राहुल कस्वां के पक्ष में तो राजपूत झांझड़िया के पक्ष में लामबंद नज़र आए और अन्य जातियों, जैसे ब्राह्मण, वैश्य, सैनी, प्रजापत, आदि की बात करे तो इनके वोट बंट गए, लेकिन एस.सी., एस.टी. के वोट भारी तादाद में कांग्रेस को मिले।

चूरू, 2 मई (कासं.)। चूरू लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के पक्ष में चली हवा मतदान से पहले ही बदल गई। ये बदली हुई हवा भाजपा उम्मीदवार देवेन्द्र झांझड़िया, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ के साथ-साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के लिए भी हानिकारक साबित होगी। क्योंकि भजनलाल शर्मा अपनी चुनावी सभाओं में बार-बार यह दावा कर चुके हैं कि राजस्थान में भाजपा सभी 25 सीटों पर जीत हासिल करेगी, वो भी 5 लाख मतों से पर चूरू इसमें अड़चन बनता लग रहा है। सूत्रों का कहना है कि सभी 25 सीटें जीतने का दावा वसुंधरा गुट की वजह से नामूमकिन प्रतीत हो रहा है।

चूरु में भाजपा ने दो बार सांसद रहे राहुल कस्वां का टिकट काटकर पैरालम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झांझड़िया को मैदान में उतारा। समझा जाता है कि यह कदम क्षेत्र के दिग्गज नेता राजेन्द्र राठौड़ के इशारे पर उठाया गया था। हालांकि कांग्रेस आलाकमान ने भाजपा के बागी सांसद राहुल कस्वां को रातों-रात मैदान में उतार दिया पर कहीं ना कहीं अपनी पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं का विश्वास खो दिया था। उन कार्यकर्ताओं ने चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी उम्मीदवार कस्वां से दूरी बना ली थी। कांग्रेस कार्यकर्ता या तो कस्वां की किसी सभा में गए ही नहीं और गए तो बेमन से गए। जनता ने उनके भावों को समझ लिया। एक बार तो लगा कि ये कांग्रेसी नेता राहुल कस्वां की जमानत ही जब्त करवा देंगे।

इन नेताओं में सरदारशहर विधायक अनिल शर्मा, राजगढ़ की पूर्व विधायक कृष्णा पूनिया और चूरू लोकसभा सीट व विधानसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार रहे रफीक मंडेलिया का नाम खुलेआम लिया जा रहा है। इतना ही नहीं तारानगर विधायक नरेंद्र बुढ़ानिया ने भी अपनी पार्टी के उम्मीदवार राहुल कस्वां के पक्ष में मन से प्रचार नहीं किया। कांग्रेस की टिकट के अन्य दावेदार तनवीर खान, रेहाना रियाज आदि एवं कई अन्य नेता तो अंडरग्राउंड ही हो गए। इसलिए कांग्रेस का वोट बैंक माने जाने वाले मुस्लिम वर्ग के 50 प्रतिशत मतदाताओं ने तो मतदान ही नहीं किया। इसका एक कारण यह भी रहा कि राहुल कस्वां ने भाजपा या नरेन्द्र मोदी के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला सिर्फ राजेन्द्र राठौड़ पर ही निशाना साधा। मुस्लिम वर्ग के मतदाताओं को राहुल कस्वां थोपे हुए उम्मीदवार लगे और उन्होंने वोट नहीं करने का निर्णय ले लिया। इस कारण भी कांग्रेस को काफी नुकसान उठाना पड़ा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कॉमेडियन श्याम रंगीला मोदी के खिलाफ चुनाव मैदान में

- गंगानगर के श्याम रंगीला ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। ज्ञातव्य है कि, मोदी की मिमिक्री करके ही श्याम रंगीला फेमस हुए थे।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस ने जहाँ उत्तर प्रदेश के पार्टी अध्यक्ष अजय राय को चुनाव मैदान में उतारा है, वहीं कॉमेडियन श्याम रंगीला भी राजस्थान स्थित अपने गृह नगर श्रीगंगानगर से रवाना हो गए हैं। वह भी लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में वाराणसी से चुनाव लड़ने के लिए अपना नामांकन दाखिल करेंगे।

रंगीला ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि, वे वाराणसी के वोटर्स को एक विकल्प उपलब्ध करवा रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'दबदबा थाः दबदबा रहेगा'

जन भावना के दबाव में भाजपा ने कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह का टिकट काटा केसरगंज से

- पर साथ ही बृज भूषण सिंह के पुत्र करण भूषण सिंह को केसरगंज से टिकट दिया।
- गौंडा, बहराइच, बलरामपुर, सरस्वती जिलों के अलावा अयोध्या व बारांबकी में बृजभूषण सिंह का भारी प्रभाव है। जिसका पूरा प्रमाण बृज भूषण सिंह ने उस वक्त उस वक्त दिया था जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मैडल जीतने वाली महिला रैसलर्स ने यौन शोषण का आरोप लगाया तथा बृज भूषण सिंह को कुश्ती संघ के अध्यक्ष पद से हटाने की मांग की थी।
- बृज भूषण सिंह ने यौन शोषण के आरोपों के खिलाफ विशाल रैली आयोजित की अयोध्या के राम कथा पार्क में।
- बृज भूषण ने तीस आम सभाओं को संबोधित किया तथा कभी हैलीकॉप्टर से तो भी कार से अपने प्रभाव वाले क्षेत्र का सघन दौरा किया था। उस समय पूरा इलाका बृज भूषण सिंह के पोस्टरों से आच्छादित कर दिया गया था।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। सार्वजनिक दबाव के चलते एक असाधारण घटनाक्रम में भाजपा नेतृत्व ने केसरगंज से वर्तमान सांसद बृजभूषण शरण सिंह को तो पार्टी का टिकट नहीं दिया है लेकिन, उनके बेटे करण भूषण सिंह को इस सीट से नामांकित किया है।

सांसद प्रज्वल रेवन्ना से संबंधित प्रचण्ड विवाद के बीच, स्वाभाविक ही है कि भाजपा बृजभूषण के मामले में कोई खतरा नहीं मोल लेना चाहती लेकिन, इसके साथ ही वह केसरगंज सीट पर बृजभूषण के परिवार के ही सदस्य को टिकट देने के लिए विवश है।

बृजभूषण का केसरगंज और आसपास के इलाकों में काफी दबदबा है, और उन्होंने समय-समय अपना दबदबा दिखाया भी है।

शीर्ष मैडल जीतने वाली, देश की महिला पहलवानों के बृजभूषण पर लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोपों के कारण उपजे आक्रोश और विरोध के बीच, बृजभूषण शरण सिंह ने पिछले वर्ष जून महीने में अयोध्या के रामकथा पार्क में एक ''जन चेतना महारैली'' का आयोजन किया था। घोषणा के कुछ घंटों के अंदर ही गौंडा, बहराइच, बलरामपुर और श्रावस्ती जिलों के मुख्य मार्ग और अयोध्या एवं बाराबंकी के समीपवर्ती जिले, बृज भूषण के पोस्टर्स से भर गये थे। अगले दस दिनों तक, सिंह ने इन जिलों के चप्पे-चप्पे का दौरा किया। इन दौरों में कई बार हैलीकॉप्टर का इस्तेमाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'गैर जमानती वॉरंट साधारण बात नहीं है'

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, गैर जमानती वॉरंट जारी करना कोई नियमित प्रक्रिया नहीं है, यह तभी जारी किया जा सकता है, जब अपराध जघन्य हो और आरोपी द्वारा सबूतों से छेड़छाड़ करने की संभावना हो।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक नवीनतम निर्णय में कहा है कि, गैर जमानती वारंट रुटीन तरीके से जारी नहीं किया जा सकता। यह तभी जारी किया जा सकता है, जब आरोपी पर किसी जघन्य अपराध का केस दर्ज हो तथा यह आशंका हो कि, वह कानून

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या इस बार फिर हरीश मीणा मुकद्दर का सिकंदर होंगे?

क्या टोंक-सवाई माधोपुर में हरीश मीणा का मुकद्दर कांग्रेस का मुकद्दर भी बना देगा

- 2014 में दौसा से भाजपा सांसद के रूप में चुनाव जीते हरीश मीणा ने 2018 में भाजपा छोड़कर कांग्रेस का दामन थामा था और 2018 व 2023 में देवली-उनियारा से विधानसभा चुनाव लड़ा और जीता भी। अब वे टोंक से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।
- टोंक-सवाई माधोपुर गुर्जर और मीणा बहुल सीट है। मीणा मतदाता हरीश मीणा के पक्ष में पूरी तरह लामबंद दिखे, वहीं गुर्जर मतदाता दुविधा ग्रस्त और बंटा हुआ नज़र आया।
- गुर्जर मतदाताओं की दुविधा का कारण सचिन पायलट को बताया जा रहा है। आमतौर पर पायलट उन क्षेत्रों में प्रचार के लिए नहीं जाते जहां, भाजपा का गुर्जर प्रत्याशी मैदान में होता है। पर टोंक-सवाई माधोपुर सीट पर पायलट ने अपने करीबी हरीश मीणा के लिए जम कर प्रचार किया व सभाएं कीं।
- यही नहीं, भाजपा के गुर्जर नेता भी भाजपा प्रत्याशी सुखबीर सिंह जौनपुरिया के साथ पूरे मन से खड़े नज़र नहीं आए। संभावना है कि, 2014 और 2019 में टोंक-सवाई माधोपुर से चुनाव जीत चुके जौनपुरिया, जिनके खिलाफ एंटी इन्कम्बैंसी भी है, को इस बार कांटे की टक्कर मिल रही है।

-टोंक संवाददाता द्वारा-

टोंक, 2 मई। पूर्व डायरैक्ट जनरल ऑफ पुलिस (डी.जी.पी.) हरीश मीणा, राजनीति में बहुत ''लक्की'' रहे हैं। वे पार्टी बदल चुके हैं। पहले वे भाजपा के टिकट पर सांसद बने, फिर 2018 में कांग्रेस के विजयी उम्मीदवार के रूप में विधानसभा पहुंचे। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में हरीश मीणा ने अपने बड़े भाई और कांग्रेस प्रत्याशी नमोनारायण मीणा को चुनाव में हराया था, जो काफी पहले राजनीति में आ गये थे तथा अपने चुनाव क्षेत्र में काफी मिलनसार व लोकप्रिय रहे हैं तथा केन्द्रीय मंत्री भी रह चुके हैं। बाद में हरीश मीणा ने 2018 व 2023 में कांग्रेस के टिकट पर देवली उनियारा से विधानसभा चुनाव लड़ा, सभी चुनाव कठिन थे तथा कांटे की टक्कर रही थी, पर, हरीश हर चुनाव जीतते गये और उनके चुनाव क्षेत्र में यह आम धारणा बनी कि, हरीश का मुकद्दर बहुत मजबूत है और उनको साधारण तौर पर मीणा बहुल सीट पर हराना कठिन ही नहीं नामुमकिन है।

इस बार भी कुछ ऐसा ही होता लगता है, टोंक-सवाईमाधोपुर सीट पर, जहां लगातार दो बार सांसद रहे भाजपा के उम्मीदवार सुखबीर सिंह जौनपुरिया व कांग्रेस के हरीश मीणा के बीच टक्कर है और इस बार लोकसभा चुनाव का अजीबोगरीब पहलू यह है कि, नैशनल स्तर का चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़ा जा रहा है। क्या इस तथ्य का सीधा अर्थ यह नहीं है कि, मोदी लहर का वेग इस बार वह नहीं है जो, गत दो बार 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में देखा गया था तथा दोनों बार भाजपा 25-0 के स्कोर से जीती थी राजस्थान में। क्या इसमें भी हरीश मीणा का मुकद्दर काम आया?

साथ ही क्योंकि मीणा व गुर्जर मुख्य प्रतिद्वंदी हैं, यह भी अपेक्षित ही था कि, दोनों जातियां अपनी-अपनी जाति के उम्मीदवार के पक्ष में लामबंद होंगी, मीणा मतदाता तो जरूर जोर-शोर से हरीश मीणा को जिताने के लिए पूर्णतया अपनी जाति के साथ बंधे नज़र आये। पर गुर्जरों में कुछ दुविधा की स्थिति दिखी, मतदान के दिन। दुविधा का कारण थे, सचिन पायलट। आमतौर से सचिन, उस सीट पर अपने उम्मीदवार का प्रचार करने से बचते हैं, जहां प्रतिद्वंदी उम्मीदवार गुर्जर हो। मकसद शायद था कि, गुर्जर वोटों का विभाजन न हो। पर, टोंक-सवाईमाधोपुर में उनके करीबी उम्मीदवार हरीश मीणा के खिलाफ एक गुर्जर, प्रत्याशी, जौनपुरिया मैदान में था। पायलट ने पहली बार अपनी नीति को बदला और हरीश मीणा के पक्ष में जम कर प्रचार किया। आमसभाएं कीं। स्वाभाविक ही था गुर्जर वोट दुविधा की स्थिति में आ गया। साथ ही यह भी देखा गया कि, भाजपा के पुराने गुर्जर नेता जैसे विजय बैंसला, अलका गुर्जर, विक्रम सिंह गुर्जर, पूरे मन से जौनपुरिया के पक्ष में सक्रिय नहीं हुए। कुछ उदासीन दिखे। उनका शायद सोच था कि, अगर हरीश मीणा सांसद बन जाते हैं तो, उनकी विधायक की सीट खाली हो जायेगी और भाजपा के टोंक-सवाईमाधोपर क्षेत्र के गुर्जर नेता, विधायक का चुनाव लड़ सकेंगे और जीत गये तो मंत्री बनने की लाइन में खड़े

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'कांग्रेस तो पाकिस्तान की मुरीद है'

- प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के आणंद की एक सभा में यह टिप्पणी की और पाकिस्तान के एक नेता फवाद हुसैन द्वारा सोशल मीडिया पर राहुल की प्रशंसा में वीडियो पोस्ट करने को मुद्दा बनाया।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चुनावी लहर को भाजपा के पक्ष में मोड़ने के एक दृढ़ प्रयास के तहत कांग्रेस को पाकिस्तान का ''शिष्य'' बताते हुए कहा कि, पड़ोसी देश कांग्रेस के ''शहज़ादे'' को भारत का अगला प्रधानमंत्री बनाने का उत्सुक है।

मोदी की यह टिप्पणी, आज इन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जो मेरा धन चुराता है वह मेरी सबसे तुच्छ वस्तु ले जाता है। –शेक्सपियर

विरासत कर सरकारी लूट का दूसरा नाम है

भारत जब आजाद हुआ, उस समय समाजवाद की बयार बह रही थी। राजस्थान के एक कवि ने अपनी कविता में, यह कहकर धूम मचा दी थी, ''धन धरती सब बंटकर रह सी'' राजाओं, जागीरदारों आदि की जमीनें अधिग्रहण की गई और गरीबों में बांटी गई। विनोबा जी के नेतृत्व में भूटान का कार्यक्रम भी, सफलता के साथ देश में चला। इन सबका उद्देश्य एक ही था, देश की जो सम्पत्ति कुछ लोगों में संचित हो गई थी, उसका जनहित में वितरण हो। संविधान में प्रोपर्टी राईट को समाप्त कर दिया। संविधान के प्रियम्बल में स्पष्ट कर दिया कि देश एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोक तंत्रात्मक गणराज्य है।

इसी क्रम में कई देशों में Inheritance Tax अर्थात् वंशानुक्रम कर, विरासत कर अथवा उत्तराधिकार कर सम्पत्तियों पर लगाया गया। यह ऐसा टैक्स है जो मृत्यु के बाद मिली सम्पत्ति पर लगाया जाता है। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान में 7 प्रतिशत से 55 प्रतिशत तक विरासत टैक्स है। अमेरिका में यदि किसी के पास 100 करोड़ डॉलर की सम्पत्ति हो तो उसके मरने के बाद 45 प्रतिशत सम्पत्ति ही उसके वारिसान को मिलती है, शेष सम्पत्ति 55 प्रतिशत पर सरकार का मालिकाना अधिकार हो जाता है। कभी यह टैक्स भारत में भी सम्पत्ति शुल्क के नाम से था, जिसे राजीव गांधी ने समाप्त कर दिया। भारत में 1968 में Compulsory Deposit Scheme भी थी। भारत में एक समय कांग्रेस रूल में आयकर 90 प्रतिशत था। भारत में पूर्व में Wealth Tax व Gift Tax भी था। वे क्रमशः 2015 व 1968 में समाप्त कर दिये।

सत्येन्द्र गोवर्धन दास पित्रोदा जिन्हें लोग सैम पित्रोदा कहते हैं, राजीव गांधी के सलाहकार थे। सैम पित्रोदा ने ही राजीव गांधी को भारत के आधुनिकीकरण के लिये 'फाइव मिशन मोड' का विचार दिया था। सैम पित्रोदा ही ने टेलीकॉम रेवोल्यूशन की सफलता राजीव गांधी को दिलाई थी। उसी कारण से भारत का आईटी सेक्टर चमका था।

भारत में वर्तमान में विरासत कर अथवा Estate Duty Act जैसे कोई कानून नहीं हैं। भारत में सबको समान अधिकार दिये हैं। न कोई बड़ा है और न छोटा। भारत इस समय 2024 के संसद के चुनावों में फंसा हुआ है। ऐसे समय सैम पित्रोदा का कथन कि भारत में विरासत कर अमेरिका आदि यूरोपियन देशों के तरह लागू होना चाहिये। सैम का संबंध कांग्रेस से बहुत पुराना है, अतः इसे कांग्रेस के भविष्य की योजना के साथ जोड़ा गया है। इसका परिणाम था कि मोदी सरकार ने चुनावों में यह कहना शुरू कर दिया कि कांग्रेस शीघ्र पूर्व की तरह विरासत कर लाने जा रही है। कांग्रेस ने अपने बचाव में इतना ही कहा कि सैम पित्रोदा के विरासत कानून की बात, सैम का अपना विचार है। कांग्रेस का इससे कोई संबंध नहीं है। चूंकि भारत में विरासत कर नहीं है अतः वर्तमान में जो टैक्स के कानून हैं, उन्हीं से टैक्स लागू होता है।

अमेरिका के 6 राज्यों में Inheritance Tax लागू है। वहां टैक्स उस राज्य में लिया जाता है जहां मृतक रहता है न कि वहां जहां Beneficiary रहता है।

भारत में व्यक्ति की सम्पत्ति सक्सेशन एक्ट के अनुसार उसके कानूनी वारिसों में बंटती है अथवा मृतक द्वारा की गई वसीयत से उनका बंटवारा होता है। जायदाद का मालिक अपनी सम्पत्ति की वसीयत अपने जीवन काल में करता है, उसे कानून की जानकारी होनी चाहिये। अपनी स्वःअर्जित सम्पत्ति की वसीयत करना कठिन कार्य नहीं है पर इसे आसान भी नहीं समझना चाहिये। जहां तक संभव हो वसीयत करते समय कानून सहायता प्राप्त करनी चाहिये।

वसीयत लिखित में होनी चाहिये, कानून में इस पर कोई स्टाम्प डयूटी नहीं लगती। वसीयत करने वाला व्यक्ति उस समय वसीयत कर सकता है जब वह अपने होश हवास में हो, स्वस्थ हो, उसका विवेक जागृत हो। वसीयत के लिये स्टाम्प डयूटी आवश्यक नहीं है और न इसकी पंजीयन ही आवश्यक है, किन्तु उचित होगा, इसे स्टाम्प पर लिखा जावे और इसकी रजिस्ट्री कराई जावे। सबसे आवश्यक है वसीयत का अटेस्टेशन कराना। दो गवाह होने आवश्यक हैं। वसीयतकर्ता को अपने हस्ताक्षर गवाहों के समक्ष करने चाहिये और गवाहों के हस्ताक्षर भी वसीयतकर्ता के सामने हों।

भारत भगवान महावीर का देश है। जैन धर्म संसार का प्रथम धर्म है। यही कारण है जैन अपने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को आदिनाथ कहते हैं। जैनों की संस्कृति को अंहिसा, अपरिग्रह, अनेकान्त के दर्शन से समझा जाता है। अपरिग्रह का अर्थ है, उतना ही संग्रह करो जो आपकी आवश्यकता के लिये जरूरी हो, शेष समाज को अर्पित कर दो।

अमेरिका में विरासत टैक्स पुश्तैनी सम्पत्ति पर लगता है वह भी जब सम्पत्ति की कीमत एक सीमा से बढ़कर हो। 10 लाख डॉलर की वैल्यू तक सम्पत्ति पर कर से छूट है। दादा, परदादा या पिता से, सम्पत्ति मिली है तो उस पर टैक्स लगेगा। अमेरिका में जब पिता अपने पुत्र को सम्पत्ति देता है तो सरकार 55 प्रतिशत हिस्सा टैक्स के रूप में लेती है।

सैम पित्रोदा के कथन के बाद चुनाव प्रचार में मोदी ने कहा कि कांग्रेस यदि पावर में कभी आई तो वह टैक्स लगायेगी। पीएम मोदी ने चुनाव सभा में कहा कि कांग्रेस सर्वे करायेगी, मालूम करेगी व्यक्ति के पास कितनी प्रोपर्टी है। महिलाओं के पास जितने सोने के गहने व मंगल सूत्र हैं। मोदी का कथन था, आपके पास अपना कुछ भी नहीं रहेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय टैक्स कानून सम्पत्ति कर और विरासत कर के मध्य अन्तर करता है। विरासत कर उस व्यक्ति द्वारा भुगतान किया जाता है जो मृतक व्यक्ति का धन था और सम्पत्ति विरासत में प्राप्त होती है जबकि सम्पत्ति कर उस व्यक्ति की सम्पत्ति पर लगाया जाता है जो मर चुका है।

फाइनेन्स मंत्री निर्मला सीतारमन ने विरासत टैक्स लगाने के प्रस्ताव को गलत बतलाया है। उनका कथन है कि अब तक भाजपा ने जो विकास किया है वह भी समाप्त हो जावेगा। कांग्रेस राज में 10 साल पूर्व जो विकास किया था वह नगण्य सा था। कांग्रेस से 10 वर्ष पूर्व 5000 किमी. रेल्वे का विद्युतीकरण किया वही मोदी के 10 वर्षों में 44000 किमी. का विद्युतीकरण किया है।

टैक्स एक्सपर्ट का कहना है कि विरासत टैक्स एस्टेट डयूटी से जो आय होती थी लगभग उतना ही खर्चा टैक्स को लगाने व वसूली में हो जाता था। विरासत कर लगाना लूट जैसा कार्य है। जो जिन्दगी के समय भी लगता है और मरने पर भी।

विरासत टैक्स कई देशों में लगाया जाता है और सबसे अधिक Misunderstood है। भारत में हो रहे चुनावों के समय यह चुनाव भाषणों का विषय बना हुआ है। इसके माध्यम से भाजपा कांग्रेस की आलोचना करने का कोई भी मौका नहीं छोड रही है। दिनांक 24 अप्रैल, 2024 की चुनाव स्पीच में मोदी ने कहा कि यदि कांग्रेस जीती तो विरासत कर लगा कर लोगों का जीना दूभर कर देगी।

विरासत टैक्स फ्रांस में 60 प्रतिशत, जर्मनी में 50 प्रतिशत, यूके में 40 प्रतिशत, स्पेन में 33 प्रतिशत, हंगरी में 18 प्रतिशत, जापान में 55 प्रतिशत, साउथ कोरिया में 50 प्रतिशत, चिली में 25 प्रतिशत है। भारत में परिवार का गठन अन्य देशों से भिन्न है। हिन्दू संयुक्त परिवार का जो कन्सेन्ट भारत में है, वैसा अन्यत्र कहीं भी नहीं है। भारत भगवान महावीर का देश है। जैन धर्म संसार का प्रथम धर्म है। यही कारण है जैन अपने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को आदिनाथ कहते हैं। जैनों की संस्कृति को अंहिसा, अपरिग्रह, अनेकान्त के दर्शन से समझा जाता है। अपरिग्रह का अर्थ है, उतना ही संग्रह करो जो आपकी आवश्यकता के लिये जरूरी हो, शेष समाज को अर्पित कर दो। कस्तूरवा गांधी के यहां चोरी हुई, मालूम पडा 'बा' की चार साडियां चोरी हो गई थी। गांधीजी को जब पता चला कि 'बा' के पास चार साडियां थीं तो वे बा से बहुत नाराज हुये। इतनी सदियों के संचय से आपने अपनी बहिनों को वंचित कर दिया है, अच्छा हुआ चोर ले गये ये साडियां किसी के काम तो आवेंगी। घटना के बाद बा ने बापू से कहा ये साडियां उसे अपनी बहु-बेटियों को देनी थी। अपरिग्रह का इससे सुन्दर उदाहरण कहीं नहीं मिल सकता। कर का आरोपण व्यक्ति को अपरिग्रह की सीमा में रखने का है।

संविधान के अनुच्छेद 51क में नागरिकों के कर्त्तव्य दिये हैं। यह प्रावधान संविधान 86वां संशोधन से लाया गया था। जिस कमेटी ने संशोधनों का सुझाव दिया उनके सरदार स्वर्णसिंह जी चेयरमैन थे। एक माननीय सदस्य ने सुझाव दिया था कि टैक्स का कानून समाप्त किया जावे। इसके स्थान पर यह प्रावधान हो कि अपनी आवश्यकता की पूर्ति के बाद जो बचे उसे सरकार को अर्पित कर दो। सच्चा समाजवाद यही है।

पीएम मोदी व अन्य नेताओं के भाषणों से यह स्पष्ट है कि देश में निकट भविष्य में विरासत कर (उत्तराधिकार कर) लगाने का प्रश्न ही नहीं उठता। किसी भी लोकतंत्र से उम्मीद की जा सकती है कि वह कल्याणकारी होगा। भारत में 85 प्रतिशत तक विरासत कर लगता था, अतः राजीव गांधी सरकार ने इसे समाप्त कर दिया।

संविधान के नीति निदेशक तत्वों के भाग 4क अनुच्छेद 39(ख) में आदेशात्मक रूप से यह स्पष्ट किया है कि राजय अपनी नीति का विशिष्टतया इस प्रकार संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बांटा हो जिससे सामूहिक हित का सर्वोच्च रूप से साधन हो। दिनांक 30.04.2024 को सर्वोच्च न्यायालय की 9 जजों की पीठ के समक्ष यह बहस की गई कि प्राइवेट इन्वेस्टमेन्ट्स को अधिक महत्व देना चाहिये।

भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य है, जय हो!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

माननीय कुलाधिपति, कुलपति-एक संदेश

(एक कुलपति की अनकही कहानी)

प्रो. अशोक कुमार

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर में कुलपति के पद पर मेरी नियुक्ति के पहले मेरा एक इंटरव्यू इंटरेक्शन माननीय तत्कालीन राज्यपाल कुलाधिपति महोदय से हुआ था कुलाधिपति महोदय ने मुझसे कहा था यदि आपकी नियुक्ति कानपुर विश्वविद्यालय में कुलपति के पद पर हो जाए तब आप मुझसे तभी धन्यवाद के लिए आइएगा जब आप अपने विश्वविद्यालय की समस्यों को समझेंगे और उसके समाधान के लिए अपनी योजना बनाएँगे इसी के साथ आप अपने 3 वर्ष के कार्यकाल में क्या-क्या कार्य विश्वविद्यालय में करेंगे उसका एक श्वेत पत्र लाइएगा। इसके पहले मुझे धन्यवाद देने नहीं आयेगे।

वर्तमान समय में मैंने पिछले 10 वर्षों से यह अनुभव किया है कि जब भी कभी विभिन्न विश्वविद्यालय में कुलपति की नियुक्ति होती है तो ऐसा देखा गया है कि माननीय कुलपति को पत्र मिलते ही सबसे पहले वह कुलाधिपति महोदय को धन्यवाद देने के लिए जाते हैं। यह परंपरा अपने आप में अच्छी है लेकिन इसमें मेरा दृष्टिकोण अपने अनुभव के अनुसार से भिन्न है।

जब मैंने छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर में कुलपति पद के कार्यभार संभाला तब कई व्यक्तियों ने यह सुझाव दिया कि मैं धन्यवाद के रुप में माननीय कुलाधिपति के पास अवश्य जाएं। लेकिन मैंने उनसे यह नहीं बताया कि मैं उनके पास तभी मिलने जाऊंगा जब मैं छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के बारे में जानकारी प्राप्त कर लूँगा। मैंने विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा अन्य समस्याओं के ऊपर ध्यान आकर्षित किया। कुलपति का पदभार संभालने के बाद विश्वविद्यालय के प्रांगण का अवलोकन किया, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का निरीक्षण किया, विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक और अशैक्षणिक विभागों का भी निरीक्षण किया।

कुछ समय के बाद मैंने विश्वविद्यालय के सभी विभागों के विभागाअध्यक्ष की एक मीटिंग बुलाई और विश्वविद्यालय के बारे में चर्चा की। एक दिन वि.वि. के अधिकारियों के साथ मीटिंग की। एक अन्य दिन विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के साथ मीटिंग करी। अगले कुछ दिनों के अंदर मैंने अकादेमिक, परीक्षा से संबंधित विषयों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। सब गतिविधियां चल रही थी लेकिन विश्वविद्यालय के सभी वर्ग के लोग इस बात के लिए बहुत विचार कर रहे थे या उनके समझ में नहीं आ रहा था कि माननीय कुलपति जी को पदभार ग्रहण करते हुए 10 दिन हो गए लेकिन वह माननीय कुलाधिपति से मिलने लखनऊ नहीं गए। जबकि आप जानते हैं कि लखनऊ से कानपुर की दूरी केवल 80 किलोमीटर है। कई लोग मेरे पास कहने भी आए कि मुझे कुलाधिपति से मिलना चाहिए और उनको धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए। मैंने उनको बताया कि जैसे ही मुझे समय मिलेगा मैं उनसे जरूर मिलना चाहूंगा। विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी ने तो यहां तक कहना शुरू कर दिया कि कुलपति लगता है बहुत ही घमंडी आदमी है और इनकी नियुक्ति विश्वविद्यालय में बहुत हाई कमान के माध्यम से हुई है इसलिए वह कुलाधिपति को कुछ भी नहीं समझते। कई लोगों ने तो यहां तक कहना शुरू कर दिया कि ऐसा ही इनका व्यवहार रहा तो कुलपति विश्वविद्यालय में ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाएंगे। मैं अपना कार्य करता रहा। यह एक ऐसी बात थी जो मैं किसी से व्यक्तिगत रूप से कह नहीं सकता था। मैंने पूरी मेहनत से विश्वविद्यालय के सभी समस्याओं को समझा, श्वेत पत्र बनाए। श्वेत पत्र बनाकर समस्याओं के बारे में लिखा। विश्वविद्यालय में क्या-क्या समस्या है जैसा कि आप सब जानते हैं कि विश्वविद्यालय में प्रशासनिक और छात्रों की प्रवेश और परीक्षा परिणाम फल आदि समस्याएं होती हैं। शिक्षकों की विभिन्न समस्याएं होती हैं: उनके शैक्षणिक वातावरण की, उनके प्रमोशन की, या नियुक्तियां की। कर्मचारियों की अपनी समस्याएं होती हैं। इन सब समस्याओं को मैंने समझा और फिर उसको लिखा और फिर यह कोशिश की इन समस्याओं को किस प्रकार से समाधान किया जा सकता है। विश्वविद्यालय में कुछ नए विषय भी खोलने के लिए मैंने लिखा। इन सबको तैयार करने में लगभग 1 माह से ज्यादा लग गया और उसके बाद में कुलाधिपति से मिलने गया। माननीय कुलाधिपति को मैंने पत्र दिया कुलाधिपति ने बहुत ध्यान से उस पत्र को पढ़ा। पत्र पढ़कर वो बहुत प्रसन्न हुए और मुझसे कहा कि उन्होने कुलपति रूप में सही व्यक्ति को नियुक्त किया है। माननीय कुलाधिपति ने बहुत से सुझाव भी दिये और मुझमे यह विश्वास प्रकट किया कि मैं पूरी मेहनत और ईमानदारी से नियमानुसार विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए कार्य करूंगा। एक बहुत महत्वपूर्ण विषय के बारे मे कहना चाहता हूं कि जो भी विश्वविद्यालय का कुलपति बने उसको विश्वविद्यालय की समस्याओं के बारे में अवगत होना चाहिए और इसी के साथ-साथ उसकी यह दूरदर्शिता होनी चाहिए कि उन समस्याओं को किस प्रकार से समाधान किया जा सकता है। मैं समझता हूं कि विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करते समय किसी भी कुलपति के लिए यह प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए। अगर वह समय पर इन विभिन्न समस्याओं को समझ ले तब मेरे अनुभव के अनुसार उसको आने वाले भविष्य के 3 सालों में कष्ट नहीं होगा और सभी की समस्याओं को समाधान करने में आसानी होगी। इन सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी, कर्मचारी, शिक्षक और विद्यार्थी के सहयोग की आवश्यकता होती है। यहां यह कहने की भी आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां होती हैं और इन गतिविधियों के कारण आपको जिला प्रशासन से भी एक अच्छा संपर्क संबंध बनाए रखना चाहिए ताकि अनुकूल परिस्थितियों में जिला प्रशासन आपकी मदद कर सके। आमतौर पर यह देखा गया है कि विश्वविद्यालय के कुलपति अपने दफ्तर से बाहर नहीं निकलते या निकल पाते या निकलना नहीं चाहते लेकिन जहां तक मैं समझता हूं मेरे अनुभव के अनुसार से विश्वविद्यालय के कुलपति को दफ्तर में अपने काम जरुर करना चाहिए लेकिन साथ ही साथ समय-समय पर विभिन्न विभागों में, प्रशासनिक कार्यालयों में, विद्यार्थियों से, अधिकारियों से और कर्मचारियों से मिलते रहना चाहिए। यदि आप निरंतर इस प्रकार के प्रयास करेंगे तो कभी भी कोई भी गंभीर समस्या आपके सामने नहीं आएगी। जब आप निरंतर सबसे मिलते हैं तो समय-समय पर आपको विश्वविद्यालय की समस्याओं के बारे में जानकारी होती है और समय अनुसार उनका समाधान भी होता है। जब कभी हम इस प्रक्रिया को नहीं अपनाते तो ऐसा देखा गया है कि समस्याएं इकट्ठा होती रहती हैं, समाधान उनका नहीं होता। एक समय ऐसा आता है जबकि सारी समस्याएं एक साथ इकट्ठा हो जाती हैं और वह एक बहुत ही भयंकर रूप ले लेती हैं और एक बहुत ही कठिन स्थिति हो जाती है।

मैं अपने अनुभव के आधार से यह एक संदेश देना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में विश्वविद्यालय के सभी वर्गों से मधुर संबंध रखना चाहिए, वार्तालाप करना चाहिए, उनसे संपर्क बनाए रखना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण-विश्व विद्यालय विद्यार्थियों के लिए होता है, विश्वविद्यालय का प्रमुख अंग है। हमको यह चाहिए कि हम विद्यार्थियों की समस्याओं के बारे में जाने और हमे उनके समाधान का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। मुझे आशा और विश्वास है कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को अच्छे और उज्जवल भविष्य के लिए दिशा प्रदान करेगा।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

सिडियास गांव में तीन दिन से एक दर्जन घरों में लग रही रहस्यमयी आग

परबतसर, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के बस्सी ग्राम पंचायत के सिडियास गांव के गुर्जरों का बास में रहस्यमयी ढंग से आग लगने की वारदातें हो रही है। चार दिन से दोपहर तीन बजे के बाद से ही जगह-जगह आग लगने की घटनाएं हो रही हैं। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। मामले में अभी तक कोई जनहानि नहीं हुई है, लेकिन कच्चे मकान समेत अन्य सामग्री का काफी नुकसान हुआ है।

बस्सी सरपंच प्रतिनिधि जगदीश मेघवाल ने बताया कि सोमवार को चार जगहों पर आग लगी। इसके बाद मंगलवार को भी अलग-अलग चार जगहों पर आग लगने की घटना हुई। एक ओर ग्रामीण इन अजीब घटनाओं का कारण जानने में जुटे हैं तो वहीं दूसरी ओर रोजाना अलग-अलग जगह पर आग लगने से भय का माहौल भी बना हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि आजकल हर घर में गैस सिलेंडर है और इस इलाके में कच्चे छप्पर भी हैं, ऐसे में आगजनी की घटनाओं से बड़े हादसे की आशंका बनी रहती है। इससे फिलहाल भय का माहौल बन रहा है।

परबतसर के बस्सी ग्राम पंचायत के सिडियास गांव के गुर्जरों का बास में रहस्यमयी ढंग से आग लगने की वारदातें हो रही है।

- **अभी तक कोई जनहानि नहीं हुई है, कच्चे मकान व अन्य सामग्री का काफी नुकसान हुआ**
- **गुर्जरों के बास में रोज हो रहे हादसे, जांच के लिए टीम पहुंची, कोई सुराग नहीं लगा**

पीलवा थानाधिकारी विनोद ने बताया कि लगातार हो घटनाओं पर पुलिस ने नजर रखी हुई है। लगातार आगजनी के कारणों का पता चल नहीं पाया है। तहसीलदार ने पुलिस कार्मिक साथ मौके पर जाकर मुआयना किया है। पटवारी रिपोर्ट बन नुकसान का आंकलन भी किया जा रहा है, लेकिन अब आग लगने कारणों का पता लगना बहुत मुश्किल है। क्योंकि लोगों में घटनाओं लेकर भय फैलने की संभान बढ़ती जा रही है। ग्रामीण भागा गुर्जर, भारमल गुर्जर, गोविंद और प्रभुराम गुर्जर ने बताया बुधवार को भी दोपहर में करीब बजे एक घर में आग लग गई।

''नंद घर'' मुहिम से जुड़े अभिनेता मनोज बाजपेयी

जयपुर। 14 लाख आंगनबाड़ियों में सुधार करने के लक्ष्य के तहत नंद घर ने अभिनेता मनोज बाजपेयी के साथ पूरे देश में एक विशेष कैंपेन की शुरुआत की है, जिसका शीर्षक है ''अगर बचपन से पूछा खाना खाया, तो देश का कल बनाया।'' नंद घर द्वारा चलाए जा रहे इस कैंपेन का उद्देश्य भावी पीढ़ी को पोषित करना है, जिसमें समग्र स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्तापूर्ण पोषण और बच्चों को सर्वोत्तम प्री-स्कूल शिक्षा प्रदान करना शामिल है।

इस मुहिम में शामिल होने पर मनोज बाजपेयी का स्वागत करते हुए अनिल अग्रवाल, चेयरमैन, वेदांता, ने कहा कि प्रोजेक्ट नंद घर पूरे देश में बच्चों और महिलाओं को स्वस्थ और सुपोषित रहने में मदद करने पर केंद्रित है। मनोज बाजपेयीजी का इस महत्वपूर्ण मुहिम से जुड़ना हमारे लिए गर्व का विषय है। उनके निजी जीवन के अनुभव भावी पीढ़ियों के जीवन को बेहतर और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जो कि नंद घर के उद्देश्य के साथ बखूबी मेल खाते हैं।

मुहिम के लॉन्च के दौरान, मनोज बाजपेयी ने बतौर युवा थिएटर अभिनेता अपनी कहानी साझा की। नंद घर के साथ जुड़ने को लेकर उत्साहित मनोज बाजपेयी ने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर भूख की पीड़ा से गुज़रने के कारण मेरा मानना है कि जो व्यक्ति भूख का सामना करता है, उसका शरीर, मस्तिष्क और भावनाएँ काफी प्रभावित होती हैं। इसके समाधान के रूप में प्रोजेक्ट नंद घर जैसी पहलें बेहद कारगर हैं।

14 लाख आंगनबाड़ियों में सुधार करने के लक्ष्य के तहत नंद घर ने अभिनेता मनोज बाजपेयी के साथ विशेष कैंपेन की शुरुआत की।

- **सोशल इम्पैक्ट प्रोजेक्ट नंद घर का उद्देश्य बच्चों और महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाना है**

मैककैन द्वारा परिकल्पित इस कैंपेन पर अपने विचार रखते हुए प्रसून जोशी, सीईओ और सीसीओ, मैककैन वर्ल्डग्रुप इंडिया और चेयरमैन, एशिया पैसिफिक ने कहा कि यदि हम चाहते हैं कि बच्चे अपनी वास्तविक क्षमता से रूबरू हों, तो उनके बेहतर पोषण पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है। इसे उजागर करने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि आप भारत के कुछ सबसे लोकप्रिय व्यक्तियों की कहानियां साझा करें, जिन्होंने अपने जीवन में इस मुश्किल का खुद सामना किया है।

नंद घर अनिल अग्रवाल फाउंडेशन (आफ़) का फ्लैगशिप प्रोजेक्ट है। चेयरमैन अनिल अग्रवाल के सपने को प्रखर रखते हुए यह प्रोजेक्ट यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है कि कोई भी बच्चा भूखा न सोए। नंद घर के लिए अभूतपूर्व उपलब्धि के रूप में, हम भारत के 14 राज्यों में स्थित सभी नंद घरों में न सिर्फ प्री-स्कूल्स की उपस्थिति का विस्तार करने, बल्कि कुपोषण के स्तर को कम करने में भी सफल रहे हैं। विगत वर्ष, आफ ने मल्टी-मिलेट न्यूट्री बार लॉन्च किया था।

राशिफल शुक्रवार 3 मई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 12:06 तक, ब्रह्म योग दिन 2:18 तक, वणिज करण दिन 12:39 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 12:06 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा दिन 12:39 से रात्रि 11:25 तक रहेगी। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 7:29 तक, लाभ-अमृत 7:29 से 10:45 तक, शुभ 12:24 से 2:02 तक, चर 5:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:01

मेष

व्यावसायिक और आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में गति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से मतभेद समाप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित धन प्राप्त होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल वर्मा का सेवानिवृति पर सम्मान

पाली में मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल दीपक वर्मा की सेवानिवृति पर रेडक्रॉस सोसायटी ने सम्मान समारोह आयोजित कर स्वागत किया। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। पाली की मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल दीपक वर्मा 30 अप्रेल को पद से सेवा निवृत हो गए। उनकी सेवाओं के लिए रेडक्रॉस सोसायटी पाली ने सम्मान समारोह आयोजित कर स्वागत किया।

रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव जिनेन्द्र जैन ने कहा कि पाली रेडक्रॉस ने बांगड़ अस्पताल में जो नवीनीकरण व निर्माण कराए उसमें दीपक वर्मा का पूरा सहयोग व मार्ग दर्शन रहा। हमने करोड़ो के काम कराए जिसमे सरकारी स्वीकृति व सहयोग जरूरी होता है। हमारी बैठक होती रहती जिसमे प्रिंसिपल साहब पूरी रुचि लेते।

पूर्व पीएमओ डॉ जे पी उदावत ने कहा कि जब कभी दानदाता पैसा लगाता है तो उसका उपयोग देखता है ।डॉ वर्मा ने खुद मॉनिटरिंग कर काम का जायजा लिया और अस्पताल विकास में जैसा काम किया प्रदेश की किसी मेडिकल कॉलेज में नहीं हुआ।

अपने स्वागत का आभार प्रकट करते दीपक वर्मा ने कहा कि जब वे प्रिंसिपल बन कर आये तब कोरोना की दूसरी लहर थी तो वे डर रहे थे कि पाली जैसी छोटी जगह कैसे काम होगा पर जब रेडक्रॉस के लोगों से मिला तो आसानी से लहर पार हो गई। कोरोना में प्रदेश में सबसे बेहतर काम पाली का रहा जिसमे रेडक्रॉस के लोग प्रमुख थे। उन्होने कहा कि वे जोधपुर व अन्य जगह पर अधीक्षक रहे पर 2 लाख को डोनर ढूंढने में परेशानी आती थी पर पाली में समस्या यह रही कि काम एक पर दानदाता दस। हमे कहने कि देर होती और जिनेन्द्रजी व उदावत साहब कहते आप कागजी कार्यवाही करवाइए हो जाएगा। और दूसरे दिन और नए प्राजेक्ट लाते। मैं पूरे मेडिकल कॉलेजों के ठाूफ में फक्र से बताता,फोटो डालता तो सभी आश्चर्य करते की रेडक्रॉस इतने बड़े काम कर रही हैं।

रेडक्रॉस द्वारा कैंसर अस्पताल विंग बनाने का प्रस्ताव दिया जो सरकार को भेज दिया है। बांगड़ अस्पताल के अधीक्षक पी सी व्यास ने रेडक्रॉस के कामों की सराहना की।

रेडक्रॉस सभापति जगदीश गोयल, सचिव जिनेन्द्र जैन,पूर्व सभापति डॉ महावीर सुराणा, जे पी उदावत ने साफा पहनाकर माल्यार्पण किया।

कार्यक्रम में सोहनलाल कवाड़, मेघराज बम्ब, अब्दुल शकूर सीलावट, अनिल गुप्ता, अमरचंद शर्मा, गौतम खिवसरा, ओम भंडारी,ओम चतुर्वेदी, लालचंद मेहता, धर्मेंद्र कोठारी, ललित शर्मा, विमल मूंदड़ा, बाबूलाल नागला ,ओम प्रकाश दायमा व अन्य सदस्यों ने भी माल्यार्पण किया।

जोधपुर-ब्यास सत्संग स्पेशल रेल सेवा 16 से

जोधपुर, (कासं)। रेलवे द्वारा ब्यास में आयोजित सत्संग को देखते हुए यात्रियों की सुविधा हेतु जोधपुर-ब्यास-जोधपुर (एक ट्रिप) सत्संग स्पेशल रेलसेवा का संचालन किया जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार गाड़ी संख्या 04833 जोधपुर-ब्यास सत्संग स्पेशल जोधपुर से 16 मई को 15.30 बजे रवाना होकर अगले दिन 10.10 बजे ब्यास पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04834 ब्यास- जोधपुर सत्संग स्पेशल ब्यास से 19 मई को 14.15 बजे रवाना होकर अगले दिन 09.15 बजे जोधपुर पहुंचेगी। मार्ग में पीपाड़ रोड, गोटन, मेड़ता रोड, मारवाड़ मुंडवा, नागौर, बीकानेर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़, बठिण्डा, धुरी, लुधियाना व जालन्धर सिटी स्टेशनों पर ठहराव करेगी। दो थर्ड एसी, 12 द्वितीय शयनयान, आठ साधारण श्रेणी एवं दो गार्ड डिब्बों सहित कुल 24 डिब्बें होंगे।

हर घर परिंडा अभियान शुरू

पाली में मारवाड़ सेवा समिति के बैनर तले हाउसिंग बोर्ड में परिंडा अभियान शुरू हुआ। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। मारवाड़ सेवा समिति के बैनर तले हाउसिंग बोर्ड में हर घर परिंडा अभियान का गुरुवार को शुभारंभ किया गया।

समिति के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने बताया कि हाउसिंग बोर्ड में घरों के बाहर,पेड़ों पर, बगीचों में एवं विभिन्न स्थानों पर पक्षियों के लिए परिंडे मंगा कर लगाए जाएंगे। प्रथम दिन सुभाष पार्क में आए पुरुषों एवं महिलाओं को समिति की ओर से परिंडे उपलब्ध करवा कर गर्मी में पक्षियों को राहत देने के लिए घरों के बाहर लगाने के लिए प्रेरित किया। सचिव घनश्याम तिवारी, सदस्य किशन दवे,राजाराम, महेंद्र शर्मा, जयंती भाई, कैलाश शर्मा, संपत वर्मा, भगवान ओझा, बी एल जोशी, पुनाराम, दौलत राम, किशोर सिंह, विजय शर्मा एवं राधेश्याम त्रिवेदी, अर्जुन सिंह राजपुरोहित, भगवान गोयल सहित कई सदस्यों सहित कई जने मौजूद रहे।

वर्षों से बंद रास्ता खुलवाया

आकवा में बंद रास्ते को तहसीलदार हीरसिंह चारण ने खुलवाने की कार्रवाई की। फोटो-राष्ट्रदूत

सायला, (निसं)। उपखण्ड क्षेत्र के आकवा गांव में वर्षो से बन्द निर्णित रास्ते को सायला तहसीलदार हीरसिंह चारण के नेतृत्व में प्रशासन द्वारा गुरूवार को खुलवाया गया।

जानकारी के अनुसार उपखण्ड अधिकारी सायला के आदेश की पालना में ग्राम आकवा के खसरा नम्बर 755/7 रकबा 0.0738 हेक्टेयर किस्म गैर मुमकिन रास्ता जो न्यायालय के निर्णित प्रकरण संख्या 41/2017 में पारित निर्णय दिनांक 19 अक्टूबर 2020 की अनुपालना में राजस्व रेकर्ड में दर्ज है, लेकिन अप्रार्थी हरसनराम वगैरह द्वारा उक्त रास्ते को आज तक खोलने नहीं दिया गया। जिस पर उक्त रिकॉर्डेड रास्ते को खुलवाने के लिए तहसीलदार सायला के आदेशानुसार जीवाणा उपतहसीलदार हुकुमसिंह सिसोदिया मय गठित टीम एवं पुलिस इमदाद के साथ मौके पर पहुंचे। हरसनराम द्वारा रास्ता नही खोलने पर गठित टीम व पुलिस इमदाद की उपस्थिति में जेसीबी मशीन की मदद से रास्ते की भूमि पर पैदा किए गए अवरोध को हटाकर आवागमन को सुचारू करवाया गया।

साथ ही उक्त खुलवाए गए रास्ते पर अप्रार्थीगणों को किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नही करने एवं रास्ते के उपयोग में अवरोध पैदा नही करने के लिए निर्देशित किया।

इस दौरान आरआई भवाराम, पटवारी जसाराम, रविन्द्रसिंह, आसकरणसिंह, एएसआई जगदीश, कांस्टेबल ओमप्रकाश आदि मौजूद रहे।

कलराज मिश्र 4 को जोधपुर आएंगे

जोधपुर, (कासं)। राज्यपाल कलराज मिश्र 4 मई को जोधपुर आएंगे तथा फुटवेयर डिजाइन एंड डेवेलपमेन्ट इंस्टीट्यूट के तृतीय दीक्षान्त समारोह में शिरकत करेंगे।

निर्धारित कार्यक्रम अनुसार राज्यपाल श्री कलराज मिश्र शनिवार, 4मई को प्रात: 10.55 बजे जोधपुर आएंगे तथा 11.40 बजे सर्किट हाउस से फुटवेयर डिजाइन एंड डेवेलपमेन्ट इंस्टीट्यूट, मंडोर के तीसरे दीक्षान्त समारोह में भाग लेने के लिये जाएंगे। वे दोपहर 1.45 बजे सर्किट हाउस पहुंचेंगे तथा दोपहर 4.15 तक इनका कार्यक्रम आरक्षित रहेगा। वे 4.30 बजे जयपुर के लिये प्रस्थान करेंगे।

घर में फंदा लगाकर दी जान

जोधपुर, (कासं)। भीतरी क्षेत्र लखारा बाजार हरिजन बस्ती में रहने वाले एक युवक ने अपने घर में चुन्नी से फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है। भाई की रिपोर्ट पर सदर कोतवाली पुलिस ने मर्ग दर्ज किया। पुलिस ने बताया कि लखारा बाजार हरिजन बस्ती के 42 साल के सूरज पुत्र प्रदीप कुमार वाल्मिकी ने घर में चुन्नी का फंदा बना पंखे के हुक में झूलकर जान दे दी।

शत प्रतिशत टीकाकरण करने के निर्देश दिए

बालोतरा, (नि.सं.)। जिला कलक्टर सुशील कुमार यादव के निर्देशानुसार अतिरिक्त जिला कलक्टर नानूराम सैनी ने गुरूवार को पचपदरा में राजकीय कार्यालयों का निरीक्षण किया।

अतिरिक्त जिला कलक्टर नानूराम सैनी ने गुरूवार को पचपदरा में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, सहायक अभियन्ता जन स्वास्थ्य एवं अभियान्त्रिकी विभाग, सहायक अभियन्ता जोधपुर विद्युत वितरण निगम लि. कार्यालय एवं राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का औचक निरीक्षण किया।

अतिरिक्त जिला कलक्टर नानूराम सैनी ने गुरूवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पचपदरा का आकस्मिक निरीक्षण किया। उन्होंने सभी कक्षों में जाकर व्यवस्थाएं देखी। पंजीकरण, टीकाकरण, दवा वितरण, स्टोर, लैब, लेबर रूम, शौचालय सभी जगह जाकर निरीक्षण किया और सफाई का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

उन्होंने प्रभारी को निर्देश दिए कि वह नियमित रूप से ध्यान रखकर व्यवस्थाएं बेहतर बनाएं। स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए। चादर साफ हों, फटी हुई ना हों। स्टोर रूम में दवाओं के पुराने खाली डब्बे अव्यवस्थित तरीके से मिले, जिन्हें निस्तारित करने एवं व्यवस्थित तरीके से रखने के निर्देश स्टोर प्रभारी को दिए।

उन्होंने सीएचसी में दवाओं की उपलब्धता, एक्सपायरी और नजदीकी एक्सपायरी दवाईयों को अलग से रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण दौरान दवा और जांच की स्थिति की जानकारी ली, साथ ही विभागीय कार्यक्रमो और गतिविधियों, महिला एवं शिशु स्वास्थ्य से संबंधित आरसीएच रजिस्टर, ओपीडी रजिस्टर, ममता कार्ड और संस्थागत प्रसव का रिकोर्ड जांच कर उन्होने नवजात शिशु एवं गर्भवती माताओं का शत प्रतिशत टीकाकरण करने के निर्देश दिये।

उन्होने सहायक अभियन्ता जन स्वास्थ्य एवं अभियान्त्रिकी विभाग कार्यालय का निरीक्षण कर जल संबंधी समस्याओं का जल्द निराकरण कर नियमित जलापुर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही कार्यालय में फाइलों को व्यवस्थित रखने के निर्देश दिये।उन्होंने छोटी-मोटी समस्या के चलते अटके हुए कार्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें त्वरित रूप से पूर्ण कराकर जलापूर्ति सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने प्राप्त जल शिकायतों की प्रकृति, उनके निस्तारण की प्रक्रिया और समय सीमा के संबंध में जानकारी लेते हुए जन समस्याओं के त्वरित निस्तारण की हिदायत दी।

तत्पश्चात अतिरिक्त जिला कलक्टर ने सहायक अभियन्ता जोधपुर विद्युत वितरण निगम लि. कार्यालय का निरीक्षण कर विद्युत उपभोक्ता की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए गुणवत्तापुर्ण निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होने नियत समयावधि में बिलों को उपभोक्ता तक पहुंचाने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होने डिमाण्ड राशि जमा करवाने के बाद विद्युत कनेक्शन नही करने पर चिन्ता जाहिर करते हुए शीघ्र ही विद्युत कनेक्शन देने के निर्देश दिए।

उन्होने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का औचक निरीक्षण कर 15 मई तक शिक्षा विभाग के आदेशानुसार शिक्षण कार्य करवाने के निर्देश दिये।

उन्होंने नामांकन, पुस्तकों और भौतिक संसाधनों की चर्चा करते हुए समस्त कक्षा कक्षों के साथ विद्यालय अभिलेखों की जांच की। उन्होंने बालिकाओं को शिक्षा के साथ समग्र विकास के अवसर उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए।

उत्तर पश्चिम रेलवे ई-ऑक्शन आमंत्रित करने की सूचना

No: Comml/E-auction/2024/90 Date: 01.05.2024

उक्त के सन्दर्भ में विभिन्न स्टेशनों पर प्लास्टिक बोटल क्रशिंग मशीन (PBCM)/ पार्किंग स्टैंड/विज्ञापन-रेल डिस्प्ले नेटवर्क-डिजिटल, नॉन-डिजिटल। एम.पी.एस (MPS)। ए.टी.एम (ATM)/रेल कोच रेस्टोरेंट (RCR)/कैटरिंग/वॉटर वैडिंग मशीन (WVM) एवं विभिन्न गाडियों के एसएलआर और वीपीयू लीजिंग। विज्ञापन विनाइल रैपिंग के ठेके हेतु ई-ऑक्शन आमंत्रित की गई है। कैटलॉग IREPS वेबसाइट पर प्रकाशित किए जा चुके हैं।

1	कार्य का नाम	(1)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर प्लास्टिक बोटल क्रशिंग मशीन (PBCM) के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(2)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनो पर पार्किंग स्टेण्ड के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(3)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर वाणिज्यिक विज्ञापन के ठेके हेतु रेल डिस्पले नेटवर्क एवं विभिन्न गाड़ियों पर विनाइल रैपिंग का ई-ऑक्शन
		(4)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर एम.पी.एस (MPS) के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(5)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर ए.टी.एम (ATM) के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(6)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर रेल कोच रेस्टोरेंट (RCR) के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(7)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर कैटरिंग के ठेके हेतु इ-ऑक्शन
		(8)	जोधपुर मंडल से संचालित गाड़ियों के एसएलआर और वीपीयू लीजिंग में स्थान लीज पर माल पार्सल की लोडिंग हेतु इ-ऑक्शन
		(9)	जोधपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनो पर वॉटर वैडिंग मशीन (WVM) के ठेके हेतु इ-ऑक्शन;
2	कार्य की अवधि	(1)	प्लास्टिक बोटल क्रशिंग मशीन (PBCM) 5 वर्ष
		(2)	पार्किंग-3 वर्ष 12 महीने
		(3)	विज्ञापन-3 वर्ष
		(4)	एम.पी.एस (MPS)-5 वर्ष
		(5)	ए.टी.एम (ATM)-5 वर्ष
		(6)	रेल कोच रेस्टोरेंट (RCR)-5 वर्ष
		(7)	कैटरिंग-5 वर्ष
		(8)	एसएलआर और वीपीयू लीजिंग-2 वर्ष
		(9)	वॉटर वेडिंग मशीन (WVM)-5 वर्ष;
3	लॉट के ई-आक्शन प्रारंभ की तिथि व समय	(1)	PLASTIC BOTTLE CRUSHING MACHINE:PBCM-JU-24-01 दिनांक 13.05.2024 को 11:00 बजे से (2) PBCM-JU-24-02 दिनांक 14.05.2024 को 15:00 बजे से;
		(2)	PARKING: (1)Parking-JU-38 दिनांक 14.05.2024 को 11:00 बजे से
		(3)	ADVT: (1) Vinyl-JU-20 दिनाक 14.05.2024 को 12:00 बजे से (2) RDN-D-ND-JU-24 दिनांक 15.05.2024 को 13.00 बजे से
		(4)	MPS: (1) MPS-JU-24-12 दिनांक 15.05.2024 को 14:00 बजे से
		(5)	ATM (1) ATM-JU-12 दिनांक 14.05.2024 को 15:00 बजे से
		(6)	Rail Coach Restaurant (RCR): (1) RCR-JU-10 दिनांक 15.05.2024 को 11:00 बजे से
		(7)	SLRs & VPUs: (1) Parcel-JU-69 दिनांक 16.05-2024 को 11:00 बजे से
		(8)	WATER VENDING MACHINES (WVM): (1)WVM-JU-24-02 दिनांक 16.05.2024 को 13:00 बजे से
		(9)	CATERING: (1) CATG-JU-24-29 दिनांक 16.05.2024 को 14:00 बजे से
4	वेबसाइट जहॉ से लॉट वाइज ई-आक्शन के संबंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है: www.ireps.gov.in		

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबधक, उत्तर पशिचम रेलवे, जोधपुर।

516-AD/24

हमें /NWRailways पर फॉलो करें

खातों से 2.45 लाख उड़ाए

जोधपुर, (कासं)। चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित रूप नगर द्वितीय में रहने वाली एक महिला के साथ ठगी हो गई। शातिर ने ऑन लाइन वेबसाइट चैक करने के लिए कस्टमर सपोर्ट की जानकारी दी, फिर अलग अलग खातों से 2.45 लाख रूपए निकाल लिए। घटना 26 अप्रेल की है।

चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित रूपनगर द्वितीय सांईबाबा मंदिर के पास रहने वाली निशा छाजेड़ की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि वह 26 अप्रेल को दिन में ट्रेक ऑन वेबसाइट को जांचने का प्रयास कर रही थी। तब एक नंबर से उसके पास में कॉल आया कि वह कस्टमर सपोर्ट के लिंक पर बात करें। इस पर शातिर ने उसे क स्टमर सपोर्ट को लिंक भेजा और दो रूपए भेजने को कहा। इस पर उसके खाते से दस हजार रूपए कट गए। बाद में किसी विशाल शर्मा का कॉल आया कि आपको पैसे रात तक रिटर्न हो जाएंगे। मगर रात में फिर कॉल आया कि आपके पैसे सुबह तक यानी 27 अप्रेल का आ जाएंगे। सुबह शातिर ने कॉल किया और ओटीपी नंबर लेकर अलग अलग चार खातों से रूपयों की निकासी कर ली।

लावारिश अस्थियों का विसर्जन आठ को

जोधपुर, (कासं)। संत नामदेव ट्रस्ट व सिंधु सेवा केन्द्र द्वारा पिछले कई वर्षों से जारी अस्थि विसर्जन कार्य को आगे बढ़ाते हुए जोधपुर के विभिन्न स्वर्गाश्रमों से लावारिश अस्थियां एकत्रित कर आठ मई को हरिद्वार में पंडित सतीश शर्मा के सान्निध्य में पूर्ण विधि विधान से विसर्जन किया जाएगा।

ट्रस्ट सचिव महेश खेतानी ने बताया कि यह सेवा दीपक-पीतांबर होतचंदानी, हीरू किशोर कलवानी, अनु-भरत आवतानी द्वारा उनके परिजन स्मृति शेष राधिका-हासानंद होतचंदानी, भगवान कलवानी, लीला-भगवान दास आवतानी की याद में की जाएगी। राम तोलानी ने बताया कि यह सेवा पूर्ण नि:शुल्क रहती है। सेवाभावी लोगों को ही हरिद्वार सेवा के लिए भेजा जाता है। कार्य में संरक्षक लक्ष्मण खेतानी, पूनम मोतियानी, सेवादार चतुरमल शेरवानी, अपली तोलानी, शंकर तेजवानी का मार्गदर्शन रहेगा।

अवैध टेक्सटाइल इकाईयों के विरुद्ध कार्रवाई

बालोतरा, (नि.सं.)। राजस्थान उच्च न्यायालय और एनजीटी के निर्देशानुसार गुरुवार को भी जेरला रोड पर स्थित अवैध टेक्सटाइल इकाईयों के विरुद्ध कार्यवाही की गई।

नगर परिषद आयुक्त मघराज डूडी ने बताया कि जेरला रोड पर स्थित अवैध टेक्सटाइल इकाईयों के विरुद्ध माननीय उच्च न्यायालय एवं एनजीटी के निर्देशानुसार गुरुवार को भी कार्यवाही की गई।

उन्होंने बताया कि नगर परिषद, राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण मंडल एवं विद्युत विभाग के द्वारा टीम बनाकर संयुक्त कार्यवाही की गई। इस दौरान अवैध टेक्सटाइल इकाईयो के विरुद्ध संयुक्त कार्यवाही करते हुए 18 इकाईयों पर कार्यवाही की गई। 02 इकाईयों से विद्युत कनेक्शन को काटा गया तथा 09 इकाईयों को नोटिस जारी किए गए। जिसमे 07 इकाइयां कड़प पेंडिग वाली पाई गई जिससे प्रदूषण नही फैलता है उनको भी नोटिस जारी किए गए। उन्होंने बताया कि इस दौरान 02 संचालकों द्वारा तुरंत प्रभाव से मशीनरी हटाने का काम शुरू किया गया। तथा 02 इकाइयां बंद पाई गई।

उन्होंने बताया कि नगर परिषद, राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण मंडल एवं विद्युत विभाग के द्वारा जारी किए जारी नोटिस के कारण अवैध इकाइयों के संचालकों द्वारा मशीनरी एवं उपकरणों को हटाने की कार्यवाही की जा रही है।

नगर परिषद आयुक्त ने बताया कि पूर्व में भी अभियान चलाकर अवैध टेक्सटाइल इकाईयो के विरुद्ध कार्यवाही की गई थी, जिसके तहत 15 अवैध इकाईयों को सीज किया गया तथा शेष अवैध इकाईयों को हटाने की कार्यवाही जारी है। उन्होंने सभी अवैध टेक्सटाइल के संचालकों को निर्देशित करते हुए कहा कि अवैध रूप से संचालित टेक्सटाइल इकाईयों को तुरंत बंद करें।

कांग्रेस प्रत्याशी व अन्य नेताओं पर मुकदमा दर्ज करने का विरोध जताया

जोधपुर, (कासं)। लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस प्रत्याशी करण सिंह उचियारड़ा और अन्य कांग्रेस नेताओं पर फलोदी में मुकदमा दर्ज करने और बीजेएस कॉलोनी में मारपीट के आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने पर कांग्रेस ने विरोध जताया है। कांग्रेस नेताओं ने इन मामलों में पुलिस पर सौतेले व्यवहार व एक पक्षीय कार्रवाई का आरोप लगाया है।

कांग्रेस प्रत्याशी करण सिंह उचियारड़ा, पूर्व राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह सोलंकी, नगर निगम उत्तर की महापौर कुंती परिहार, पूर्व विधायक मनीषा पंवार और कांग्रेस के उत्तर शहर जिलाध्यक्ष सलीम जोशी व दक्षिण शहर जिलाध्यक्ष नरेश जोशी ने गुरुवार को एक होटल में प्रेस वार्ता में आरोप लगाया कि लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा मतदान बूथों पर कब्जा कर फर्जी मतदान करने, कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट करने के बाद भी पुलिस द्वारा कांग्रेस के नेताओं पर झूठे मुकदमे दर्ज कर एक पक्षीय कार्रवाई की जा रही है। भाजपा ने पुलिस व प्रशासन की मिलीभगत से कई जगहों पर फर्जी मतदान किया, बूथों पर कब्जा कर कांग्रेस के एजेंटों व कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट की।

बताया कि इसके साथ ही कांग्रेस के नेताओं पर झूठी एफआईआर भी दर्ज करवाई गई। उन्होंने पुलिस थाना फलोदी में दर्ज एफआईआर में निष्पक्ष जांच की मांग की।

बी.जे.एस.में फर्जी मतदान का आरोप

उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेएस कॉलोनी के बूथों पर भाजपा नेता हनुमानसिंह खांगटा के नेतृत्व में बाहर से बुलाए गए लोगों के माध्यम से फर्जी मतदान कराया गया।

साथ ही बूथों पर जबरन घुसकर कब्जे का प्रयास किया। इसकी शिकायत निर्वाचन विभाग व पुलिस विभाग को कई बार की गई। भाजपा द्वारा 150-200 लोगों को बूथों के पास एक गार्डन व मकान में फर्जीवाड़े के लिए बुलाया गया जिसके संबंध में तीन बार जिला कलक्टर को फोन किया लेकिन वक्त रहते कोई कदम नहीं उठाया।

जब कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मौके पर जाकर फर्जीवाड़ा रूकवाने का प्रयास किया तो हनुमानसिह खांगटा व उनके गुर्गों ने निहत्थे कांग्रेस प्रत्याशी करण सिंह उचियारड़ा के भतीजे अभिमन्युसिंह व कार्यकर्ताओं के साथ हथियारों से मारपीट की तथा गाडिय़ों को क्षितठास्त कर दिया।

जिसके संबंध में कार्रवाई नहीं किये जाने पर घटना स्थल पर कांग्रेस ने धरना दिया और पुलिस थाना महामंदिर में रिपोर्ट दर्ज करवाई लेकिन अभी तक इस मामले में भाजपा नेताओं व सरकार के दबाव की वजह से पुलिस द्वारा कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं की गई है।वहीं इसी थाने में भाजपा नेताओं व सरकार के दबाव में पुलिस ने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के विरूद्ध एक झूठी रिपोर्ट दर्ज की है।

प्रेस कांफ्रेंस में बेंगटी कला की घटना को लेकर उचियारड़ा ने कहा- वहां के 90 प्रतिशत वोट कांग्रेस समर्थित है। उन मतदाताओं के फर्जी वोट भी डाल दिए गए।

मामले में विवाद में दोनों तरफ से पत्थरबाजी हुई लेकिन पुलिस ने एक ही पक्ष के 11 लोगों को पकड़ लिया। उनके साथ मारपीट की गई। विरोध करने पर 48 घंटे बाद उन्हें पेश किया गया। इस घटना को लेकर वो एसपी से मिलने मौके पा गए, लेकिन पुलिस एफआईआर दर्ज करने को राजी नहीं थी।

मांगे नहीं मानी गई तो बिना रास्ते को अवरूद्ध किए वह थाने के बाहर धरने पर बैठ गए।

इसके बाद एसपी ने कॉल कर कहा कि आपकी तीनों मांगे मान ली गई है, आप धरना उठा लीजिए। जिसमें एसपी के निर्देश पर आए एडिशनल एसपी ने कहा आपकी मांगों पर एफआईआर दर्ज की गई है। बिना पहचान के धरपकड़ नहीं की जाएगी, लेकिन कल हमें पता चला की पुलिस ने इस मामले में एफआईआर ही दर्ज नहीं की।

जबकि हमने धरने को इसलिए उठाया कि पुलिस ने हमें एफआईआर दर्ज करने, कॉन्स्टेबल को लाइन हाजिर करने की बात कही थी, लेकिन पुलिस जिस प्रकार से सरकार के साथ मिलकर जो घटना कर रही है उसे किसी भी कीमत पर सहन नही किया जाएगा। धरना-प्रदर्शन करना हमारा अधिकार है, लेकिन पुलिस ने मार्ग अवरूद्ध करने का मामला दर्ज किया है।

उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा निष्पक्ष कार्रवाई नहीं होने पर धरने पर बैठेंगे।

जहां जहां भी विवाद हुए वहां सभी जगह कैमरे लगे हुए हैं, लेकिन पुलिस कैमरे की जांच ही नहीं कर रही है। कहा जा रहा है की कैमरे जयपुर चले गए हैं, फुटेज मंगवाए हैं। पुलिस विवाद करने वालों कार्रवाई नहीं कर रही है।

कार्यालय नगर परिषद, जालोर (राज0)

क्रमांकः नपजा/कृ०भू०नि०/2024/845 दिनांक 01.05.2024

लोक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित कृषि भूमि का गैर कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृत अधिकारों के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है-

क्र. सं.	आवेदक का नाम व पता	राजस्व ग्राम	दस्तावेज पंजीकृत/अपंजीकृत व दिनांक	खसरा नंबर	क्षेत्रफल (वर्गगज)	आवेदित भूखण्ड का आस-पडोस	प्रयोजन
1	मदीना मस्जिद जरिये अध्यक्ष हनीफ खां पुत्र दिने खां तासखाना बाबडी जालोर	जालोर 'सी'	पंजीकृत दिनांक 14..12.2012	2210	201.44	उत्तर -24 फीट रोड दक्षिण - 16 फीट रोड पूर्व -समीर खान का मकान पश्चिम - सार्वजनिक	आवासीय
2	सुरझान कँवर/महावीर सिंह महावीर स्कुल के पास जालोर	जालोर 'ए'	पंजीकृत दिनांक 19.02.2024	6412/2019	333.33	उत्तर -30 फीट रोड दक्षिण - पार्ट ऑफ प्लाट k ब पूर्व -40 फीट रोड पश्चिम - पेपी	आवासीय
3	श्री दिनेश कुमार/शान्तिलाल राजेन्द्र नगर जालोर	जालोर 'बी'	पंजीकृत दिनांक 08.01.2024	4976,77,80,81,	206.92	उत्तर - पार्ट ऑफ प्लाट न:25 दक्षिण - पार्ट ऑफ प्लाट न:21 पूर्व -30 फीट रोड पश्चिम -अन्य कृषि भुखण्ड	आवासीय
4	श्री सुरेश कुमार/शान्तिलाल राजेन्द्र नगर जालोर	जालोर 'बी'	पंजीकृत दिनांक 10.1.2024	4977,78,79,81	250.18	उत्तर - पार्ट ऑफ प्लाट न:25 दक्षिण - पार्ट ऑफ प्लाट न:21 पूर्व -30 फीट रोड पश्चिम -अन्य कृषि भुखण्ड	आवासीय
5	कमला विश्नोई/सुरेश कुमार रिर्जव पुलिस लाईन जालोर (जलन्धनाथ कॉलोनी)	जालोर 'बी'	पंजीकृत दिनांक 15.09.2015	6492/4946	234.00	उत्तर - जलन्धनाथ कॉलोनी दक्षिण - प्लाट न: 02 पूर्व - अन्य भुमि पश्चिम -30 फीट रोड	आवासीय
7	श्री प्रवीण कुमार/श्री खसारामजी सुथार मानपूरा कोलोनी जालोर	जालोर 'बी'	अपंजीकृत 20.06.2018	4954	111.48	उत्तर - प्लाट न: ए 47 दक्षिण - प्लाट न: ए 49 पूर्व - 30 फीट रोड पश्चिम - प्लाट न: ए 87	आवासीय
8	श्री सवाराम चौधरी/ पेमारामजी चौधरी शिवाजी नगर कोलोनी, जालोर	जालोर 'ए'	अपंजीकृत 28.8.1990		333.33	उत्तर - हनुमानाराम दक्षिण - पदमसिंह पूर्व - बाबुलाल पश्चिम -19 फीट रोड	आवासीय
9	श्री नरेन्द्र कुमार चौधरी/सवारामजी चौधरी भीनमाल बाई पास रोड	जालोर 'सी	अपंजीकृत दिनांक 20.02.2016		330.08	उत्तर - शंकरलाल दक्षिण - प्रगाराम पूर्व - भीनमाल बाईपास रोड पश्चिम - असीया भील	आवासीय
10	ग्यारसी देवी/फाऊलाल सामतीपुरा रोड जालोर	जालोर 'ए'	पंजीकृत दिनांक 21.03.2012	1994,1940, 1964,1947	346.72	उत्तर - अन्य भुखण्ड दक्षिण - गणेशारामजी पूर्व - रामचन्द्र पश्चिम - 30 फीट रोड	आवासीय
11.	बुटी/लच्छीरामजी रामदेव कॉलोनी जालोर	जालोर 'सी	अपंजीकृत दिनांक 11.11.1986	2091,2368 मे से	225.96	उत्तर - 15 फीट रोड दक्षिण - लसाराम पूर्व - चेनाराम पश्चिम - 30 फीट रोड	आवासीय
12	डिम्पल सिंह/राजेन्द्रसिंह चामुण्डा गार्डन के पिछे सामतीपुरा रोड जालोर	जालोर 'ए'	पंजीकृत दिनांक 21.11.2022	1919 मे से	150.00	उत्तर - 30 फीट रोड दक्षिण - पुखराज पूर्व - 30 फीट रोड पश्चिम - छागनलाल	आवासीय
14	श्रीमती देवु / पारसमल अम्बेडकर कोलोनी जालोर	जालोर 'ए'	अपंजीकृत दिनांक 15.01.2024	7371/780	231.99	उत्तर - अन्य प्लाट दक्षिण - केवलाराम पूर्व - केवलाराम पश्चिम - 34 फीट रोड	आवासीय
15	महाकालेश्वर मंदिर संचालक श्रीमाली ब्राह्मण समाज जालोर	जालोर "सी"	अपंजीकृत दिनांक 21.12.1996	2082	706.23	उत्तर - अन्य भूमि दक्षिण - कामन चौक पूर्व - भीनमाल बाईपास रोड़ पश्चिम - कामन रोड़	आवासीय
17	सुरेश कुमार सुन्देशा पुत्र बाबूलालजी सिरे मंदिर रोड़, दुदावा जालोर	जालोर"ए"	अपंजीकृत दिनांक 24.01.2024	1816	173.15	उत्तर - मगनाराम दक्षिण - डायाराम पूर्व - 25 फीट रास्ता पश्चिम - शंकर व कन्हैया का मकान	आवासीय
18	भंवरलाल पुत्र मोहनलाल जी, न्यू रामदेव कॉलोनी जालोर	जालोर" सी"	पंजीकृत दिनांक 07.10.2019	2368	858.33	उत्तर - 30 फीट रास्ता दक्षिण - अन्य भूमि पूर्व - प्लोट नं 28 पश्चिम - प्लोट नं 34	आवासीय

इसलिए इसके द्वारा समस्त सम्बंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है की यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू -राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने के 7 दिवस के भीतर -भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजो के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगाद्य

उपयुक्त नियत समय के भीतर -भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जाएगा की किसी को आन्क्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जावे।

यह सुचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक.............................को जारी की जाती है

राज.संवाद/सी/24/76 आयुक्त

शातिर वाहन चोर गिरफ्तार, अजमेर व जयपुर से चुराई बाइक बरामद

आरोपी के कब्जे से पुलिस ने चोरी की 19 मोटरसाईकिलें बरामद की

अजमेर, (कासं)। शहर में चोरी नकबजनी, लूट व सम्पति संबंधी अपराधों की रोकथाम, वाहन चोरी की वारदातों पर अकुंश लगाने व अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई को लेकर जिला पुलिस अधीक्षक देवेंद्र कुमार विश्नोई के दिशा निर्देशों पर कार्यवाही करते हुए क्लॉक टावर थाना पुलिस ने वाहन चोरी के मामले में शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपी के कब्जे से चुराई गई 19 मोटरसाइकिलें भी बरामद की है। आरोपी ने अजमेर सहित जयपुर के कई थाना क्षेत्रों में वारदात अंजाम देना कबूला है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर अनुसंधान में जुटी है।

अजमेर की क्लॉक टावर थाना पुलिस ने वाहन चोर को गिरफ्तार कर मोटरसाइकिलें बरामद की।

- पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर सीसीटीवी फुटेज खंगाले

सिटी एडिशनल एसपी दुर्ग सिंह ने गुरुवार को मामले का खुलासा करते हुए बताया कि क्लॉक टावर थाने 29 अप्रैल को प्रार्थी मुकेश पुत्र छोटूलाल रेगर निवासी जेठाना हाल जवाहर की नाडी चन्द्रवरदाई नगर ने एक लिखित रिपोर्ट दर्ज कराई थी, जिसमें बताया कि 24 अप्रेल को किसी कार्य से मार्टिण्डल ब्रिज के पास एलजी शोरूम के सामने अपनी मोटरसाईकिल खड़ी की थी, जब वापस आया ता मोटरसाईकिल वहां नहीं मिली। अज्ञात चोर चोरी करके ले गया। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया गया कर सीसीटीवी फुटेज का गहनता से अवलोकन कर फुटेज में दिखे हुलिये के आधार पर अज्ञात चोर की तलाश आरम्भ की तथा सादा वस्त्रों में टीम बनाकर तलाश हेतू जगह-जगह लगाये गए।

एएसपी दुर्ग सिंह ने बताया कि आरोपी को पकड़े के लिए एसपी विश्नोई के दिशानिर्देशों पर टीक का गठन किया। टीम ने मुखबिर की सूचना पर शातिर वाहन चोर को चोरी गई मोटरसाईकिल के साथ डिटेन किया व थाने लाकर पूछताछ कर आरोपी अनिल कुमार वर्मा पुत्र छीतरमल निवासी बलाईयों का मोहल्ला साकून पुलिस थाना नरैना जिला जयपुर को प्रकरण में गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस पूछताछ में शातिर वाहन चोर चोरी की गई मोटरसाईकिल को बेचने की फिराक में ग्राहक की तलाश में घूम रहा था। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने अजमेर शहर व जयपुर के कई थाना क्षेत्रों में मोटरसाईकिलें चोरी करना कबूल किया।

महिला पार्षद, पार्षद पति सहित अन्य पर अवैध वसूली के आरोप

अजमेर, (कासं)। अलवर गेट थाना क्षेत्र के नगरा स्थित एक भवन निर्माण कार्य करवाने की एवज में अवैध वसूली करने का मामला सामने आया है। पीड़ित ने थाने में शिकायत देते हुए वार्ड की महिला पार्षद, पार्षद पति सहित अन्य पर अवैध राशि वसूली के आरोप लगाए हैं। रकम नहीं देने पर स्थानीय लोगों के साथ मिलकर निर्माण कार्य रुकवाने और झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- पीड़ित ने मुकदमा दर्ज कराया, निर्माण कार्य करवाने की एवज में अवैध वसूली का आरोप

अलवर गेट थाना क्षेत्र नगरा निवासी पीड़ित रविंद्रपाल सिंह छाबड़ा ने थाने में लिखित शिकायत देते हुए वार्ड की महिला पार्षद लक्ष्मी बुंदेल, अन्य महिला पार्षद के पति ईश्वर राजोरिया सहित अन्य लोगों के खिलाफ अवैध वसूली करने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में पीड़ित छाबड़ा ने बताया कि वर्ष 2017 में अपनी जमीन पर चारदीवारी का निर्माण करवाना शुरू किया था, जिसे आरोपियों ने अन्य स्थानीय लोगों के साथ मिलकर रोकने का प्रयास किया। पुन: जनवरी 2024 को अपने निर्माण कार्य को शुरू किया तो महिला पार्षद लक्ष्मी बुन्देल ने निर्माण कार्य की एवज में अनाधिकृत राशि की मांग की। छाबड़ा ने कहा कि महिला पार्षद को रकम देने से इंकार कर दिया। जिस पर पार्षद ने पुलिस, नगर निगम सहित एडीए को शिकायत कर दी।

धमकी और समझौते का बनाया दबाव :- पीड़ित छाबड़ा ने बताया कि पार्षद के कहने पर अलवर गेट थाने से दो पुलिस वाले आए और ठेकेदार को काम बंद करवाने की धमकी दी गई, लेकिन काम बंद करने से मना कर दिया। पीड़ित ने बताया कि उसी दिन एक व्यक्ति उसके पास आया और कहा कि वह महिला पार्षद को 5 लाख या दुकान दे दे तो वह किसी प्रकार का विरोध नहीं करने के लिए उन्हें समझाकर चुप करवा देगा, लेकिन उसने उस व्यक्ति को भी पैसे देने से मना कर दिया।

पीड़ित छाबड़ा ने आरोप लगाते हुए बताया कि दूसरे दिन आरोपियों ने आपसी मिलीभगत कर अन्य लोगों को भडक़ते हुए उसकी निजी संपत्ति को मंदिर परिसर की संपत्ति बताते विरोध किया। बाद में निर्माण कार्य रुकवाने का प्रयास किया, इसके साथ ही उसे झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी दी गई। उसने इसकी शिकायत अलवर गेट थाने में दी लेकिन किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़ित ने बताया कि महिला पार्षद लक्ष्मी बुन्देल और अन्य महिला पार्षद के पति ईश्वर राजोरिया ने उसकी जमीन को मंदिर संपत्ति बताते हुए स्थानीय लोगों को भडक़ा रहे हैं। साथ भीड़ का फायदा उठाकर उसकी संपत्ति पर जाकर तोड़फोड़ की गई। पुलिस में शिकायत करने के बावजूद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़ित ने कहा कि उसे परेशान किया जा रहा है। इसके बाद उसने कोर्ट के जरिए थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

वहीं अन्य महिला पार्षद पति ईश्वर राजोरिया ने मामले में अपना पक्ष रखते हुए कहा कि सार्वजनिक संपत्ति का मामला है, मंदिर विकास समिति की जमीन है, जिस पर अवैध निर्माण और फर्जी दस्तावेज बनाकर कब्जा किया गया है। क्षेत्रवासियों ने इसकी शिकायत उन्हें दी थी। मामले में प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत करवाया था, जिसके निर्माण कार्य का काम बंद करवाया गया। उसके बाद ही उन पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं। वहीं मामले में जब महिला पार्षद लक्ष्मी बुन्देल से फोन जानकारी लेनी चाही, तो उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में हंगामा

भरतपुर, (निसं)। मथुरा गेट थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में हंगामा हो गया। हंगामे की सूचना पर सीओ सिटी सुनील प्रसाद, मथुरा गेट थाना अधिकारी करण सिंह राठौड़, कोतवाली थाना अधिकारी रूपराम पुलिस जाप्ते के साथ मौके पर पहुंचे और हंगामा शांत कराया। फिलहाल नगर निगम के द्वारा स्थिति की जांच की जा रही है।

मथुरा गेट थाना क्षेत्र में काफी समय से आरबीएम अस्पताल के सामने की जमीन पर विष्णु बंसल व डॉ. जगवीर का विवाद चल रहा है। इस जमीन पर विष्णु बंसल के द्वारा चारदीवारी का कार्य करवाया जा रहा था। जिस पर डॉ. जगवीर पक्ष के लोगों ने इसका विरोध किया। जिस पर दोनों पक्षों में विवाद हो गया और हंगामे की स्थिति बन गई। सूचना मिलने पर सीओ सिटी सुनील प्रसाद, मथुरा गेट थाना अधिकारी करण सिंह राठौड़, कोतवाली थाना अधिकारी रूपराम पुलिस जाप्ते के साथ मौके पर पहुंचे और हंगामा शांत कराया। जहां विष्णु बंसल के द्वारा पुलिस व नगर निगम के अधिकारियों को जानकारी दी कि वह इस जमीन का मामला कोर्ट में चल रहा था। कोर्ट ने उसके पक्ष में फरवरी 2024 में फैसला सुनाया है इसलिए चारदीवारी का निर्माण कराया जा रहा है। वहीं डॉ. जगवीर सिंह का कहना है कि इस जमीन को लेकर कोर्ट में मामला चल रहा है। जिसकी आगामी जुलाई में सुनवाई होनी है। ऐसे में जमीन पर निर्माण कार्य कराना सही नहीं है। फिलहाल अधिकारी दोनों पक्षों के कागजातों की जांच में जुटे हुए हैं।

खेत में बनी डिग्गी में नहाने उतरे चार बच्चे, दो चचेरे भाइयों की मौत

पदमपुर के गांव 5 ईईए में हुआ हादसा, बकरियां चराने गए थे

पदमपुर, (निसं)। क्षेत्र के गांव 5 ईईए में बड़ा हादसा हो गया। वहां खेत में बनी डिग्गी में नहाने के लिए उतरे चार बच्चों में से दो की डूबने से मौत हो गई। श्रमिक परिवार से जुड़े दोनों बच्चे चचेरे भाई बताए जा रहे हैं।

- श्रमिक परिवार से जुड़े दोनों बच्चे चचेरे भाई बताए जा रहे हैं

जानकारी अनुसार गांव 5 ईईए के श्रमिक परिवारों के पांच बच्चे बकरियां चराते हुए खेत में बनी के नजदीक चले गए। दोपहर में तेज गर्मी के चलते इनमें चार बच्चे नहाने के लिए पानी में उतर गए। इस दौरान शोर सुनकर बाहर खड़े बच्चे ने वहां पड़ी एक रस्सी को डिग्गी में फेंका। इसे पकड़कर दो बच्चे किसी तरह डिग्गी से बाहर से निकल आए लेकिन गहराई में जाने से अन्य दो बच्चे बाहर नहीं निकल सके। यह देख बाहर खड़े बच्चे ने शोर किया तो वहां अन्य लोग एकत्र हो गए। वहां पहुंचे लोगों ने मशक्कत कर दो बच्चों हरीश (15) पुत्र शंकरलाल नायक और सागर (11) पुत्र सुभाषचंद नायक को बाहर निकाला और बचाव के प्राथमिक प्रयासों के बाद उन्हें सीएचसी पर ले जाया गया लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। दोनों बच्चों की गहरे पानी में डूबने से मौत हो गई। श्रमिक परिवारों से जुड़े दोनों बच्चों की मौत का समाचार सुनकर ग्रामीणों में शोक छा गया।

डिग्गी में डूबे दोनों बच्चों को बचाने का काफी प्रयास किया गया लेकिन विफल रहा। जानकारी अनुसार डिग्गी में से बच्चों को निकालने के लिए पानी में रस्सी डालने के साथ ग्रामीण खुद भी पानी में उतर गए और मशक्कत कर बच्चों को बाहर निकाला। इस दौरान मौके पर उन्होंने बच्चों की सांस वापस लाने के लिए कई प्रयास किए लेकिन विफल रहे। उधर, पदमपुर थाने के एसएचओ सुरेंद्र राणा ने बताया कि पोस्टमार्टम करवाकर बच्चों के शव परिजन को सौंप दिए गए। उन्होंने यह भी बताया कि श्रमिक परिवार से जुड़े बच्चे घर की बकरियों को ही चराने के लिए निकले थे।

लापता कोचिंग छात्रा पंजाब से दस्तयाब

कोटा, (निसं)। शहर के अनंतपुरा थाना इलाके में पीजी में रहकर नीट यूजी की तैयारी कर रही यूपी के कुशीनगर निवासी छात्रा पिछले दिनों लापता हो गई थी। करीब 10 दिन की तलाश के बाद पुलिस ने छात्रा को दस्तयाब कर लिया है। छात्रा पंजाब से दस्तयाब की गई है। कोचिंग छात्रा ने पूछताछ में बताया कि उसने ज्यादातर समय वृंदावन में ही बिताया है।

कोटा सिटी एसपी डॉ.अमृता दुहन ने बताया कि उत्तरप्रदेश के कुशीनगर नगर निवासी 21 वर्षीय छात्र तृप्ति सिंह गोबरिया बावड़ी ट्रांसपोर्ट नगर स्थित एक पीजी में रहती थी। वह 21 अप्रैल को कोचिंग के लिए पीजी से निकली थी जिसके बाद वापस नहीं आई। उसके पीजी रूम की तलाशी लेने पर वहां सुसाइड नोट भी मिला था। इस संबंध में पीजी संचालिका ने 23 अप्रैल को गुमशुदगी दर्ज की थी। तृप्ति की तलाश में पुलिस टीम मुस्तैदी से जुट गई। उसके परिजनों से भी बातचीत की गई थी। छात्रा की तलाश में चंबल नदी में गोताखोरों ने अभियान भी चलाया था। अनंतपुरा थानाधिकारी भूपेंद्र सिंह ने बताया कि जिस कॉपी में सुसाईड नोट लिखा था वहां पर तृप्ति ने राधा-कृष्ण भी लिखा था। उसके मोबाइल डिटेल के अनुसार उसके वृंदावन जाने की पुष्टि हुई। ऐसे में टीम को वृंदावन और मथुरा भेजा गया। यहां पुलिस को सूचना मिली कि तृप्ति वहां से लुधियाना गई है। इसके बाद पंजाब के लुधियाना से तृप्ति को दस्तयाब किया गया और परिजनों को सुपुर्द किया जाएगा।

पिकअप और ट्रैक्टर की भिड़ंत में एक की मौत, आठ घायल

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के बडाऊ के पास गुरूवार दोपहर को एक पिकअप और ट्रैक्टर की भिडंत हो गई। इस दौरान हुए हादसे में पिकअप में सवार करीब आठ लोग घायल हो गए। हादसे में छह जनों की हालत गंभीर होने पर उन्हें नीमकाथाना व झुंझुनूं रैफर किया गया है।

- छह की हालत गंभीर होने पर नीमकाथाना व झुंझुनूं किया रैफर
- परिवारजन शोक सभा में शामिल होने नीमकाथाना से भिटेरा आए थे

जानकारी के अनुसार पंडाली की ढाणी तन महुवा नीमकाथाना के रहने वाले सीआरपीएफ में कार्यरत रघुवीर सिंह अपने ससुराल भिटेरा में एक महिला की मौत होने पर शोक व्यक्त करने के लिए पिकअप गाड़ी में परिवार के लोगों के साथ आए थे। जब वह शोक सभा में शामिल होने के बाद वापस अपने गांव जा रहे थे तो बडाऊ पंचायत के रामनगर के पास ट्रैक्टर से पिकअप की टक्कर हो गई। इस दौरान हादसा होने पर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे तथा हादसे में घायलों को बडाऊ के सामुदायिक अस्पताल में पहुंचाया गया। इस दौरान हादसे में घायल पप्पू, सतवीर, मोहनलाल, ओमप्रकाश, तुलसी देवी की हालत गंभीर होने पर उन्हें नीमकाथाना तथा रघुवीर सिंह को झुंझुनूं रैफर कर दिया गया, जहां उसकी मौत हो गई। इसके अलावा अन्य घायलों को हल्की चोटें होने पर उनका प्राथमिक उपचार किया गया।

घटना की सूचना पर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से सड़क निर्माण का कार्य करवाया जा रहा है। हादसे में टक्कर लगने वाला ट्रैक्टर सड़क का निर्माण कार्य कर रहा था। इस दौरान सवारी भरकर आ रही पिकअप के अनियंत्रित हो जाने से ट्रैक्टर से टकरा गई, जिससे हादसा हो गया। उन्होंने बताया कि हादसे में गंभीर चार घायल पिकअप गाड़ी के ऊपर बैठे हुए थे, जिसके चलते उनको गंभीर चोटें आई है। हादसे के दौरान ट्रैक्टर व पिकअप गाड़ी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे की सूचना पर खेतड़ीनगर पुलिस मौके पर पहुंची तथा घटना के बारे में जानकारी जुटाई।

थानाधिकारी विजय कुमार चंदेल ने बताया कि रामनगर में गौशाला के पास ट्रैक्टर व पीकअप गाड़ी की टक्कर लगने से हादसा हुआ है। एक रघुवीर सिंह नाम के व्यक्ति की हालत गंभीर होने पर झुंझुनूं के बीडीके अस्पताल में रैफर गया था, जिसकी मौत हो गई है। अभी ओर घायलों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। हादसा का मुख्य कारण जानने के बाद आगामी कार्रवाई की जाएगी।

फर्जी फर्म बनाकर रकम हड़पी

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने फर्जी फर्म बनाकर मार्बल ग्रेनाइट की रकम हड़पने के आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया है। पीसांगन निवासी पीड़ित किशन वैष्णव ने एडवोकेट रुपेश शर्मा के जरिये अदालत में जाकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। बजरंग कॉलोनी में रहने वाले राजू पुत्र सुवादास व इसका भाई भगवानदास ने अक्टूबर, दिसम्बर 2023 सहित जनवरी 2024 में करीब 58 लाख रूपये का नौ गाड़ी ग्रेनाइट बतौर उधार क्रय किया गया था, किंतु दोनों भाईयो ने समय अवधि निकल जाने के वावजूद भुगतान नहीं किया। इस बीच पीड़ित द्वारा फर्म के बारे में जानकारी करने पर पैरों तले जमीन खिसक गई कि आरोपियों ने श्याम ग्रेनाइट नाम से फर्जी फर्म बना ली। धोखाधड़ी सामने आने पर तत्काल न्यायालय में परिवाद प्रस्तुत कर न्याय की गुहार लगाई।

सूने मकान से चार लाख रूपए सहित लाखों के गहने चोरी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी कस्बे में चोरों ने बुधवार को एक निजी कॉलेज संचालक के घर में दिनदहाडे चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। इस दौरान चोर चार लाख रूपए नगद सहित लाखों रूपए के गहने लेकर फरार हो गए। घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची खेतड़ी पुलिस ने घटनास्थल का मौका मुआयना किया, लेकिन अभी तक आरोपियों का कोई सुराग नहीं लग पाया है।

- चोरों ने दिनदहाड़े कॉलेज संचालक के घर में वारदात को अंजाम दिया

पुलिस के मुताबिक वार्ड 17 निवासी मनोज कुमार वर्मा ने रिपोर्ट दी कि वह जसरापुर में निजी कॉलेज का संचालन करता है। रोजाना की तरह सुबह करीब साढे दस बजे अपनी पत्नी के साथ कॉलेज चले गए थे, वहीं उनके बच्चे स्कूल गए हुए थे। इस दौरान चोरों ने घर को सूना देखकर चोरी की वारदात को अंजाम दे डाला। जब बच्चे स्कूल से लौटे तो घर के ताले टूटे थे तथा सामान भी बिखरा हुआ था। इस दौरान बच्चों ने घटना की जानकारी परिजनों को दी तो वह मौके पर पहुंचे और घर में रखे सामान की तलाशी ली तो सामने आया कि कॉलेज की फीस के लिए रखे चार लाख रुपए नगद व करीब दो लाख रुपए गहने सहित अन्य सामान गायब मिला। इस दौरान चोरी होने की सूचना उन्होंने पुलिस को दी तो पुलिस मौके पर पहुंची तथा घटना के बारे में जानकारी जुटाई।

इस दौरान आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज में सामने आया कि तीन व्यक्तियों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। इसमें एक व्यक्ति निगरानी कर रहा था तथा दो व्यक्ति घर में घुसकर वारदात को अंजाम देकर फरार हो गए। थानाधिकारी भंवरलाल कुमावत ने बताया कि चोरी की घटना को लेकर मौका निरीक्षण किया गया है। पीड़ित की ओर से चार लाख रुपए नगद और गहने ले जाने की रिपोर्ट दी गई है। पुलिस की ओर से अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया। सीसीटीवी फुटेज में तीन युवको के वारदात को अंजाम देने की बात सामने आई है, जिनके बारे में जानकारी जुटाई जा रही है तथा जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर वारदात का खुलासा किया जाएगा।

फर्जी दस्तावेज से कृषि भूमि बेचने वाला गिरोह पकड़ा

गिरोह के चार सदस्यों को पकड़ गिरोह में शामिल अन्य सदस्यों की पहचान कर रही है पुलिस

टिब्बी, (निसं)। फर्जी दस्तावेज, फर्जी जमीन मालिक तथा फर्जी गवाह बनाकर किसी अन्य किसान की कृषि भूमि को बेचकर लाखों की ठगी करने वाला एक गिरोह स्थानीय पुलिस के हत्थे चढ़ा है। गिरोह के सदस्य हरियाणा के एक किसान को फर्जी दस्तावेजों व जमीन के फर्जी मालिक से कृषि भूमि की खरीद दिखाकर लाखों रूपए की ठगी करने के प्रयास में थे। पुलिस गिरोह के चार सदस्यों को पकड़कर उनसे पूछताछ कर गिरोह में शामिल अन्य सदस्यों की पहचान कर रही है। हालांकि गिरोह के सदस्यों को पकड़वाने में गिरोह से कृषि भूमि की खरीद कर रहे किसान की जागरूकता काम आ गई इससे किसान लाखों की ठगी से बच गया साथ ही गिरोह के सदस्य भी पुलिस की गिरफ्त में आ गए।

थानाधिकारी जगदीश प्रसाद पांडर के अनुसार आदराम नायक निवासी गांव बाहिया तहसील राणियां (हरियाणा) को क्षेत्र में कृषि भूमि खरीद करनी थी। इसको लेकर वह कृषि भूमि के सौदे करवाने वाले जीतराम पुत्र कुरडाराम मेघवाल निवासी ढुढियावाली तहसील राणियां से मिला तो उसने सूरेवाला निवासी दलाल मंगत सिंह पुत्र महेन्द्र सिंह के बारे में जानकारी दी। जिससे मिलने के लिए वह, विनोद खींचड निवासी बाहिया व जीतराम 24 अप्रेल को सूरेवाला पहुंचे।

जहां पर मंगत सिंह ने पन्नीवाली के चक 30 एनजीसी की 5 बीघा जमीन बिकाउ होने के बारे में बताया तथा कहा कि जमीन मुख्तयार सिंह व हरनेक सिंह पुत्रगण बन्ता सिंह निवासी सूरेवाला की है, बाद में मंगत सिंह ने दो अन्य लोगों से यह कहकर मिलवाया कि ये मुखत्यार सिंह व हरनेक सिंह जमीन के मालिक है। बाद में चक 30 एनजीसी की प.नं. 171/254 के कि.नं. 16,17, 18,19,20 की जमीन व जमाबन्दी दिखाई तथा पन्नीवाली गांव में एक घर में ले गए जहां चार-पांच अन्य लोगों के सामने उक्त जमीन का सौदा 43 लाख 21 हजार में तय हुआ। मौके पर एक लाख रूपये साई तथा 30 अप्रैल को बैयनामा का इकरार एक सादे कागज पर किया गया।

इकरारनामा के अनुसार 30 अप्रैल को टिब्बी तहसील कार्यालय में जमीन का बैयनामा करवा रहे थे तो आदराम नायक ने जमीन मालिक मुख्तयार सिंह व हरनेक सिंह के पहचान सम्बन्धी दस्तावेज आधार कार्ड देखे व उनकी जांच की तो पता चला कि दोनों व्यक्तियों ने फर्जी आधार कार्ड बना रखे है। इनके साथ बलविन्द्र सिंह निवासी 3 जीजीआर, राजुसिंह निवासी सूरेवाला, याकूब निवासी सूरेवाला, पप्पु खां निवासी टिब्बी व सुखदेव सिह निवासी ढोबरियां भी थे।

आरोपियों ने दस्तावेज सही बताते हुए लिखापढ़ी करवाने का दबाव बनाया लेकिन असली दस्तावेज मांगने पर आनाकानी करने लगे। इस दौरान किसान आदराम ने इसकी सूचना टिब्बी थाने में दे दी जिसके चलते मौके पर पहुंची पुलिस ने राजू सिंह पुत्र अमरजीत सिंह रायसिख निवासी सूरेवाला, याकूब पुत्र शोकत निवासी सूरेवाला, पप्पू खा पुत्र यासीन खां निवासी सूरेवाला व जीतराम पुत्र कुरडाराम निवासी ढूढियावाली को पकड़ लिया जबकि अन्य फरार हो गए।

जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में पथराव, पुलिस पर भी पत्थर बरसाये

पुलिस ने भी हल्का बल प्रयोग किया, जिसमें एक नाबालिग सहित कुछ लोग घायल हो गए

भुसावर, (निसं)। पेट्रोल पम्प की जमीन पर निर्माण कार्य का विरोध करने पहुंचे ग्रामीणों ने गुरुवार को पुलिस पर पथराव कर दिया, इससे अफरा-तफरी मच गई। जवाबी कार्रवाई ने पुलिस ने भी हल्का बल प्रयोग किया, जिसमें एक नाबालिक सहित कुछ लोग घायल हो गए। घटना के बाद क्षेत्र में भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।

हंगामे के बाद मौके पर पहुंचे पुलिस जाब्ते ने स्थिति को संभाला।

- जमीन पर पेट्रोल पंप के लिए निर्माण कार्य का लोगों ने विरोध कर काम बंद कराने का प्रयास किया

घटना भरतपुर के भुसावर स्थित हिंडन रोड पर मन्नू वाली हनुमान मंदिर के पास दोपहर 12 बजे हुई, जहां ग्रामीण पेट्रोल पंप के निर्माण को लेकर ग्रामीण प्रदर्शन कर रहे थे। पुलिस की कार्रवाई के बाद गुस्साए लोगों ने कार्यालय के पास हिंडौन सड़क मार्ग पर पत्थर और झाड़ियां डालकर जाम कर दिया साथ ही पुलिस पर प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर हंगामा किया। मौके पर क्यूआरटी टीम वैर भुसावर हलेना थाने के 100 से अधिक पुलिस के जवान तैनात हैं और ग्रामीणों से समझाइश का प्रयास किया जा रहा है। मामले में नगर पालिका अध्यक्ष पालिका अध्यक्ष नेवी जमीन के विवाद में जांच शुरू कर दी है।

भुसावर एसएचओ सुनील गुप्ता ने बताया भुसावर के हिंडौन रोड पर मन्नू वाली हनुमान मंदिर के सामने जमीन पर पेट्रोल पंप के लिए गुरुवार सुबह निर्माण कार्य शुरू किया था। जिसकी सूचना के बाद जमीन के मालिक मूलचंद सैनी के परिजन और आसपास के लोग मौके पर पहुंचे लोगों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए काम बंद करने का प्रयास किया। सूचना के बाद पुलिस जाब्ते के साथ पहुंची। पुलिस ने प्रदर्शन कार्यों को खरीदने का प्रयास किया तो गुस्साए लोगों ने पथराव किया।

पुलिस ने बताया कि घाटरी के पूर्व सरपंच कप्तान के नाम पेट्रोल पंप अलॉट हुआ था। पूर्व सरपंच ने मूलचंद सैनी से 20 साल के लिए जमीन लीज पर ली थी। इसके बाद पट्टा लेकर नियमानुसार विभागीय कार्रवाई के बाद कलेक्टर से एनओसी लेकर पेट्रोल पंप आवंटित कराया था। कप्तान ने शिकायत की थी कि कुछ लोग कुछ लोग पेट्रोल पंप का कार्य नहीं करने दे रहे हैं। इसी वजह से पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और समझाइस का प्रयास किया। गब्बर सैनी ने बताया कि पूर्व सरपंच जमीन पर कब्जा कर पेट्रोल पंप लगाना चाहता है। फर्जी तरीके से मूलचंद सैनी की जमीन पर पट्टा बनवा लिया। नगर पालिका में शिकायत के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हुई 2 महीने पहले फिर भी कराई थी। लेकिन कुछ नहीं हुआ जमीन पर निर्माण कार्य का विरोध करने पहुंचे तो पुलिस ने मारपीट की।

पेपर लीक के मास्टर माइंड जगदीश विश्नोई सहित 25 आरोपियों के खिलाफ चालान पेश

एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक व डमी कैंडिडेट बैठाने का मामला

- करीब पांच दर्जन से अधिक के खिलाफ जांच लंबित रखी गई है।
- 2369 पेज के चालान की कॉपी लेकर एसओजी की 15 से ज्यादा सदस्यों की टीम अदालत पहुंची।
- एसओजी ने अपनी जांच में माना कि आरोपियों ने एक संगठित गिरोह बनाकर सुनियोजित तरीके से आपराधिक षडयंत्र रचते हुए एसआई भर्ती-2021 के पेपर लीक किए थे और उन्हें धन कमाने के लिए आगे भी बेचा था।

जयपुर। एसआई भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक और डमी कैंडिडेट बैठाने के मामले में एसओजी ने गुरुवार को सीएमएम कोर्ट में मास्टर माइंड जगदीश विश्नोई सहित 25 आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र पेश किया है। एसओजी ने करीब पांच दर्जन से अधिक के खिलाफ जांच लंबित रखी है। एसओजी को मामले की जांच करते हुए 60 दिन का समय हो चुका था, इसलिए गुरुवार को कोर्ट में चालान पेश करना था। पीठासीन अधिकारी के ट्रांसफर होने के चलते चालान लिंक अदालत में पेश किया गया।

एसओजी की ओर से 2369 पेज का चालान पेश किया गया। एसओजी की 15 से ज्यादा सदस्यों की टीम चालान की कई कॉपियां लेकर कोर्ट पहुंची। इस आरोप पत्र में आरोपियों पर आईपीसी की धारा 419, 420, 467, 468, 471, 477, 477ए/409, 34, 201, 109, 120 बी सहित सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम की धारा 4, 5 व 6 और आईटी एक्ट की धारा 66 डी के तहत आरोप लगाए हैं। एसओजी ने जिनके खिलाफ चालान पेश किया है, उनमें आरोपी भूपेन्द्र सारण, राजेश खंडेलवाल, शिवरतन मौठ, नरेश खिलेरी, सुरेन्द्र विश्नोई, करणपाल गोदारा, विवेक भामू, मनोहर लाल विश्नोई, गोपीराम, श्रवण विश्नोई, रोहिताश कुमार, प्रेमसुखी, एकता, भगवती विश्नोई, नारंगी कुमारी, राजेश्वरी, चंचल कुमारी, शिक्षक राजेन्द्र कुमार यादव, लाइब्रेरियन राजेन्द्र कुमार, हर्षवर्धन कुमार, जगदीश सियाग, इंदूबाला, अनिल कुमार व अशोक सिंह नाथावत शामिल हैं। एसओजी ने माना कि आरोपियों ने एक संगठित गिरोह बनाकर सुनियोजित तरीके से आपराधिक षडयंत्र रचते हुए एसआई भर्ती-2021 के पेपर लीक किए थे और उन्हें धन कमाने के लिए आगे भी बेचान किया।

गौरतलब है कि एसओजी ने इस मामले में 3 मार्च को रिपोर्ट दर्ज की थी और आरोपी राजेश खंडेलवाल को 4 मार्च को गिरफ्तार किया था। इसके बाद पूछताछ में अन्य आरोपियों के नाम सामने आने पर उनकी भी गिरफ्तारियां की गई थी।

12 आरोपियों की जमानत मामले पर 6 मई को सुनवाई

एसआई भर्ती परीक्षा-2021 पेपरलीक केस में एसओजी ने 36 ट्रेनी एसआई और 7 अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें से 11 ट्रेनी एसआई और एक कांस्टेबल को जयपुर मेट्रो-द्वितीय की सीएमएम कोर्ट ने 12 अप्रेल को जमानत दे दी थी। इसके खिलाफ सरकार हाईकोर्ट गई थी, जहां 15 अप्रेल को सुनवाई के बाद सीएमएम कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी गई थी। इस फैसले के खिलाफ आरोपी सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे।

आरोपियों की ओर से कहा गया था कि उनके रिलीज ऑर्डर जारी हो चुके थे, लेकिन हाईकोर्ट ने गलत तरीके से उनकी रिहाई पर रोक लगाई है। गिरफ्तार ट्रेनी एसआई की एसएलपी पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 26 अप्रैल को हाईकोर्ट को निर्देश दिए थे कि वे 1 मई से सप्ताह भर के अंदर सुनवाई पूरी करके फैसला दे। अब हाईकोर्ट इस मामले में 6 मई को फाइनल सुनवाई करेगा।

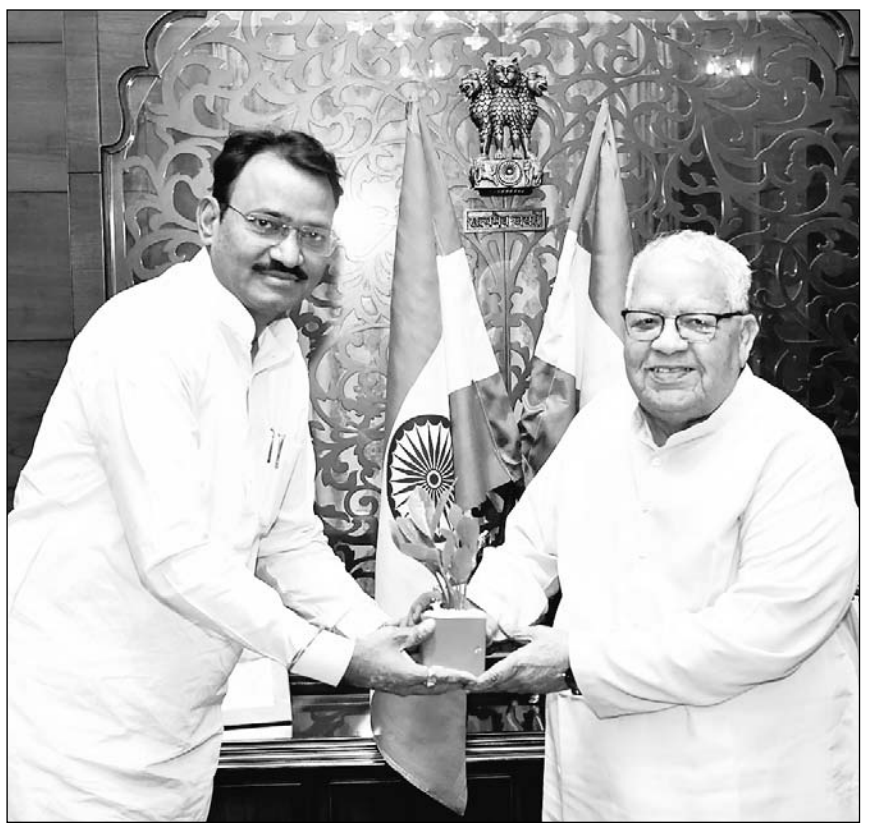

राज्यपाल कलराज मिश्र से गुरुवार को राजभवन में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने मुलाकात की। राज्यपाल मिश्र से उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी। वहीं मिश्र से डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश) के कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने मुलाकात की। बेरवाल ने राज्यपाल से भेंट के दौरान उन्हें मध्यप्रदेश के सबसे पुराने व सबसे बड़े इस केंद्रीय विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियां और नई शिक्षा नीति के संदर्भ में शैक्षिक गुणवत्ता के संदर्भ में किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

गर्मी के मौसम में पहले सड़क किनारे प्याऊ लगाई जाती थी जिससे लोग पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते थे जो आज कम ही देखने को मिलती है। जयपुर अजमेर हाइवे के पास कच्चे रास्ते पर लगे हैंडपंप से पानी निकालकर अपनी प्यास बुझाता एक राहगीर। फोटो : राष्ट्रदूत

'प्रदेश में होने वाले लेनदेन के लिए बाहर से खरीदा स्टांप मान्य नहीं'

जयपुर। सुप्रीम कोर्ट ने बीमा पॉलिसियों को लेकर कहा कि राजस्थान में होने वाले लेन-देन के लिए राज्य के बाहर से खरीदा गया स्टांप पेपर मान्य नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट भारतीय जीवन बीमा निगम की अपीलों को खारिज करते हुए यह आदेश दिया। अदालत ने राज्य सरकार से कहा है कि जिस समय बीमा स्टांप नहीं थे, उस समय की स्टांप ड्यूटी के बारे में मांग नहीं की जाए।

न्यायाधीश पीएस नरसिम्हा व न्यायाधीश अरविन्द कुमार की खण्डपीठ ने 20 साल से चल रहे विवाद पर यह फैसला सुनाया। कोर्ट ने राज्य के 1952 के स्टांप कानून को वैध ठहराया, वहीं कहा कि राष्ट्रपति की मंजूरी से बना राज्य का कानून केन्द्र के कानून से उपर होगा। कोर्ट ने कहा कि स्टांप ड्यूटी भी कर के रूप में है और राज्य सरकार को बीमा पॉलिसियों पर स्टांप ड्यूटी वसूल करने का हकदार है। एलआईसी की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि भारतीय स्टांप अधिनियम 1899 के अंतर्गत देश में स्टांप ड्यूटी ली जा रही है, राजस्थान सरकार ने इसी अधिनियम के अंतर्गत राज्य में 1952 का स्टांप अधिनियम बनाया। राज्य को बीमा पॉलिसियों पर स्टांप ड्यूटी लेने का अधिकार नहीं है। राज्य सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष सिंघवी ने कहा कि राज्य सरकार को स्टांप ड्यूटी वसूल करने का अधिकार है।

डॉ.रवि प्रकाश मेहरड़ा को दिया ए.सी.बी. का जिम्मा

जयपुर, (का.प्र.)। भारतीय पुलिस सेवा के तीन अधिकारियों का तबादला करते हुए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के नए मुखिया डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा होंगे, जबकि फिलहाल एसीबी के कार्यवाहक डीजी का जिम्मा संभाल रहे एडीजी हेमंत प्रियदर्शी को पुलिस मुख्यालय भेजा गया है। उन्हें एडीजी साइबर क्राइम के पद पर लगाया गया है।

कार्मिक (क-1) विभाग की ओर से गुरुवार शाम को जारी आदेश के अनुसार डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा का तबादला डीजी (एससीआरबी, साइबर क्राइम एवं तकनीकी सेवाएं) से डीजी, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के पद पर किया गया है। जबकि हेमंत प्रियदर्शी को एडीजी, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो से एडीजी, एससीआरबी एवं साइबर क्राइम के पद पर लगाया गया है।

अब तक भर्ती एवं पदोन्नित बोर्ड के साथ साइबर क्राइम के एडीजी का पद संभाल रहे सचिन मित्तल का तबादला एडीजी के पद पर किया गया है। डॉ. मेहरड़ा को सुबह 11 बजे भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के मुख्यालय पहुंचेंगे। जहां वे डीजी, एसीबी का पदभार ग्रहण करेंगे।

'एफ.एस.एल. रिपोर्ट देरी के कारण कई बार निर्दोष रहते हैं जेल में बंद'

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एफएसएल व डीएनए रिपोर्ट आने में देरी से जुडे मामले में गंभीर टिप्पणी की है। अदालत ने कहा कि रिपोर्ट देरी के चलते केसों में फैसले नहीं हो पाते। एनडीपीएस के कई मामलों में एफएसएल रिपोर्ट नेगेटिव आती है और आरोपी बरी हो जाते हैं, लेकिन इस दौरान वे कई दिनों तक जेलों में बंद रहते हैं। यह उसके संविधान के अनुच्छेद 21 का हनन है। जस्टिस समीर जैन ने यह टिप्पणी गुरुवार को एक पॉक्सो केस में एफएसएल की रिपोर्ट आए बिना ही चालान पेश होने से जुडे मामले में विनोद की जमानत अर्जी पर सुनवाई एक सप्ताह टालते हुए की।

सुनवाई के दौरान एफएसएल निदेशक अजय शर्मा भी पेश हुए। लोक अभियोजक शेरसिंह महला ने अदालत को बताया कि गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की तुलना में प्रदेश में 10 अधिकारी प्रतिदिन 35 सैंपलों की जांच कर रहे हैं, जबकि उन राज्यों में 30 अधिकारियों की जांच का औसत 20 से 30 सैंपल ही है। जिस पर कोर्ट ने कहा कि इसके बावजूद भी एफएसएल रिपोर्ट से फैसलों में देरी होती है। दरअसल पिछली सुनवाई पर अदालत ने अतिरिक्त मुख्य गृह सचिव से कहा था कि वे इस संबंध में शपथ पत्र पेश कर बताए कि एफएसएल व डीएनए रिपोर्ट आने में हो ही देरी को कैसे दूर किया जाए। मामले से जुडे अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने बताया कि आरोपी के खिलाफ सवाईमाधोपुर के खंडार पुलिस थाने में अगस्त 2023 में पॉक्सो का मामला दर्ज हुआ था, लेकिन एफएसएल रिपोर्ट आए बिना ही पुलिस ने आरोपी के खिलाफ चालान पेश कर दिया। वहीं अब केस की ट्रायल शुरू हो चुकी है।

सूने फ्लैट से नकदी और जेवरात चोरी

- रिटायर्ड फौजी के टोकने पर बदमाश हमला कर फरार हो गए

जयपुर। श्यानगर इलाके में बाइक पर आए तीन नकाबपोश बदमाश गुरुवार को दिन-दहाड़े दो सूने फ्लैट के ताले तोड़कर बदमाश लाखों रुपए के गहने-नकदी चोरी कर ले गए। अपार्टमेंट में रहने वाले रिटायर्ड फौजी के टोकने पर बदमाश हमला कर भाग निकले। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस बदमाशों की तलाश कर रही है।

पुलिस ने बताया कि चोरी की वारदात लक्ष्मण कॉलोनी श्याम नगर स्थित अपार्टमेंट में हुई। सुबह करीब 6:45 बजे बाइक पर आए नकाबपोश बदमाशों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया। अपार्टमेंट के फर्स्ट फ्लोर पर रहने वाले पद्माकर शर्मा और शिवानी शर्मा के फ्लैट को बदमाशों ने चोरी के लिए निशाना बनाया। दोनों ही परिवार किसी काम से फ्लैट लॉक कर बाहर गए हुए थे। दोनों सूने फ्लैट्स के लॉक तोड़कर बदमाश अंदर घुसे। महज 15 मिनट में लाखों रुपए के गहने और कैश चोरी कर ले गए। सीढ़ियों से नीचे उतरते समय अपार्टमेंट में रहने वाले रिटायर्ड फौजी पर्वत सिंह ने अजनबी लड़कों को टोका। पर्वत सिंह पर हमला कर बदमाश बाइक लेकर भाग निकले। पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से सूबत जुटाए। अपार्टमेंट के बाहर लगे सीसीटीवी फुटेज में कैद हुए बाइक सवार बदमाशों की पुलिस तलाश कर रही है। श्याम नगर इलाके में चोरी की घटनाओं में बढ़ोतरी की जानकारी मिलने पर सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा गुरुवार को थाने पहुंचे और पुलिस अधिकारियों को लगाम लगाने और जल्द खुलासा करने के लिए निर्देशित किया। विधायक ने सिविल लाइंस क्षेत्र के वार्ड 50 की लक्ष्मण कॉलोनी में चोरी की घटनाओं को लेकर श्याम नगर एसएचओ से मुलाकात की।

अंग प्रत्यारोपण प्रकरण में आरोपी की जमानत अर्जी खारिज

जयपुर, (का.सं.)। एसीबी मामलों की विशेष अदालत ने फर्जी एनओसी से अंग प्रत्यारोपण करने से जुड़े मामले में ईएचसीसी अस्पताल के कोऑर्डिनेटर अनिल कुमार जोशी की जमानत अर्जी खारिज कर दी है। अदालत ने कहा कि आरोपी पर गंभीर आरोप है। ऐसे में उसे मुकदमे के इस स्तर पर जमानत का लाभ नहीं दिया जा सकता।

जमानत अर्जी में कहा गया कि एसीबी ने गत 31 मार्च को गौरव व प्रार्थी अनिल कुमार को गिरफ्तार किया था। तब से आरोपी अभिरक्षा में चल रहा है। जमानत अर्जी में कहा गया कि उसने गौरव सिंह के साथ मिलकर कोई आपराधिक षडयंत्र नहीं किया है और ना ही फर्जी दस्तावेजों के आधार पर कोई एनओसी जारी कराई है। इसके अलावा उसने एनओसी जारी कराने की एवज में किसी को रिश्वत भी नहीं दी है। प्रार्थी ईएचसीसी अस्पताल का कर्मचारी मात्र है। वह चिकित्सकों व उच्चाधिकारियों के निर्देश पर ऑपरेशन कराने की अनुमति के लिए सक्षम कमेटी के समक्ष आवेदन प्रस्तुत करने का काम करता था। इसके अलावा उसका मरीजों से सीधा संपर्क भी नहीं होता है। अंग प्रत्यारोपण की हर फाइल संबंधित चिकित्सक की सिफारिश पर ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर के पास भेजी जाती है। जहां डोनर व मरीज की जांच होने के बाद फाइल अंग प्रत्यारोपण विभाग के मैनेजर को मिलती है और उसके बाद एनओसी के लिए कमेटी के समक्ष आवेदन किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्रार्थी का काम सिर्फ आवेदन करना और एनओसी प्राप्त करने का ही होता है। प्रकरण में उसे फंसाया गया है। इसके अलावा उसके कार्यालय से समस्त रिकॉर्ड जब्त हो चुका है। ऐसे में उसे जमानत का लाभ दिया जाए। जिसका सरकारी वकील की ओर से विरोध किया गया। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है।

दाधीच और बगड़ी को सौंपा तेलंगाना व आंध्र का जिम्मा

जयपुर। लोकसभा चुनाव के तीसरे और चौथे चरण के चुनाव प्रचार के लिए भाजपा प्रदेश पदाधिकारियों को अन्य राज्यों की कमान सौंपी गई हैं। चुनाव प्रचार के दौरान प्रदेश के नेताओं को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की जनसभा, रैलियों और रोड शो के समन्वय की जिम्मेदारी दी गई है। भाजपा प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनसभाओं की तैयारियों के लिए आंध्रप्रदेश में संचालन करना होगा। वहीं भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच को तेलंगाना में बूथ मैनेजमेंट सहित जनसभाओं की तैयारियों का जिम्मा सौंपा गया है। इन दोनों नेताओं ने राजस्थान चुनाव के दौरान पीएम मोदी और गृहमंत्री सहित केंद्रीय नेताओं की सभाओं की तैयारियों में अहम भूमिका निभाई थी।

प्रदेश में लोकसभा चुनाव के दोनों चरणों के मतदान के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच और प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगडी के चुनाव प्रबंधन की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की थी।

लोकसभा के तीसरे चरण के चुनाव प्रचार के लिए पूर्व विधायक रामलाल शर्मा, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नाहर सिंह जोधा, प्रदेश मंत्री मिथलेश गौतम एवं प्रदेश प्रवक्ता नरेंद्र कटारा आज जयपुर से उड़ीसा के लिए रवाना हो गये। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नाहर सिंह जोधा, ने बताया भाजपा पूर्व विधायक रामलाल शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष नाहर सिंह जोधा, प्रदेश मंत्री मिथलेश गौतम एवं प्रदेश प्रवक्ता नरेंद्र कटारा सांगानेर एयरपोर्ट से उड़ीसा के लिए रवाना हो गये।

2 साल की बच्ची को जीप ने कुचला

जयपुर। दौलतपुरा थाना इलाके में घर के बाहर खेल रही दो साल की बच्ची को जीप ने टक्कर मार दी। इससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। हिट एण्ड रन मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जीप और उसके ड्राइवर की तलाश शुरू कर दी है।

भाजपा युवा मोर्चा का "एक परिंडा मेरा भी" अभियान आज से

जयपुर। भाजपा युवा मोर्चा की ओर से गर्मी के मौसम में पशु-पक्षियों के पानी की व्यवस्था के लिए "एक परिंडा मेरा भी" अभियान का आगाज 3 मई से किया जाएगा। भाजपा युवा मोर्चा की ओर से अभियान के तहत प्रदेश भर में 1 लाख परिंडे और 1 हजार पानी की टंकी लगाई जाएगी। पशु-पक्षियों के लिए परिंडे लगाने के साथ ही भाजपा कार्यकर्ताओं की ओर से इनमें पानी डालने तक की जिम्मेदारी तय की जाएगी।

चेची ने बताया कि ग्रीष्म काल प्रारंभ होने से गर्मी में बेजुबान पक्षियों के लिए पानी पीने हेतु युवा मोर्चा के कार्यकर्ता संपूर्ण राजस्थान में 1 लाख से अधिक परिंडे लगाएंगे। 3 मई को राजधानी जयपुर से पक्षियों के लिए परिंडे लगाकर "एक परिंडा मेरा भी" अभियान की शुरूआत की जाएगी। 17 मई तक चलने वाले इस अभियान में गैर सामाजिक संस्थाओं (एनजीओ) सहित अन्य सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक स्थलों की समितियों, इनफ्लुएंसरो के व्यक्तियों को जोड़ कर उनको भी जिम्मेदारी दी जाएगी।

दोषी विधानसभा कर्मी को किया निलम्बित

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने विधानसभा जैसी उच्च गरिमामय संस्था के प्रतिकूल आचरण विहिन कृत्य करने पर प्रारम्भिक जांच में दोषी पाये गये, विधानसभा सचिवालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नितिन शर्मा को निलम्बित किया है। उल्लेखनीय है कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी शर्मा पर विधानसभा व अन्य भर्ती एजेन्सियों में नौकरी लगाने के नाम से रेखा शर्मा, अमित कुमार मीणा व कई अन्य व्यक्तियों से लाखों रुपये की राशि बेईमानी पूर्ण आशय से हड़पने के मामले में पुलिस थाना सांगानेर तथा कोटपूतली में फौजदारी प्रकरण का अन्वेषण लम्बित होने के तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए निलम्बित किया गया है।

देवनानी ने इस मामले को गम्भीरता से लिया। देवनानी की जानकारी में आने के बाद विधानसभा ने इस मामले की प्रारम्भिक जांच कराई।

सहकारी सोसायटी में 11 बजे सुनवाई

जयपुर, (का.सं.)। सहकारिता विभाग द्वारा सहकारी सोसायटी में अपील निगरानी के प्रकरणों की सुनवाई सुबह 11 बजे से होगी। राज्य सरकार द्वारा आदेश जारी कर राजस्थान सहकारी सोसायटी अधिनियम-2001 की धारा 104 एवं 107 के तहत दर्ज अपील व निगरानी के प्रकरणों की सुनवाई का समय 30 जून तक प्रात: 11 बजे कर दिया गया है।

कुख्यात नकबजन को 2 हजार कि.मी. तक पीछा कर दबोचा

मुहाना पुलिस ने कुख्यात नकबजन रामखिलाडी को गिरफ्तार किया।

जयपुर (कासं)। मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कुख्यात नकबजन रामखिलाडी मीणा को दो हजार किलोमीटर पीछा कर पकड़ा है। जानकारी में सामने आया है कि पुलिस ने उसकी पत्नी को भी हिरासत में लिया है। पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने पचास से अधिक नकबजनी की वारदातों को खुलासा किया है। पुलिस आरोपी से चुराए गए माल की बरामदगी के प्रयास कर रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) दिगंत आनंद ने बताया कि मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कुख्यात नकबजन रामखिलाडी मीणा निवासी नैनवा जिला बूंदी को दो हजार किलोमीटर तक पीछा करते हुए पकडा है।

डिमांड साइड मैनेजमेंट से बेहतर विद्युत आपूर्ति संभव

जयपुर, (का.सं.)। डिमांड साइड मैनेजमेंट प्रोग्राम के अंतर्गत राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की ओर से गुरुवार को जयपुर डिस्कॉम के अभियंताओं के क्षमता संवर्धन के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जयपुर डिस्कॉम और आरआरईसीएल में कार्यरत अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम के निदेशक तकनीकी सुनीत माथुर द्वारा स्वागत संबोधन के साथ हुई। आरआरईसीएल के प्रबंध निदेशक नथमल डिडेल ने बताया कि डिस्कॉम के माध्यम से ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी की ओर से यह पहल की गई है। इसके माध्यम से बेहतर विद्युत आपूर्ति संभव है। उन्होंने ऊर्जा की कुशलता के महत्व तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में ऊर्जा संरक्षण के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया। उन्होंने डिमांड साइड मैनेजमेंट के तरीकों और उसके वित्तीय लाभ पर चर्चा की ऊर्जा की बचत को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

'इथियोपिया में 600 दिव्यांगों को जयपुर फुट उपलब्ध कराएंगे'

जयपुर, (का.सं.)। अफ्रीकी देश इथियोपिया के प्रमुख शहर समेरा में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के सहयासेग से इथियोपियाई विकलांगों के पुनर्वास के लिये जयपुर फुट का शिविर आरंभ हुआ। इस शिविर में 600 द्विव्यांगों को नि:शुल्क कृत्रिम पैर, जयपुर फुट उपलब्ध कराए जाएंगे।

भारत सरकार और भगवान महावीरा विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के आयोजन में विदेश मंत्रालय के "इंण्याज फॉर ह्यूमैनिटीज" कार्यक्रम के अन्तर्गत यह 50 दिवसीय शिविर आयोजित किया गया हैं। इस शिविर के लिये बी.एम.वी.एस.एस.के कार्यकारी अध्यक्ष और विदेश मामलों के निदेशक के सतीश मेहता के नेतृत्व में

इथियोपिया एक दल गया हुआ है।

समेरा विश्वविद्यालय अस्पताल में इस विशेष शिविर के आयोजन के उद्घाटन समारोह में हमें इथियोपिया भारत के राजदूत भारत के राजदूत अनिलराय ने कहा कि इथियोपिया और भारत के बीच मित्रता को यह शिविर और मजबूत बनाएगा। राय ने कहा कि पूर्व में संस्था ने वर्ष 2019 में इथियोपिया की राजधानी अदिसअबाबा में इसी प्रकार के शिविर का आयोजन किया था, जिसमें 638 विकलांगों को लाभांवित किया गया।

दलनायक सतीश मेहता ने बताया कि पूर्व में 2016 में टिगरे क्षेत्र के मैकेल शहर में आयोजित शिविर में 400 लाभार्थी रहे। वर्ष 2017 में हरमाया विश्वविद्यालय में आयोजित शिविर में 377 विकलांगों को कृत्रिम पैर जयपुर फुट लगाया गया। इन शिविरों के आयोजन में भारत की एक कंपनी जे.एम.सी.ने सहयोग दिया। अब तक इथियोपिया में 1258 विकलांगों को लाभांवित किया जा चुका है।

उद्घाटन समारोह में हमे राजदूत अनिलराय ने कहा कि "इण्डिया फॉर ह्यूमैनिटीज" कार्यक्रम जो विदेश मंत्रालय ने महात्मा गांधी की 150वीं जयंजी के अवसर पर आरंभ किया गया था, बहुत सफल सिद्ध हो रहा है।

इस अवसर पर मेरा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डी.आर.मुहम्मदउसमान, इथियोपिया के महिला और समाज कल्याण विभाग के प्रतिनिधि एम.आर.असालीफीवअमेदीन आदि ने जयपुर फुट की निर्माण विधि का अवलोकन किया।

आइस क्यूब बना रही दो फैक्ट्रियां सीज

जयपुर। गर्मियों के मौसम में आइसक्रीम एवं अन्य पेय पदार्थ में मिलावट को रोकने के लिए शुरू किए गए विशेष अभियान के अंतर्गत खाद्य सुरक्षा और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर द्वितीय के निर्देशन में गुरुवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के दल ने कलवाड़ा रोड महापुरा जयपुर स्थित मैसर्स बालाजी आइस क्यूब फैक्ट्री पर कार्रवाई की गई। यह फैक्ट्री बिना फूड लाइसेंस के चल रही थी। फैक्ट्री का कोई मेडिकल सर्टिफिकेट नहीं था और ना ही पानी की जांच रिपोर्ट। इसके अलावा यहाँ हाइजीन और सेनिटेशन बहुत ही गंदा पाया गया। शिवानंदपुरी स्थित इस आइस क्यूब बनाने की फैक्ट्री राजू प्रजापत पुत्र सुरजा राम प्रजापत के नाम पर है।

सार-समाचार

यज्ञ के साथ नवीन सत्र की शुरूआत

धोरीमना, (निसं)। विद्या भारती विद्यालय आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक धोरीमना में गुरूवार को सुबह 7 बजे से सरस्वती मां यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के साथ नवीन सत्र-2024-25 की शुरुआत हो गई। विद्या मन्दिर के प्रचार प्रमुख आसुराम विश्नोई ने बताया कि आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय धोरीमना एकमात्र ऐसा विद्यालय है। जहां पर संगीत शिक्षा ,योग शिक्षा, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, खेलकूद ,वैदिक गणित ,स्पोकन अंग्रेजी, संस्कृत समभाषण, क्रिया आधारित शिक्षण, नृत्य कला, चित्रकला, ग्रामीण खेलकूद (परंपरागत खेल) जो खेल पुराने समय में खेले जाते थे। उन खेलों की शिक्षा, लोकगीतों की प्रतियोगिताएं, घर पर भोजन मंत्र, स्वदेशी पालन, देव दर्शन, उचित दिनचर्या, बडों को प्रणाम आदि बिंदुओं पर विशेष ध्यान रखने के लिए सतत् गृह संपर्क, अभिभावक गोष्ठी, मातृ सम्मेलन ,अभिभावक सम्मेलन, मासिक परख, साप्ताहिक परख, आदि के द्वारा भावी पीढी का निर्माण करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। यह विद्यालय एक आदर्श बालक का निर्माण करता है इस निमित्त आज सरस्वती मां यज्ञ के साथ वैदिक परंपराओं के साथ विधिवत यज्ञ के साथ नवीन सत्र की शुरूआत की गई। इस अवसर पर मुख्य यजमान प्रधानाचार्य-नारायणदास, आचार्य, दीदीजी,भैया-बहिनें व अभिभावक उपस्थित रहे। यज्ञ का आयोजन यज्ञाचार्य कालुराम ब्राह्मण के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन सरस्वती व जगदीश्वर आरती व प्रसादी वितरण के साथ हुआ।

स्मैक के साथ एक जना गिरफ्तार

सांचौर, (निसं)। सांचोर पुलिस ने एनडीपीएस प्रकरण में एक आरोपी को गिरफतार कर कब्जे से 2 ग्राम अवैध विनिर्मित मादक पदार्थ स्मैक (मार्फिन) जब्त करने में सफलता हासिल की। पुलिस के अनुसार सांचोर पुलिस अधीक्षक हरीशंकर के निर्देशानुसार पुलिस मुख्यालय द्वारा मादक पदार्थों की रोकथाम के लिए चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत एएसपी सांचोर सुरेश कुमार मेहरानियां एवं डिप्टी जेठूसिह के निकटतम सुपरविजन में चितलवाना थानाधिकारी इन्द्राजसिह के नेतृत्व में गठित टीम दौराने हल्का गश्त सरहद हनवंतपुरा दूदवा मे बिना नम्बरी मोटरसाईकिल हिरो कंपनी की एचएफ डिलक्स के चालक आरोपी लाडूराम पुत्र भागीरथराम जाति विश्नोइ निवासी दुदवा पुलिस थाना चितलवाना जिला साचौर के कब्जे से अवैध विनिर्मित मादक पदार्थ स्मैक (मार्फिन) 2 ग्राम व अवैध मादक पदार्थ परिवहन में प्रयुक्त बिना नम्बरी मोटरसाईकिल हिरो कंपनी की एचएफ डिलक्स को जब्त कर आरोपी लाडूराम के विरूद्ध जुर्म एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा पंजीबद्ध किया जाकर आरोपी से प्रकरण हाजा मे खरीद फरोख्त के सम्बंध में अग्रिम अनुसंधान जारी है।

पर्वों के लिए कार्यपालक मजिस्ट्रेट नियुक्त

जालोर, (काासं)। जिला मजिस्ट्रेट पूजा पार्थ ने 10 मई को परशुराम जयन्ती व अक्षय तृतीया (आखा तीज) तथा 23 मई को पीपल पूर्णिमा पर्व पर कानून व्यवस्था एवं लोक शान्ति बनाये रखने के लिए उपखण्ड मजिस्ट्रेटों को कार्यपालक एवं तहसीलदारों को सहायक कार्यपालक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया है। सम्पूर्ण जिले में कानून व्यवस्था के प्रभारी अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट जालोर होंगे। आदेशानुसार जिले के जालोर, सायला, आहोर, भीनमाल व जसवंतपुरा उपखसण्ड के लिए संबंधित उपखंड मजिस्ट्रेट कार्यपालक एवं संबंधित तहसीलदार सहायक कार्यपालक मजिस्ट्रेट होंगे। उक्त मजिस्ट्रेट अपने सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाये रखेंगे एवं कोई भी कार्यपालक व सहायक कार्यपालक मजिस्ट्रेट उक्त पर्वों पर अपना कार्यक्षेत्र नहीं छोड़ेंगे तथा अवकाश पर नहीं जायेंगे। वे अपने-अपने क्षेत्र में कानून व्यवस्था आदि के बारे में पुलिस अधिकारियों से विचार-विमर्श कर कानून व्यवस्था एवं लोक-शांति संबंधी सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित करेंगें। कानून व्यवस्था के प्रभारी अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट जालोर होंगे।

907 किलो अवैध डोडा पोस्त बरामद

जालोर, (कासं)। जिला पुलिस अधीक्षक जालोर ज्ञानचन्द्र यादव के निर्देशानुसार जिले में अवैध मादक पदार्थो की रोकथाम एवं धरपकड व बरामदगी के लिए चलाये जा रहे अभियान के तहत एएसपी जालोर रामेश्वरलाल व डिप्टी आहोर गौरव अमरावत के सुपरविजन में थानाधिकारी नोसरा गुमानसिंह मय जेठाराम थानाप्रभारी पुलिस थाना भाद्राजून मय जाब्ता एवं प्रभारी डीएसटी टीम मय जाब्ता द्वारा गुरूवार को सरहद भोरडा में 907 किलो अवैध डोडा पोस्त बरामद करने में सफलता हासिल की। पुलिस के अनुसार भोरडा में एक बिना नम्बरी इसूजी गाडी में 45 प्लास्टिक के कटटो में भरा हुआ कुल 907 किलोग्राम डोडापोस्त जब्त कर बिना नम्बरी वाहन इसूजी जब्त किया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर अग्रीम अनुसंधान रामप्रतापसिंह थानाधिकारी पुलिस थाना आहोर द्वारा किया जा रहा है।

सांचोर में धीरेन्द्र शास्त्री की कथा 10 से

सांचोर, (निसं)। सांचोर जिला मुख्यालय के हवाई पटी पर बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की कथा का आयोजन 10 से 14 - मई तक हवाई पटी मैदान सांचोर में होगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार आयोजन कर्ता सुरेश विश्नोई ने बताया कि हवाई पटी मैदान पर बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की पांच दिवसीय हनुमत कथा, दिव्य दरबार, लक्ष्मीनारायण महायज्ञ एवं संत समागम की तैयारिया जोरो से चल रही है। विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए कमेटिया बनाकर जिम्मेदारी सौंपी गई है। हनुमत कथा, दिव्य दरबार को लेकर विशाल पांडाल निर्माण, श्रद्धालुओ के लिए ठहरने की व्यवस्था, पार्किंग, पयेजल, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था की जा रही है।

प्रतापदान प्रकरण की निष्पक्ष जांच मांगी

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा में प्रतापदान प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर उचित कानूनी कार्यवाही करने की मांग को लेकर क्षेत्र के ग्रामीणों द्वारा मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ज्ञापन में बताया कि सांचौर जिला हाल बालोतरा निवासी प्रतापदान चारण पर असामाजिक तत्वों ने धारदार हथियार से हमला कर एवं गला काटकर घायल कर दिया। जिसकी बालोतरा पुलिस थाना में रिपोर्ट पेश की थी। जिसमें पुलिस लीपापोती कर रही है और आरोपियों की गिरफ्तारी नही हो पाई है। ज्ञापन में निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर आरोपियों को सख्त सजा दिलाने की मांग की है।

सिरोडी में गंगा प्रसादी कार्यक्रम हुआ

रेवदर, (निसं)। सिरोडी में देवासी समाज के ईडू परिवार की ओर से आयोजित गंगा प्रसादी कार्यक्रम में समाज की वेशभूषा में सैकडों की संख्या में समाज के लोग पहुंचे। कार्यक्रम में भजन कीर्तन, महाप्रसादी व कलश यात्रा सम्पन्न हुई। कलश यात्रा में दर्जनों कलशों के साथ कलश यात्रा हीदाराम ईडू के घर से विभिन्न चौराहे से होकर गांव के बावडी तक पहुंची। इस दौरान मां गंगे के जयकारों व ढोल बाजे के साथ लोग नाचते गाते नजर आये। इस दौरान तीर्थगिरि महाराज, सरपंच प्रतिनिधि हिदाराम देवासी, उप सरपंच उकाराम देवासी उडवारिया, लकमाराम देवासी,उनाराम देवासी सहित सैकडों समाजसेवी उपस्थित रहे।

कक्षा कक्ष निर्माण का आश्वासन दिया

सायला, (निसं)। जालोर के पास पंचायत समिति क्षेत्र सायला के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा कक्षों के निर्माण के लिए जनप्रतिनिधियों की मांग पर सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने इसी बजट सत्र में समसा के तहत निर्माण के लिए आश्वासन दिया है। क्षेत्र के भाजपा मंडल अध्यक्षों, सरपंचों तथा जनप्रतिनिधियों ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा कक्षों की कमी को लेकर अवगत करवाया था। जिस पर मुख्य सचेतक गर्ग ने कहा कि जालोर विधानसभा क्षेत्र की सरकारी विद्यालयों में कक्षा कक्षों की आवश्यकता है। जिन्हे इसी बजट सत्र में समसा के तहत राज्य सरकार से स्वीकृति दिलवाने का आश्वासन दिया।

फर्जी आई.डी. से वीडियो फोटो अपलोड

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर शहर के कुड़ी भगतासनी सेक्टर 2 में रहने वाली एक युवती ने किसी बदमाश ने फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर वहां पर फोटो वीडियो अपलोड कर डाले। युवती को पता लगा तब वह पुलिस के पास पहुंची। इस बारे में आईटी एक्ट में केस दर्ज किया गया है। कुड़ी भगतासनी थाने में दी रिपोर्ट में कुड़ी हाऊसिंग बोर्ड के दो सेक्टर में रहने वाली एक युवती ने बताया कि किसी बदमाश ने उसके नाम से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर इंस्टाग्राम पर उसकी फर्जी आईडी बनाकर उस पर उसके वीडियो और फोटो अपलोड करके बदनाम कर रहा है। पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू की है।

शिव विधायक रविन्द्र भाटी को कड़ी सुरक्षा देने की मांग

सायला, (निसं)। लोकसभा क्षेत्र बाड़मेर जैसलमेर बालोतरा से निर्दलीय उम्मीदवार व शिव विधायक रविन्द्रसिंह भाटी को कड़ी सुरक्षा देने की मांग को लेकर गुरूवार को सायला क्षेत्र के लोगों द्वारा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम उपखण्ड अधिकारी सायला को ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में बताया कि विधायक रविन्द्रसिंह भाटी ने पिछले विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय पार्टियों को शिकस्त देकर जीत हासिल की थी, जिससे राजनीतिक लोगो मे उनके प्रति द्वेष व ईर्ष्या का भाव पैदा हो गया। हाल ही सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव 2024 में भी रविन्द्रसिंह भाटी ने निर्दलीय चुनाव लडा था। ऐसे में रविन्द्रसिंह भाटी के बढते कद से कुछ राजनेताओं को ईर्ष्या होना स्वाभाविक हैं। जिसके चलते कुछ ईर्ष्यालू राजनेता अपने गिरोह के असामाजिक तत्वों को आगे कर सोशल मीडिया पर रविन्द्रसिंह भाटी को जान से मारने की धमकियां दे रहे हैं। लगातार मिल रही धमकियों के कारण भाटी के लाखों समर्थक व शुभचिन्तक चिन्तित हैं। वही भाटी को मिल रही धमकियों से जनमानस में आक्रोश हैं। साथ ही उनकी सुरक्षा का विषय अत्यन्त ही गंभीर होता जा रहा है। ज्ञापन में क्षेत्र के लोगो ने रविन्द्रसिंह भाटी को कडी सुरक्षा देने की मांग की है।

इस दौरान परबतसिंह पोषाना, सायला पूर्व उपसरपंच विक्रमसिंह दहिया, भवानीसिंह देता, मनोहरसिंह सोढा, भंवरसिंह मोकनी, तनसिंह सोढा, दलपतसिंह, शैतानसिंह, ओबसिंह, समुन्द्रसिंह देता, चन्द्रवीरसिंह, नरेंद्रसिंह, हिम्मतसिंह, विक्रमसिंह, इंद्रसिंह, रामसिंह थलवाड, समंदरसिंह, नारायणसिंह, भरतसिंह चौहान, भूपतसिंह, प्रेमसिंह, रणजीत राठौड, नारायण देवासी, सोहन दर्जी, सुजाराम देवासी, उम्मेद सेन, मदन सेन सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

सायला क्षेत्र के लोगों ने एस.डी.एम. को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। फोटो-राष्ट्रदूत

रक्तदान शिविर आयोजित

राजकीय चिकित्सालय जालोर के ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। राजस्थान मेडिकल एंड सेल्स रिप्रजेंटेटिव यूनियन जालोर व यूथ फॉर नेशन संस्था जालोर के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय चिकित्सालय जालोर के ब्लड बैंक में स्वेछिच्क रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

यूथ फॉर नेशन संस्थान के पी.बी. सैन ने बताया कि यूथ फॉर नेशन सस्था हर बार बडी संख्या में रक्तदान कर समाज की मदद करते हैं। उन्होंने बताया कि रक्तदान एक महादान है। सभी लोगों को रक्तदान करना चाहिए। यह ऐसा दान है कि जिससे दान करने वालों को भी नहीं मालूम होता है कि उसके अमूल्य रक्त से किसी को जीवन दान मिल रहा है। ऐसे में सही मायने यह दान महादान कहलाता है। रक्तदान करने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है, जल्दी उसके शरीर में नया ब्लड बनना शुरू हो जाता है। इसलिए सभी लोगों को रक्तदान करना चाहिए। रक्त दान से किसी भी व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है।

रक्त दान शिविर में रक्तविर मुकेश कुमार, अजीतसिंह, तरुणा दवे, रविन्द्र सिंह राव, महेन्द्र माली,भेरूसिंह राव, ललितपुरी, प्रवीण माली, ओमसिंह, पी. बी. सैन, तरुणा दवे, नितेश भटनागर, डॉ. पूनम टांक प्रमुख चिकित्सा अधिकारी, सीनियर नर्सिग ऑफिसर शहजाद खान , ब्लड बैंक से हडमताराम गर्ग, सांवलाराम, भरत कुमार, राजुभाई, सुरेश कुमार सहित कई लोग मौजूद थे।

सरेचा गांव में चोरी की घटना

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर ग्रामीण के लूणी थाना क्षेत्र के सरेचा गांव में स्थित एक मकान में चोरी की वारदात सामने आई है।

चोर घर में कमरे के अंदर रखे बक्से के ताले तोड़कर सोने चांदी के जेवरात और नकद रुपए चुरा कर ले गए। घटना के समय मकान में रहने वाले लोग आंगन में सो रहे थे। गहरी नींद का फायदा उठाकर चोरों ने वारदात को अंजाम दिया। सुबह उठने पर मकान में रहने वाले लोगों को इसका पता चला और थाने पहुंचकर रिपोर्ट दी। चोर घर से नगद रुपए पर चुरा कर ले गए। पुलिस अब अज्ञात चोरों की तलाश में जुटी है।

थाने में दी रिपोर्ट में भीमाराम पटेल निवासी ठााम सरेचा ने बताया कि 1 मई की रात को अपने परिवार सहित घर के आंगन में सो रहे थे। देर रात अज्ञात चोर घर में घुसे और घर के कमरे और उसके अंदर रखे बक्से के ताले तोड़कर सोने और चांदी के जेवर और नगद रुपए चुरा कर ले गए। चोर 20 तोला से अधिक वजनी सोना और चांदी के जेवरात चुरा कर ले गए। जिसमें चार तोला वजनी रखड़ी, गले की चेन, कंठी, अंगूठी सहित चांदी के कंदोरा और पायल भी शामिल है।

हत्या के प्रयास मामले में पकड़ा

जोधपुर, (कासं)। मंगलवार की रात में एक बजरी डंपर चालक ने जमकर उत्पात मचाया। गाड़ी को इतनी तेजी से भगाया कि सामने आए वाहनों को अपनी चपेट लेने लगा था। कार चालक टक्कर से बुरी तरह जख्मी हो गया। फिर कार चालक ने बासनी थाने में हत्या प्रयास एवं मानव जीवन संकट में डालने का केस दर्ज करवाया।

बासनी पुलिस ने बताया कि मामले में मरूधरा इंडस्ट्रीज एरिया निवासी जसवंत भाटी पुत्र रावत सिंह की तरफ से मामला दर्ज कराया कि वह मंगलवार की रात में रॉटरी बालाजी से होते हुए बासनी की तरफ जा रहा था। तब न्यू पावर हाउस रोड मोड़ पर एक डंपर का चालक दनदनाते हुए आया। डंपर में बजरी भरी हुई थी। इस डंपर के पीछे से पुलिस की गाड़ी भी लगी हुई थी। डंपर चालक ने उसके कार को जोरदार टक्कर मारी जिससे वह जख्मी हो गया। वहीं डंपर का चालक बीच रास्ते में बजरी को खाली करता गया।

थानाधिकारी शफीक मोहम्मद ने बताया कि जसवंत भाटी की रिपोर्ट पर हत्या प्रयास, मानव जीवन संकट में डालने का प्रकरण दर्ज कर लिया गया। पुलिस ने आरोपी डंपर चालक फिटकासनी नाडी वाली ढाणी निवासी प्रेम बाबल पुत्र ओमाराम विश्रोई को गिरफ्तार कर लिया। डंपर को पहले ही जब्त कर लिया गया था।

संतुबाई हत्या मामले में सरगरा समाज ने कारवाई की मांग की

जालोर में सरगरा समाज के लोग संतुबाई हत्या मामले को लेकर ज्ञापन देने कलैक्ट्रेट पहुंचे। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। सरगरा समाज जालोर ने संतुबाई मर्डर केस में आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर गुरूवार को जिला कलैक्टर जालोर पूजा पार्थ को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौपा।

गुरूवार को समाज के लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर ज्ञापन सौपकर बताया कि 8 अप्रैल 2024 को सिरोही के शिवंगज के खन्दारा गांव निवासी संतुबाई पत्नी पोमजी महाराज सरगरा की अज्ञात लोगो ने घर में घुस कर गला दबा कर हत्या कर दी। आरोपियो ने महिला की हत्या करने के बाद उसके पहने हुए ढाई तोले सोने व एक किलो चांदी कसे गहने लुट कर ले गये। ज्ञापन सौंपकर आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की गई है। शिवगंज थाने में हत्या के मामले की रिपोर्ट दर्ज करवाई गई। घटना को 23 दिन बीत जाने के बाद भी अभी तक पुलिस ने किसी आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया है। इससे नाराज होकर जालोर सरगरा समाज ने अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही कर गिरफ्तारी की मांग को लेकर ज्ञापन सौपा।

इस दौरान सरगरा समाज कसे अध्यक्ष्ज्ञ नवीन कुमार भीकाराम आकोली, मालाराम, राणाराम, नारायणलाल,भरत कुमार, मदन सोलंकी, कपुराराम, जितेन्द्र, निर्भयराम, प्रकाश, जोजाराम, चन्दन कुमार, डायाराम, कैलाश व हरीराम सहित सरगरा समाज के लोग काफी सख्या में मौजूद रहे।

पार्टस की दुकान में आग लगाने के मामले में ठेकेदार व श्रमिक गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। सरदारपुरा पुलिस थाना क्षेत्र 12वीं रोड पर बुधवार की रात सवा एक बजे स्पेयर्स पार्ट्स की दुकान में लगी आग किसी सोची समझी साजिश का नतीजा निकली। दुकान में आग लगाने वाले एक ठेकेदार और उसके साथी श्रमिक को पुलिस ने अब गिरफ्तार किया है। दुकान मालिक और ठेकेदार के बीच में मशीनरी आइटम को लेकर विवाद हुआ था। दुकानदार ने मशीन को रिप्लैस करने से मना कर दिया था। पुलिस अब अभियुक्तों से पूछताछ में जुटी है।

थानाधिकारी दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि मंगलवार- बुधवार की रात सवा एक बजे अरोड़ा नमकीन के पास 12वीं रोड पर राजस्थान मशीनरी में आग लगी थी। बाद में सूचना पर फायर ब्रिगेड और पुलिस वहां पहुंची थी। आग लगने का प्रथम दृष्टया मामला संदिज्ध लगा था। दुकानदार नागौरी गेट स्थित मियों की मस्जिद के पास रहने वाले मोहम्मद असलम पुत्र अब्दुल वहीद ने अज्ञात लोगों द्वारा आग लगाने की रिपोर्ट दी। जिस पर एसआई दीपलाल के साथ पुलिस की टीम का गठन किया गया।

थानाधिकारी दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि प्रकरण का खुलासा कुछ घंटों में ही करते हुए दो आरोपियों पीपाड़शहर के भुनाणा हाल शक्ति नगर गली नंबर 4, पावटा सी रोड निवासी नरपत पुत्र गोविंद जाट एवं उसके साथी श्रमिक पाटण बिजनौर भीलवाड़ा हाल रातानाडा गणेश नगर में किराए पर रहने वाले पृथ्वीराज प्रजापत को गिरफ्तार किया गया है।

आग लगाने का यह रहा कारण

थानाधिकारी शेखावत ने बताया कि आरोपी नरपत जाट ने कुछ दिनों पहले परिवादी दुकानदार मोहम्मद असलम से किसी मशीन की खरीद फरोख्त की थी। मशीन खराब निकलने पर वे उसे वापिस देन गया था। मगर दुकानदार ने मशीन वापिस लेने से मना कर दिया। इस पर वे उसे सबक सिखाने के इरादे से अपने साथी श्रमिक पृथ्वीराज को साथ लेकर वारदात को अंजाम दिया।

बाइक पर आए, पेट्रोल डाला

घटना को अंजाम देने के लिए दोनों एक बाइक पर आए थे। नरपत दूर खड़ा रहा और साथी श्रमिक पृथ्वीराज ने दुकान में पेट्रोल डालकर आग लगा दी। आस पास के सीसीटीवी फुटेज भी जांचे गए। अभियुक्तों से पूछताछ जारी है।

पांच लाख का हुआ नुकसान

परिवादी ने रिपोर्ट में बताया कि दुकान में आग लगाने से उसे पांच लाख का नुकसान हो गया। दुकान की मशीनरी जलकर नष्ट हो गई।

डेयरी एवं आइसक्रीम की दुकान में शॉर्ट सर्किट से आग लगी

बाप, (निसं)। बाप कस्बे के मुख्य बाजार के पास बीती देर रात अचानक लगी आग से एक डेयरी एवं आइसक्रीम की दुकान जलकर राख हो गई। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। आग की सूचना पर मौके पर पहुंचे पीड़ित सहित लोग मौके पर पहुंचे, लेकिन संसाधनो के अभाव में आंखो के सामने जलकर सब कुछ राख हो गया। रात हुई आगजनी की घटना से एक बार फिर बाप उपखंड मुख्यालय पर दमकल की कमी महसूस हुई।

जानकारी के अनुसार मुख्य बाजार के पास जयपुरिया मार्केट में सवाईलाल कुमावत की डेयरी एंड आईसक्रीम की दुकान है। सवाईलाल रात करीब 10 बजे दुकान मंगल पर घर चला गया। रात करीब साढे बारह बजे शॉट सर्किट की वजह से दुकान में आग लग गई। सवाईलाल कुमावत से कुछ दूरी पर टेलर्स की दुकान में देर रात काम कर रहे रूपेश नायक को धमाके की आवाज सुनाई दी। तब उसने बाहर आकर देखा तो डेयरी की दुकान के बंद शटर के नीचे से धुंआ व आग की लपटे उठ रही थी। संभवत: धमका शायद फ्रिज का कंप्रेशर फटने से हुआ होगा। रूपेश ने अपने पडौसी हीरालाल पालीवाल को कॉल कर घटनाक्रम बताया। हीरालाल पालीवाल ने बताया कि उन्होने तुंरत मुकेश कुलधर को पानी का टैंकर लेकर बाजार पहुंचने को कहा। वह भी चंद्र प्रकाश पालीवाल, हुकमीचंद पालीवाल व पवन के साथ मौके पर पहुंच गया। आग की सूचना पर सवाईलाल सहित राजेंद्र कुमावत, सीताराम कुमावत, लूणकरण शर्मा, तनसुख खत्री, हीरालाल तंवर सहित काफी संख्या में युवा पहुंच गए। बिजली बंद होने के बाद बड़ी मुश्किल से शटर तोडा, लेकिन विकराल आग के आगे सभी बेबस थे।

मुकेश कुलधर भी कुछ ही देर में पानी से भरा टैंकर लेकर पहुंचा, लेकिन कुछ तकनीकी खराबी के चलते 10-15 मिनट पानी की मोटर नहीं चल पाई। इस बीच आग विकराल हो गई। करीब सवा घंटे से नोख व भ?ला से दमकले भी पहुंच गई थी, लेकिन तब तक काफी देर हो गई थी। आग से दुकान में रखे 11 फ्रीज इसमें 8 डी फ्रीज शामिल है समूचे जल गये। इसके अलावा आईसक्रीम, कॉल्ड ड्रिंक सहित सारा सामान जलकर राख हो गया। सुबह तहसीलदार शिव प्रसाद शर्मा भी मौके पर पहुंचे तथा मौका देखा। पटवारी अबदेश कुमार की रिपोर्ट के अनुसार पीड़ित को 15 लाख से ज्यादा का नुकसान हुआ है।

युवाओ ने रोष जताते हुए कहा कि बाप उपखंड मुख्यालय पर दमकल की व्यवस्था नही है। इस पर न प्रशासन न ही जन प्रतिनिधि ध्यान दे रहे है। अगर बाप में दमकल होती तो शायद इतना नुकसान नहीं होता। कस्बे में पहले भी हुई आगजनी की घटनाओं से लाखो का नुकसान हो चुका है।

सार-समाचार

हिन्दू सेवा मंडल ने स्थापना दिवस मनाया

जोधपुर, (कासं)। 99 वर्षो से मानव मात्र की सेवा में समर्पित हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर का 100 वां स्थापना दिवस समारोह बुधवार की रात में घण्टाघर प्रागण में रंगारंग भक्ति संध्या के साथ संपन्न हो गया। हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर के प्रधानमंत्री विष्णुचन्द्र प्रजापत ने बताया कि हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर की स्थापना 1925 को हुई थी तब से लेकर आज दिन तक 99 वर्षो से मानव मात्र की सेवा में सर्पित रहते हुए सेवा कार्य करता आ रहा है। आज घण्टाघर के प्रागण में हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर का 100 वां स्थापना दिवस समारोह बड़ा धूमधाम के साथ मनाया गया। भजन गायिका गीता मेवाडा द्वारा गणपति महाराज को समर्पित भजन प्रस्तुत किया गया। रामकिशोर दाधीच ने बालाजी को समर्पित भजन प्रस्तुत किया। महेन्द्रसिंह पंवार एवं गीता मेवाडा ने सयुक्त श्री कृष्ण आधारित भजन पर श्याम जोधपुर एण्ड पार्टी द्वारा मनमोहक सुन्दर राधा कृष्ण की झाकी प्रस्तुत की। जुगल परिहार ने खटुश्याम पर आधारित भजन की प्रस्तुति दी। जगदीश प्रजापत द्वारा हास्य एवं भजन से श्रोताओं का मंत्रमुग्ध कर दिया। वही दीपक त्रिपुरारी एण्ड पाटी द्वारा भगवान शंकर पर आधारित नृत्य नाटिका के रूप में भस्म व त्रिपुरारी नृत्य कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। कार्यक्रम का संचालन यतिन्द्र प्रजापत, नरपत सिंह, द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर महेश जाजडा, विष्णुचन्द्र प्रजापत, कैलाश जाजू, भैरूप्रकाश दाधीच, राकेश गोड, मदन सैन, ताराचंद शर्मा, प्रेमराज खिवसरा, नरेन्द्र गहलोत हनवंतराज गाछा द्वारा अतिथियों को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

मादक पदार्थ के साथ तीन जने गिरफ्तार

जालोर, (कासं)। जालोर जिला पुलिस अधीक्षक ज्ञानचन्द्र यादव के निर्देशानुसार जिले में अवैध मादक पदार्थ की तस्करी रोकथाम एवं तस्करों की धरपक्कड के लिए चलाये जा रहे अभियान के तहत एएसपी रामेश्वरलाल एवं डिप्टी भीनमाल अन्नराजसिंह राजपुरोहित के सुपरविजन में थानाधिकारी रामसीन कमल किशोर मय पुलिस जाब्ता ने थूर से एक आरोपी से 1.61 ग्राम मादक पदार्थ के साथ तीन गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार सरहद थूर से वचनाराम पुत्र हीरालाल जाति देवासी निवासी नासोली थाना भीनमाल व रमेश कुमार पुत्र बगाराम देवासी निवासी बोरटा थाना रामसीन द्वारा बिना नम्बरी स्कॉर्पियो ब्लैक कलर में अवैध मादक पदार्थ एमडीएमए (मोली) 01.61 ग्राम अपने कब्जे में रखकर परिवहन करते पाये जाने पर उक्त दोनों आरोपियो को गिरफ्तार किया जाकर वाहन स्कॉर्पियो जब्त कर अवैध मादक पदार्थ एमडीएमए (मोली) सप्लायर इन्द्ररसिंह पुत्र जयसिंह राजपूत निवासी पांथेडी थाना सायला को भी गिरफ्तार किया गया। एमडी सप्लायर इन्द्ररसिंह अवैध मादक पदार्थ सप्लाई करने का आदतन अपराधी है, इन्द्ररसिंह के विरूद्ध पूर्व में थाना सायला में भी एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज होकर चालान हो चुका है। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया जाकर अग्रिम अन्वेषण बाबुलाल जागिड थानाधिकारी भीनमाल द्वारा किया जा रहा है।

वाहन चोरी का सिलसिला जारी

जोधपुर, (कासं)। शहर में वाहन चोरी का सिलसिला जारी है। चार स्थानों से बाइक चोरी हो गई। गाड़ी मालिकों की तरफ से संबंधित थानों में केस दर्ज करवाए गए है। प्रतापनगर थाने में दी रिपोर्ट में मदीना मस्जिद के पास बकरा मंडी निवासी मोहम्मद रफीक पुत्र अब्दुल रज्जाक ने पुलिस को बताया कि वह कुरैशी गार्डन आया था। जहां पर उसने अपनी बाइक खड़ी की थी। कुछ देर बाद वापस आया तब उसकी बाइक वहां नहीं थी।उसकी बाइक को अज्ञात वाहन चोर चुराकर ले गया। इसी तरह प्रतापनगर थाने में ही दी रिपोर्ट में चौकीदारों का मौहल्ला नयापुरा चौखा निवासी बीरबलराम पुत्र धन्नाराम बावरी ने पुलिस को बताया कि वह चीरघर के पास आया था जहां खड़ी की उसकी बाइक चोरी हो गई। इधर शास्त्रीनगर थाने में दी रिपोर्ट में मतोड़ा थानान्तर्गत बापिणी निवासी प्रेमाराम पुत्र अखाराम जाट ने पुलिस को बताया कि 29 अप्रेल को वह पाल रोड पर निजी अस्पताल आया था। जहां बाहर उसने अपनी बाइक खड़ी की और वह भीतर चला गया।। वापस आया तब तक उसकी बाइक चोरी हो गई। जबकि मथानिया पुलिस ने बताया कि सिंघलों की ढाणी घेवड़ा रोड तिंवरी निवासी विक्रम सिंह पुत्र अनोप सिंह की बाइक पंचायत समिति तिंवरी के पास से चोरी हो गई। बाइक 29 अप्रेल को चोरी हुई।

रेटिंग टॉस्क में फंसकर 6.50 लाख लुटाए

जोधपुर, (कासं)। शहर के सूरसागर स्थित रूपावतों का बेरा कालीबेरी क्षेत्र में रहने वाला एक युवक रेटिंग टॉस्क के चक्कर में पड़ गया। शातिरों ने पहले कुछ मुनाफा दिया फिर रेटिंग पाइंट बढ़ाने के साथ खातों में रूपए डलवाते रहे। आखिरकार साढ़े छह लाख गंवाने के बाद पुलिस के पास पहुंचा। सूरसागर पुलिस ने इस्तगासे के आधार पर धोखाधड़ी में अब प्रकरण दर्ज कर जांच आरंभ की है। सूसागर पुलिस ने बताया कि मामले में रूपावतों का बेरा काली बेरी निवासी दीपक गहलोत ने मामला दर्ज करवाया। इसमें बताया कि तीन चार महिने पहले उसने मोबाइल पर नइसा 125 और नइसा महाजन पर टॉस्क रेटिंग में हिस्सा लिया था। उसे नामी फर्मों की रेटिंग कास्ट बताना था। शुरूआत में उसके मुनाफा आना आरंभ हुआ मगर बाद में शातिरों ने टॉस्क को बढ़ाते हुए उससे विभिन्न खातों में 6.50 लाख रूपए डलवा दिए। बाद में नंबर बंद कर दिए। उसे गेम आगे जारी रखने के लिए और रूपयों की डिमाण्ड रखी गई।

विद्युत आपूर्ति आज रहेगी बाधित

जालोर,(कासं)। डिस्कॉम जालोर की ओर से शहर स्थित 11 केवी तासखाना बावड़ी फीडर पर मेंटीनेंस का कार्य किया जायेगा। जिसके लिए 3 मई, शुक्रवार को तासखाना बावड़ी व न्यू रामदेव कॉलोनी क्षेत्रों में प्रात: 6.30 बजे से प्रात: 9.30 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी। यह जानकारी कनिष्ठ अभियंता (शहर) महेन्द्र राजपुरोहित ने दी।

मुझे तेज गेंदबाजी आक्रमण पसंद नहीं आया। जसप्रीत बुमराह के अलावा, यह उतना अच्छा नहीं है। मुझे लगता है कि भारत तेज गेंदबाज के मामले में कमजोर हो रहा है।'' प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। **- मदनलाल**

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय गेंदबाजी के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

रुतुराज गायकवाड़

आईपीएल के सीजन 17 में ऑरेंज कैप अभी तक विराट कोहली के नाम थी लेकिन अब ये कैप चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ सिर पर सज गई है। फिलहाल अभी तक ये है कि ये ऑरेंज कैप किसी भारतीय के सिर पर ही सजी है ना कि किसी विदेशी खिलाड़ी। वहीं पर्पल कैप अभी भी जसप्रीत बुमराह के पास है। उसे उनसे छीनने में हर कोई पीछे है। आईपीएल 2024 ऑरेंज कैप अब रुतुराज गायकवाड़ के सिर पर है। विराट कोहली लंबे समय से इस कैप को अपने सिर पर सजाए हुए थे, लेकिन रुतुराज गायकवाड़ ने बुधवार को एक और अर्धशतकी जड़ा।

क्या आप जानते हैं ?... एकदिवसीय मैच में पहला शतक 1972 में इंग्लैंड के डेनिस एमिस ने ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध ओल्ड ट्रेफर्ड में बनाया था (134 गेंदों पर 103 रन)।

हैदराबाद ने राजस्थान को एक रन से हराया

भुवनेश्वर ने आखिरी ओवर में 13 रन डिफेंड किए, 3 विकेट भी लिये

हैदराबाद, 2 मई। इंडियन प्रीमियर लीग में गुरुवार के रोमांचक मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद ने राजस्थान रॉयल्स को एक रन से हरा दिया। टीम के भुवनेश्वर कुमार ने आखिरी ओवर में रोवमन पॉवेल और रविचंद्रन अश्विन के खिलाफ 13 रन डिफेंड किए। हैदराबाद से भुवनेश्वर कुमार ने 3 विकेट लिए। पैट कमिंस और थंगारसु नटराजन ने 2-2 विकेट लिए। राजस्थान से रियान पराग ने 77 और यशस्वी जायसवाल ने 67 रन बनाए। हैदराबाद ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर 201 रन बनाए। राजस्थान 20 ओवर में 7 विकेट गंवाकर 200 रन ही बना सकी। नितीश कुमार रेड्डी नाबाद (76) और ट्रैविस हेड (58) की शानदार अर्धशतकीय पारियों की मदद से सनराइजर्स हैदराबाद ने गुरुवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 50वें मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स को जीत के लिए 202 रनों का लक्ष्य दिया है। आज यहां राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज करनी का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी हैदराबाद की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने पांचवें ओवर में अभिषेक शर्मा (12) का विकेट गवां दिया। इसके बाद अगले ही ओवर में अनमोलप्रीत सिंह (5) रन बनाकर पवेलियन लौट गये।

ऐसे संकट के समय नितीश कुमार रेड्डी ने ट्रैविड हेड के साथ पारी को संभाला और तीसरे विकेट के लिए ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए (96) रन जोड़े। ट्रैविस हेड ने 44 गेंदों में छह चौके और तीन छक्के लगाते हुए (58) रन बनाये। वहीं नितीश कुमार रेड्डी ने 42 गेंदों में तीन चौके और आठ छक्के लगाते हुए नाबाद (76) रनों की पारी खेली। हाइनरिक क्लासन 19 गेंदों में तीन चौके और तीन छक्के लगाते हुए (42) रन बनाये। हैदराबाद ने निर्धारित 20 ओवर में तीन विकेट पर 201 रनों का स्कोर खड़ा किया। राजस्थान की ओर से आवेश खान ने दो विकेट लिये। संदीप शर्मा ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

भारतीय महिला टीम ने बांग्लादेश को तीसरे टी-20 में हराया

3-0 से सीरीज में बनाई अजेय बढ़त

सिलहट, 2 मई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने बांग्लादेश महिला क्रिकेट टीम को तीसरे टी20 मैच में 7 विकेट से रौंद दिया। इसके साथ ही भारतीय टीम ने पांच मैचों की टी20 सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली है। सिलहट में खेले गए मैच में मेजबान टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 117 रन ही बनाए। जिसके जवाब में भारत ने शेफाली वर्मा (51) और स्मृति मंधाना (47) की पारियों की बदौलत 19वें ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया।

बता दें कि, बांग्लादेश के 118 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने शेफाली (51 रन, 38 गेंद, आठ चौके) के अर्धशतक और स्मृति मंधाना (47 रन, 42 गेंद, पांच चौके, एक छक्का) के साथ उनकी पहले विकेट 91 रन की साझेदारी की। इस साल टी20 महिला विश्व कप बांग्लादेश में ही होना है और इसलिए भारतीय टीम का यह प्रदर्शन काफी अहम है। वहीं बांग्लादेश की टीम इससे पहले सलामी बल्लेबाज दिलारा अख्तर (25 गेंद में 39 रन) और कप्तान निगार सुल्ताना (28) की उम्दा पारियों के बावजूद 20 ओवर में आठ विकेट पर 117 रन ही बना सकी।

भारत की ओर से राधा यादव ने 22 रन देकर दो विकेट चटकाए। रेणुका सिंह, पूजा वस्त्राकर और श्रेयंका पाटिल को एक-एक विकेट मिला। लक्ष्य का पीछा करने उतरे भारत को शेफाली और स्मृति ने तूफानी शुरुआत दिलाई। दोनों ने पावर प्ले में बिना विकेट खोए 59 रन जोड़े। स्मृति ने मारूफा अख्तर जबकि शेफाली ने फारिहा त्रिशना पर चौके से खाता खोला। शेफाली ने शोरिफा खातून का स्वागत तीन चौकों के साथ किया जबकि नाहिदा अख्तर पर भी लगातार तीन चौके मारे। शेफाली ने फाहिमा खातून की गेंद पर एक रन के साथ नौवां अर्धशतक पूरा किया लेकिन अगले ओवर में रितु मोनी को उन्हीं की गेंद पर कैच दे बैठीं। स्मृति ने राबेया पर पारी का पहला छक्का जड़ा लेकिन नाहिदा की गेंद पर फाहिमा के हाथों लपकी गई।

सलीमा टेटे बनी भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान

नई दिल्ली, 2 मई। भारतीय महिला हॉकी टीम में बड़ा बदलाव हुआ है। दरअसल मिडफील्डर सलीमा टेटे को सविता पूनिया की जगह टीम की कमान सौंपी गई है। बता दें कि, इस महीने के आखिर में होने वाले एचआईएच प्रो लीग के बेल्जियम और

इंग्लैंड चरण के लिए भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम का कप्तान चुना गया है। जबकि नवनीत कौर को उपकप्तान चुना गया है। वहीं सलीमा ने हॉकी इंडिया द्वारा जारी विज्ञिप्त में कहा कि, मुझे खुशी है कि टीम की कप्तानी दी गई है। यह बड़ी जिम्मेदारी है और मैं इसे लेकर उत्साहित हूं। हमारे पास मजबूत टीम है जिसमें अनुभवी और युवा खिलाड़ी हैं। साथ ही उन्होंने कहा, ''एफआईएच प्रो लीग के आगामी बेल्जियम और इंग्लैंड चरण में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। हमें अपनी कमजोरियों से पार पाना है।''

पाकिस्तान क्रिकेट ने की 18 खिलाड़ियों के नामों की घोषणा

पाकिस्तान, 2 मई। इसी महीने पाकिस्तान आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज खेलेगा। वहीं इससे पहले पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस सीरीज के लिए अपनी 18 सदस्यीय स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है। पीसीबी ने ये भी बताया कि इसी स्क्वॉड में से 3 प्लेयर्स को बाहर कर वर्ल्ड कप स्क्वॉड जारी किया जाएगा, जो इंग्लैंड सिरीज के दौरान ही किया जाएगा। पाकिस्तान क्रिकेट टीम वर्ल्ड कप से पहले 10 से 14 मई के बीच आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज खेलेगा। इसके बाद 22 से 30 मई के बीच पाकिस्तान और इंग्लैंड टी20 सीरीज होगी। आईसीसी ने टी20 वर्ल्ड कप के लिए आखिरी स्क्वॉड देने के लिए 24 मई डेड लाइन रखी है।

कांगड़ा जिले में छह मई को पैराग्लाइडिंग, ड्रोन फ्लाइंक पर लगी रोक

धर्मशाला, 2 मई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के प्रस्तावित धर्मशाला प्रवास मद्देनजर सुरक्षा कारणों से कांगड़ा जिला में पैराग्लाइडिंग, ड्रोन फ्लाइंग, हॉट एयर बैलून, एयरो स्पोर्ट्स जैसी गतिविधियों पर छह मई को पूर्णत: प्रतिबंध लगाया गया है। टी-20 मैच के दौरान 05 और 09 मई को धर्मशाला उपमंडल में पैराग्लाइडिंग, ड्रोन फ्लाइंग, हॉट एयर बैलून, एयरो स्पोर्ट्स जैसे गतिविधियों पर विराम रहेगा। हालांकि इसमें पुलिस प्रशासन तथा सुरक्षा एजेंसियों को छूट रहेगी। जिला दंडाधिकारी हेमराज बैरवा ने आज यहां यह आदेश पारित करते हुए कहा कि विशिष्ट अतिथियों तथा दर्शकों की सुरक्षा के मद्देनजर यह आदेश जारी किए गए हैं।

क्रिकेट में तूफान मचाने के बाद बॉलीवुड डेब्यू करेंगे आंद्रे रसेल

कोलकाता, 2 मई। केकेआर के विस्फोटक बल्लेबाज आंद्रे रसेल क्रिकेट में गर्दा मचाने के बाद अब बॉलीवुड में अपना डेब्यू करने जा रहे हैं। दरअसल, आंद्रे रसेल को भारत में बहुत प्यार मिलता है, उनके चाहने वालों में बड़ी संख्या में भारतीय फैंस हैं। इस बीच उन्होंने बॉलीवुड में भी कदम रख लिया है जिसके बाद उन्होंने छोटे पर्दे की बालिका वधू यानी अविका गौर के साथ गाना शूट किया है जो 9 मई को रिलीज होगा।

खराब फॉर्म से जूझ रही मुंबई की कोलकाता से भिड़ंत, प्लेऑफ की राह मुश्किल

मुंबई, 2 मई। खराब फॉर्म से जूझ रही मुंबई इंडियंस के खिलाफ शुक्रवार को इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले में कोलकाता नाइट राइडर्स अपनी कमजोरियों से पार पाने के इरादे से उतरेगी। नौ मैचों में छह जीत के बाद 12 अंक लेकर केकेआर तालिका में दूसरे स्थान पर है और प्लेआफ में उसकी जगह लगभग पक्की लग रही है।

श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली टीम को हालांकि हर विभाग में लगातार अच्छा प्रदर्शन करके किसी तरह की कोताही से बचना होगा। केकेआर ने पिछले छह में से तीन मैच गंवाये हैं और पंजाब किंग्स ने रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा करके उसे हराया लेकिन फिर केकेआर ने वापसी करके दिल्ली कैपिटल्स को सात विकेट से मात दी। बल्लेबाजी में अति आक्रामक रवैये का केकेआर को फायदा मिला है लेकिन गेंदबाजी में सुधार की गुंजाइश है। मिचेल स्टार्क प्रति ओवर 12 की दर से रन लुटा रहे हैं और उन्हें सात ही विकेट मिले हैं। बल्लेबाजों की मददगार पिचों पर आस्ट्रेलिया का यह तेज गेंदबाज कोई कमाल नहीं कर पा रहा। हर्षित राणा ने सर्वाधिक 11 विकेट लिये हैं लेकिन दिल्ली के अभिषेक पोरेल के विकेट पर अति आक्रामक जश्न मनाने के कारण उन पर एक मैच का प्रतिबंध लगा है। वैभव अरोड़ा ने पांच मैचों में नौ विकेट लिये हैं।

वानखेड़े स्टेडियम बल्लेबाजों की मददगार पिच के लिये मशहूर है और इस पर 200 से अधिक का स्कोर बनना तय है। ऐसे में नजरें रिंकू सिंह पर भी होंगी जिन्हें टी20 विश्व कप के लिये भारत की मुख्य टीम में जगह नहीं मिलने से काफी बहस हो रही है। उन्हें इस साल आईपीएल में खेलने का अधिक समय ही नहीं मिल सका। दूसरी ओर मुंबई प्लेआफ की दौड़ से लगभग बाहर लग रही है हालांकि उसे पांच मैच और खेलने हैं।

चार विभागीय एएसबीसी एशियाई अंडर-22 और युवा मुक्केबाजी चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में

नई दिल्ली, 2 मई। भारतीय मुक्केबाजों मांदेंगबाम जादुमणि सिंह, निखिल, अजय कुमार और अंकुश ने गुरुवार को अपने-अपने मुकाबले जीतकर एएसबीसी एशियाई अंडर-22 और युवा मुक्केबाजी चैंपियनशिप के पुरुष अंडर-22 सेमीफाइनल में जगह बनाई। जादुमणि ने 51 किग्रा के क्वार्टर फाइनल में भूटान के फुंटशो किनले को 5-0 से हराकर भारत को अच्छी शुरुआत दिलाई।

निखिल (57 किग्रा) ने भी इसी तरह का दबदबा बनाया और उज्बेकिस्तान के बख्तियोरोव अयूबखोन को 4-0 से शिकस्त दी। अजय (63.5 किग्रा) और अंकुश (71 किग्रा) ने रेफरी के मुकाबले रोकने (आरएससी) पर अपने-अपने मुकाबले जीते। अजय ने मंगोलिया के दमदिंडोरज पी के खिलाफ पहले दौर में ही मुकाबला जीत लिया जबकि अंकुश ने कोरिया के ली जू सांग के खिलाफ तीसरे दौर में जीत दर्ज की। आशीष हालांकि पुरुषों के 54 किग्रा क्वार्टर फाइनल में मंगोलिया के ओयुन एर्डेन ई के खिलाफ 2-3 से हार गए। बुधवार देर रात आर्यन (92 किग्रा),

निशा (52 किग्रा), आकांक्षा फलसवाल (70 किग्रा) और रुद्रिका (75 किग्रा) ने युवा वर्ग में अपने-अपने क्वार्टर फाइनल मुकाबले जीते।

टी-20 वर्ल्ड कप के लिए तीन देशों की टीम घोषित, कनाडा-ओमान में 11 भारतीय

नई दिल्ली, 2 मई। टी-20 वर्ल्ड के लिए कनाडा, नेपाल और ओमान ने भी अपनी टीमों की घोषणा कर दी है। नेपाल ने अपनी टीम में पूर्व कप्तान संदीप लामिछाने को जगह नहीं दी है। कनाडा और ओमान ने पाकिस्तानी मूल के खिलाड़ी को अपना कप्तान बनाया है।

दोनों टीमों में 11 भारतीय खिलाड़ी शामिल हैं। ओमान ने 4 और कनाडा ने 7 भारतीय मूल के खिलाड़ियों को टीम में जगह दी है। टी-20 वर्ल्ड कप में दूसरी बार क्वालिफाई करने वाली नेपाल की टीम में संदीप लामिछाने को जगह नहीं दी गई है। नेपाल ने रोहित पौडेल को टीम का कप्तान नियुक्त किया है।

टीम में आतिशी बल्लेबाज दीपेंद्र सिंह ऐरी भी हैं। उन्होंने हाल ही टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच में एक ओवर में छह छक्के जड़े थे। 34 गेंदों पर टी-20 शतक ठोकने वाले कुशल मल्ला भी टीम का हिस्सा हैं।

संदीप लामिछाने पर सितंबर 2022 में रेप का केस हुआ था। निचली अदालत ने उन्हें पुलिस हिरासत में रखकर पूछताछ करने के लिए कहा, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने हिरासत में रखने के फैसले को पलट दिया।

रोहित और अजीत अगरकर ने की प्रेस कॉफ्रेंस

केएल राहुल से लेकर रिंकू सिंह तक कई सवालों के दिए जवाब

नई दिल्ली, 2 मई। आगामी टी20 वर्ल्ड कप 2024 को लेकर भारतीय टीम घोषित हो चुकी है। वहीं गुरुवार को चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर और कप्तान रोहित शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कई सवालों के जवाब भी दिए। इनमें केएल राहुल को ड्रॉप किए जाने से लेकर रिंकू सिंह को मौका नहीं मिलना और विराट कोहली के स्ट्राइक रेट पर भी उन्होंने अपना मत रखा।

वहीं जब चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर से मीडिया ने पूछा कि केएल राहुल को ड्रॉप क्यों किया ? तो इस पर उन्होंने कहा कि, हमें बीच में एक खिलाड़ी की जरूरत थी। केएल राहुल टॉप पर बल्लेबाजी कर रहे हैं। संजू ने अच्छा प्रदर्शन किया है और यहां तक कि ऋषभ पंत भी नंबर 5 पर बल्लेबाजी कर रहे हैं। हालांकि, ये इस बारे में नहीं है कि कौन बेहतर है और कौन नहीं? लेकिन पंत और संजू ने निचले क्रम में बल्लेबाजी करने में ज्यादा समय बिताया है।

वहीं रिंकू सिंह को टीम में मौका नहीं दिए जाने पर अगरकर ने कहा कि रिंकू सिंह ने कुछ गलत नहीं किया है। उन्हें ड्रॉप करना सबसे मुश्किल फैसला था, उनकी कोई गलती नहीं है। ये दुर्भाग्यपूर्ण है।टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने शिवम दुबे के चयन पर बताया कि हमार टॉप ऑर्डर आक्रमक बल्लेबाजी करता है और ये बुरा नहीं है। हम चाहते थे कि मिडिल ओवरों में भी कोई इसी तरह की भूमिका निभाए और फ्री होकर खेले। हमने आईपीएल में शिवम दुबे के प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन किया। हमने इस बारे में बात की और उनका चयन किया।

ओस के कारण हमारे लिए परिस्थितियां मुश्किल हो गयी : ऋतुराज गायकवाड़

चेन्नई, 2 मई। पंजाब किंग्स के खिलाफ 13 गेंद शेष रहते सात विकेट से शिकस्त का सामना करने के बाद चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ ने कहा कि ओस के कारण बाद में बल्लेबाजी करना आसान हो गया था। गायकवाड़ की 48 गेंद में 62 रन की पारी के दम पर सीएसके ने पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर सात विकेट पर 162 रन बनाये। पंजाब ने 17.5 ओवर में तीन विकेट पर लक्ष्य हासिल कर 10 मैचों में चौथी जीत दर्ज की। गायकवाड़ ने मैच के बाद पुरस्कार समारोह में कहा, '' हमने 50-60 रन कम बनाये थे। जब हम पहले बल्लेबाजी कर रहे थे तो पिच काफी चुनौतीपूर्ण थी लेकिन बाद में ओस के कारण चीजें मुश्किल हो गयी।'' उन्होंने कहा, '' ओस के कारण हमारे लिए परिस्थितियां काफी मुश्किल हो गयी। पिछले मैच में भी हम उस समय आश्चर्यचकित थे जब हमने बड़े अंतर से मैच जीता था। यह कुछ ऐसा है जो हमारे हाथ में नहीं है।'' गायकवाड़ ने कहा, ''हम पहले पारी में और अच्छी बल्लेबाजी कर सकते थे।

रूबलेव ने अलकराज के तीसरी बार मैड्रिड ओपन जीतने के सपने को तोड़ा

मैड्रिड, 2 मई। रूस के टेनिस खिलाड़ी आंद्रे रूबलेव ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए स्पेन के कार्लोस अलकराज के लगातार तीन बार मैड्रिड ओपन खिताब जीतने के सपने को तोड़ दिया है। बुधवार को मैड्रिड ओपन टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल मुकाबले में सातवीं वरीयता प्राप्त आंद्रे रुबलेव ने एक सेट में पिछड़ने के बाद स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अलकराज को 4-6, 6-3, 6-2 से हराया।

दो बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन 20 वर्षीय अलकराज ने 41 मिनट में शुरुआती सेट जीतने के बावजूद अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सके। रुबलेव ने एटीपी मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट में जोरदार प्रदर्शन करते हुए अलकराज की 14 मैचों की जीत की लय को तोड़ते हुए मुकाबला जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। रुबलेव ने मैच के बाद कहा, सर्विस ने आज मुझे कई बार बचाया। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मेरे पहले मैचों में से एक था

जहां मैं पूरी तरह से शांत था। मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, भले ही मैं हार रहा था। मैं और भी बेहतर सर्विस करने में सक्षम था क्योंकि शुरुआत में, मैं उतनी अच्छी सर्विस नहीं कर पा रहा था, लेकिन धीरे-धीरे, एक सेट के बाद मैं बेहतर होता गया और मैंने वास्तव में अच्छा प्रदर्शन किया।

शास्त्री और यूनाइटेड भारत ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज की

नयी दिल्ली, 2 मई। शास्त्री एफसी और यूनाइटेड भारत ने गुरुवार को अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज करते हुए सुपर सिक्स के लिये अपना दावा मजबूत किया। आज यहां विनोद नगर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स पर खेले गए तेज रफ्तार मुकाबले में गौतम और प्लेयर ऑफ द मैच दीपू एल्सन के शानदार गोलों की मदद से शास्त्री एफसी ने अजमल एफसी को 2-0 से हरा कर डीएसए सीनियर डिवीजन लीग के सुपर सिक्स में पहुंचने की मजबूत दावेदारी पेश की। शास्त्री ने अधिकांश समय मैच में अपना दबदबा बनाए रखा लेकिन तेज हवा के चलते ज्यादा गोल नहीं निकल पाएं। आज की जीत के साथ शास्त्री ने आठ मैचों में 14 और अजमल ने 11 अंक बनाए हैं।

मैच फिक्सिंग में फंसे विंडीज विकेटकीपर

कैरेबियाई क्रिकेटर डेवोन थॉमस पर लगा 5 साल का बैन, समेत साबित हुए 7 बड़े आरोप

वेस्टइंडीज, 2 मई। वेस्टइंडीज के एक विकेटकीपर खिलाड़ी पर गाज गिरी है. 34 वर्षीय कैरेबियाई क्रिकेटर डेवोन थॉमस पर आईसीसी ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों में खेलने पर 5 साल का बैन लगा दिया है। थॉमस ने स्वीकार किया है कि उन्होंने श्रीलंका क्रिकेट, अमीरात क्रिकेट बोर्ड और कैरेबियन प्रीमियर लीग के 7 एंटी करप्शन कोड्स का उल्लंघन किया है। इसी के चलते ने उन पर कड़ा एक्शन लेते हुए उन्हें 5 साल बैन की सजा सुनाई है। बता दें कि अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने पिछले साल मई में 7 आरोप लगाते हुए डेवोन थॉमस को सस्पेंड कर दिया था, लेकिन अब उन्हें पूरी तरह बैन कर दिया गया है। उनपर मैच फिक्सिंग के आरोप भी लगे थे और अपनी सफाई के लिए उन्हें 14 दिन की मोहलत दी गई था।

इंटीग्रिटी यूनिट के जनरल मैनेजर एलेक्स हेल्स ने स्टेटमेंट जारी करते हुए कहा, ''प्रोफेशनल तौर पर अंतर्राष्ट्रीय, डोमेस्टिक क्रिकेट और फ्रैंचाइज़ी क्रिकेट खेल चुके डेवोन थॉमस ने कई भ्रष्टाचार विरोधी सत्रों में भाग लिया था। वो जानते थे कि एंटी करप्शन कोड्स के तहत उनकी जिम्मेदारियां क्या थीं लेकिन वो अपने दायित्वों को पूरा करने में नाकाम रहे। ये बैन सही लगाया गया है और इससे भ्रष्टाचार करने वाले अन्य खिलाड़ियों को संदेश भी जाता है कि ऐसा करने वालों से सख्ती से निपटा जाएगा।''

डेवोन थॉमस अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में वेस्टइंडीज के लिए केवल 1 टेस्ट मैच खेल पाए, जिसमें उन्होंने 31 रन बनाए और 2 विकेट भी लिए थे। इसके अलावा उन्होंने वेस्टइंडीज के लिए 21 वनडे मैचों में 238 रन बनाने के अलावा 2 विकेट भी लिए। वहीं 12 टी20 मैचों में थॉमस केवल 51 रन बना पाए थे. उन्हें आखिरी बार साल 2022 में वेस्ट इंडीज के लिए खेलते देखा गया था।

थॉमस कप के क्वार्टरफाइनल में पुरुष और महिला टीम की हार के साथ भारतीय अभियान समाप्त

चेंगदू, 2 मई। भारतीय पुरुष और महिला बैडमिंटन टीम को थॉमस और उबेर कप 2024 के क्वार्टरफाइनल मुकाबले में गुरुवार को मिली हार के साथ टूर्नामेंट में उसका अभियान समाप्त हो गया। चीन के चेंगदू में आयोजित क्वार्टरफाइनल में आज पुरुष टीम को चीन के खिलाफ 3-1 और महिला टीम को जापान के खिलाफ मुकाबले में 3-0 से हार का सामना करना पड़ा। एचएस प्रणॉय को चीनी खिलाड़ी शी यू की से 21-15, 11-21,14-21 से हार का सामना करना पड़ा।

वहीं थॉमस कप के दूसरे मुकाबले में चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी को वेई कैंग-वांग चांग की जोड़ी ने 21-15, 11-21, 21-12 से हराया और इसी के साथ भारत 0-2 से पिछड़ गया। वहीं एकल मुकाबले में राष्ट्रमंडल खेलों के चैंपियन लक्ष्य सेन की जीत ने भारत की उम्मीदें बरकरार रखीं और स्कोर 1-2 हो गया। लक्ष्य ने ली शी फेंग को 13-21, 21-8, 21-14 से मात दी। लक्ष्य की शुरुआत अच्छी नहीं रही, लेकिन दूसरे गेम में भारतीय खिलाड़ी ने वापसी की और मैच को तीसरे गेम तक पहुंचाया। भारतीय शटलर ने निर्णायक गेम में जीत दर्ज कर मैच अपने नाम कर लिया।

पुरुष युगल मुकाबले में ध्रुव कपिला और साई प्रतीक की जोड़ी को ही जी टिंग-रेन जियांग यू से सीधे गेम में 10-21, 10-21 से हार का सामना करना पड़ा। इस हार के साथ पुरुष टीम थॉमस कप से बाहर हो गई। इससे पहले महिला टीम ने एकल मुकाबले से प्रतियोगिता की शुरुआत की। विश्व रैंकिंग में 53वें स्थान पर मौजूद अश्मिता चालिहा को वर्ल्ड रैंकिंग में 11वें स्थान पर काबिज़ अया ओहोरी ने 21-10, 20-22, 21-15 से शिकस्त दी।

वहीं, राष्ट्रीय युगल चैंपियन प्रिया कोन्जेंगबाम-सिमरन सिंघी को दुनिया की चौथे नंबर की जोड़ी नामी मत्सुयामा और चिहारू शिडा ने सीधे गेम में 21-8, 21-9 से हराया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा गुरुवार को भाजपा के चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी संभालने दिल्ली पहुंचे। उन्होंने पश्चिम दिल्ली से भाजपा उम्मीदवार कमलजीत सहरावत के पक्ष में रोड शो किया और नामांकन सभा को भी संबोधित किया। सहरावत का रोड शो गुरुवार को सोशल मीडिया पर खूब चर्चित रहा, कमलजीत सहरावत हाथ में धनुष-बाण लेकर ढोल-नगाड़ों के साथ रोड शो करते हुये चुनाव नामांकन कार्यालय पहुँचीं। मुख्यमंत्री भजनलाल का भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया और उनके समर्थन में जोर-शोर से खूब नारे लगाये।

मु.मंत्री भजनलाल ने प. दिल्ली में भाजपा प्रत्याशी के लिए रोड शो किया

- **मुख्यमंत्री ने भाजपा प्रत्याशी कमल सहरावत की नामांकन सभा में भी भाग लेकर उनका उत्साह बढ़ाया।**
- **सभा में जय श्रीराम और मोदी के नारों के साथ ही भजनलाल के लिए भी नारे लगे, ''राजस्थान का एक ही लाल भजनलाल।''**

नई दिल्ली, 2 मई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा गुरूवार को लोकसभा चुनाव, 2024, में पश्चिम दिल्ली की भाजपा प्रत्याशी कमलजीत सहरावत के नामांकन अवसर पर उपस्थित हुए।

मुख्यमंत्री गुरूवार को कमलजीत सहरावत के साथ पश्चिम दिल्ली के राजा गार्डन स्थित जिला निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय भी गए तथा जीत के लिए सहरावत को अग्रिम बधाई दी।

इससे पूर्व भजनलाल शर्मा सहरावत के रोड शो में भी शामिल हुए। पश्चिम दिल्ली में जनकपुरी से आरंभ हुए इस रोड शो में हजारों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। करीब चार किलोमीटर लंबे रोड शो में भारी संख्या में कार्यकर्ताओं ने पार्टी के झंडों को लहराते हुए डीजे की धुन पर नाचते- गाते हुए भाजपा प्रत्याशी के लिए समर्थन जताया।

रोड शो में कार्यकर्ताओं ने जय श्री राम और मोदी-मोदी के नारों के साथ-साथ ''राजस्थान का एक ही लाल भजनलाल भजनलाल'' के नारे लगाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। सहरावत द्वारा नामांकन दाखिल करने के अवसर पर केन्द्रीय मंत्री हरदीप पुरी तथा दिल्ली भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी भाग लिया।

सहरावत का रोड शो गुरुवार को सोशल मीडिया पर खूब चर्चित रहा, कमलजीत सहरावत हाथ में धनुष-बाण लेकर ढोल-नगाड़ों के साथ रोड शो करते हुये चुनाव नामांकन कार्यालय पहुँचीं।

मुख्यमंत्री भजनलाल का भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया और उनके समर्थन में जोर-शोर से खूब नारे लगाये।

फोर्टिस अस्पताल ने डोनर और रैसिपिएंट लाने के लिए एक प्राइवेट कम्पनी से एम.ओ.यू. कर रखा था

राजधानी जयपुर में मानव अंग तस्करी व ट्रांसप्लांट केस में नया खुलासा

- **पुलिस ने मैड सफर प्राइवेट लिमिटेड नामक इस कम्पनी के निदेशक सुमन जाना व कर्मचारी सुखमय नन्दी उर्फ गोपाल को पश्चिम बंगाल में दो अलग-अलग जगहों से गिरफ्तार किया है।**
- **इस कम्पनी के निदेशक तथा उसमें काम करने वाले कर्मचारी आम लोगों को बहला फुसला कर मानव अंगों की खरीद-फरोख्त और तस्करी करते थे।**

जयपुर, 2 मई। राजधानी जयपुर में मानव अंग तस्करी व ट्रांसप्लांट के मामले में आरोपियों से रोजाना बड़े खुलासे हो रहे हैं। पुलिस जांच में सामने आया है कि, मानव अंग प्रत्यारोपण के लिए फोर्टिस अस्पताल ने मैड सफर प्राइवेट लिमिटेड नामक कम्पनी के साथ डोनर और रैसिपिएंट लाने का एम.ओ.यू. कर रखा है। पुलिस ने कम्पनी के निदेशक सुमन जाना एवं कर्मचारी सुखमय नन्दी उर्फ गोपाल को पश्चिम बगांल में दो अलग-अलग जगह पर दबिश देकर गिरफ्तार किया है।

ए.सी.बी. कार्रवाई के बाद जवाहर सर्किल पुलिस थाने में मानव तस्करी व अंग प्रत्यारोपण के सम्बन्ध में चिकित्सा विभाग की ओर से मामला दर्ज करवाया गया। पुलिस ने इसमें अब तक सवाई मानसिंह अस्पताल के सहायक प्रशासनिक अधिकारी गौरव सिंह, विनोद सिंह और फोर्टिस अस्पताल के अंग प्रत्यारोपण कोऑर्डिनेटर गिर्राज शर्मा एवं बांग्लादेशी नागरिक नूरुल इस्लाम, मेहंदी हसन शमीम, मो. अहशानुल कोबीर और मो. आजाद हुसैन को गिरफ्तार किया है।

आरोपियों से की गई पूछताछ व अनुसंधान से सामने आया कि, मानव अंग प्रत्यारोपण के लिए फोर्टिस अस्पताल ने मैड सफर प्राइवेट लिमिटेड नामक कम्पनी के साथ अंग प्रत्यारोपण के लिए डोनर और रैसिपिएंट लाने का एम.ओ.यू. कर रखा है। इस कम्पनी के निदेशक तथा उसमें काम करने वाले व्यक्तियों द्वारा लोगों के साथ धोखाधड़ी कर मानव अगों की खरीद-फरोख्त की जाती थी। इस कम्पनी के निदेशक एवं अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों की कोलकाता के आसपास होने की जानकारी मिलने पर एक विशेष टीम का गठन कर पश्चिम बंगाल भेजा गया। टीम ने तकनीकी एवं अन्य साक्ष्यों का संकलन कर कम्पनी के निदेशक सुमन जाना एवं कर्मचारी सुखमय नन्दी उर्फ गोपाल को पश्चिम बगांल में दो अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर गिरफ्तार किया है। अभियुक्त सुमन जाना एवं सुखमय नन्दी उर्फ गोपाल से पूछताछ कर अग्रिम अनुसंधान जारी है।

सहरावत का रोड शो गुरुवार को सोशल मीडिया पर खूब चर्चित रहा, कमलजीत सहरावत हाथ में धनुष-बाण लेकर ढोल-नगाड़ों के साथ रोड शो करते हुये चुनाव नामांकन कार्यालय पहुँचीं। मुख्यमंत्री भजनलाल का भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया और उनके समर्थन में जोर-शोर से खूब नारे लगाये।

'कांग्रेस तो पाकिस्तान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खबरों के बीच आयी कि, पाकिस्तान की पूर्ववर्ती इमरान खान सरकार के कैबिनेट मंत्री चौधरी फवाद हुसैन ने अपने सोशल मीडिया हैण्डल पर राहुल गांधी की तस्वीर लगाकर उनकी प्रशंसा की है। कांग्रेस का कहना है कि, प्रधानमंत्री विपक्ष को, खासतौर पर कांग्रेस को मात देने के लिए हिंदू-मुस्लिम, अल्पसंख्यक और पाकिस्तान कार्ड का बार-बार इस्तेमाल करते रहे हैं। मोदी ने कहा कि ''पाकिस्तान रो रहा है क्योंकि कांग्रेस यहाँ मर रही है। पाकिस्तान के नेता कांग्रेस के लिए दुआ कर रहे हैं। पाकिस्तान शहज़ादे (इशारा राहुल गांधी की ओर) को अगला प्रधानमंत्री बनाने के लिए बेताब है। यह आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि हम पहले ही जानते हैं कि, कांग्रेस पाकिस्तान की मुरीद है। पाकिस्तान और कांग्रेस के बीच की साझेदारी उजागर हो चुकी है। इससे पता चलता है कि, देश के दुश्मन भारत में कमज़ोर सरकार चाहते हैं, ना कि मजबूत सरकार।''

मध्य गुजरात के आणंद और खेड़ा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में आणंद में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने विपक्ष के नेता सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया आलम के ''वोट फॉर जिहाद'' आव्हान पर कांग्रेस के लिए चुटकी लेते हुए कहा कि ''हमने अब तक लव जिहाद और भूमि जिहाद के बारे में सुना है, लेकिन इण्डिया गठबंधन अब ''वोट जिहाद'' का आव्हान कर रहा है।''

कॉमेडियन श्याम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने कहा कि, उनके पास राजनीति, धन अथवा नामांकन का अनुभव नहीं है, अत: वह चुनाव मैदान में उतरने के लिए जनता का सहयोग चाह रहे हैं। श्याम रंगीला हाल ही में तब लोकप्रिय बन गए थे, जब उन्होंने पैट्रोल की बढ़ती कीमतों को लेकर प्रधानमंत्री मोदी पर एक वीडियो बनाया था, लेकिन अपने इस ''सोलो एक्ट'' के लिए उन्हें 11,000 का जुर्माना अदा करना पड़ा था।

क्या इस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हो सकेंगे। सुखबीर सिंह जौनपुरिया 2014 व 2019 में इसी सीट से जीत चुके हैं अर्थात गत दस सालों से इसी सीट से सांसद हैं और उनके खिलाफ ''एंटी इन्कमबैंसी'' लहर का भी थोड़ा बहुत असर है। चुनाव प्रचार के दौरान इस क्षेत्र के कई गांवों में उनका विरोध भी देखा गया।

'दबदबा था: दबदबा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **यह पहली बार नहीं है, जबकि केसरगंज सीट पर बृज भूषण सिंह ने अपने ''प्रॉक्सी'' उम्मीदवार को खड़ा किया और जितवाया है। जब बृज भूषण सिंह टाडा में गिरफ्तार थे, उनकी पत्नी उनके एवज में चुनाव लड़ी थीं और जीती थीं।**
- **इस बार भी बृज भूषण सिंह के पुत्र ''प्रॉक्सी'' उम्मीदवार हैं तथा केसरगंज से पारिवारिक सीट पर जीतेंगे।**

भी किया। तीस से ज्यादा सभाओं को संबोधित करते हुए, यौन उत्पीड़न के आरोपों पर अपनी बेगुनाही का दावा किया। इन सभाओं में कथित रूप से भारी संख्या में लोग उपस्थित थे, जिससे संकेत मिलते हैं कि, पिछले कुछ वर्षों में बृज भूषण क्षेत्र में काफी प्रभावशाली बन गए हैं।

बृजभूषण के बाद उसके भरोसेमंद संजय सिंह के भारतीय कुश्ती महासंघ के प्रमुख चुनने के बाद, उपरोक्त क्षेत्रों में बृजभूषण के पोस्टर्स लगाए गए, जिन पर लिखा था, ''दबदबा था, दबदबा रहेगा।'' यद्यपि उसका टिकट फाइनल नहीं हुआ था, फिर भी भूषण ने पिछले कुछ सप्ताहों में अपने चुनाव क्षेत्र में प्रचार शुरू कर दिया था, जिसमें भारी भीड़ जुट रही थी।

यह पहली बार नहीं है कि, भाजपा ने केसरगंज में एक ''प्रॉक्सी'' उम्मीदवार खड़ा किया है। वर्ष 1996 में जब बृजभूषण टाडा के तहत जेल में था, तब भाजपा ने उसकी पत्नी केतकी देवी सिंह को गौंडा चुनाव क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया था। वह उस वर्ष चुनाव जीत गयीं थीं।

अपनी मां की तरह, करण भूषण को भी राजनीति में अनाड़ी माना जाता है। करण भूषण ने ऑस्ट्रेलिया से बिजनैस मैनेजमैंट में डिप्लोमा किया है और वर्तमान में वह उत्तर प्रदेश कुश्ती महासंघ का अध्यक्ष है। करण के चुने जाने के कुछ दिन बाद, ओलंपिक मैडलिस्ट बजरंग पूनिया और साक्षी मलिक ने विरोध प्रदर्शनों की धमकी दी थी, यह दावा करते हुए कि, सरकार ने वादा किया था कि, बृजभूषण या उसका कोई भी रिश्तेदार या उसका कोई भी साथी खेल का संचालन नहीं करेगा।

'भारत में लोकसभा चुनाव को प्रभावित कर रहा है अमेरिका'

नई दिल्ली, 2 मई (वार्ता) भारत ने अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग को एक पक्षपाती संगठन और उसकी रिपोर्ट को राजनीतिक एजेंडा करार दिया है तथा कहा है कि इसके जरिये भारत के आम चुनावों को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरुवार को यहां मीडिया की नियमित ब्रीफिंग में कहा, यूनाइटेड स्टेट्स कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (यूएससीआईआरएफ) ने कल अपनी रिपोर्ट 2024 जारी की है। वे पहले भी अपनी रिपोर्ट जारी करते रहे हैं। प्रवक्ता ने कहा कि, यू.एस.सी.आई.आर.एफ. को एक पक्षपाती संगठन के रूप में जाना जाता है।

'भारत ज़ैनोफोबिक होने की वजह से पिछड़ा हुआ है'

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि, भारत के आर्थिक शक्ति के तौर पर पीछे रह जाने का यही प्रमुख कारण है

- **''ज़ैनोफोबिक'' शब्द का अर्थ है, बाहरी लोगों का स्वागत करने से डरना।**
- **राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि, इसके विपरीत अमेरिका ''ज़ैनोफोबिक'' नहीं है। हम बाहरी लोगों का स्वागत करते हैं, बल्कि हमारा जो आर्थिक विकास हुआ है वह बाहरी लोगों की वजह से ही है।**

नई दिल्ली, 2 मई। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि भारत जैसे देश जेनोफोबिक हैं। यही उनके आर्थिक शक्ति के तौर पर पीछे रह जाने का कारण है। बाइडन ने कहा कि भारत, चीन, जापान और रूस जैसे देश ''जेनोफोबिक'' हैं। इसके चलते उनकी अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। ''जेनोफोबिक'' का अर्थ एक प्रकार के डर से होता है, जो बाहरी लोगों को आने से रोकता है। बाडइेन ने कहा कि भारत, चीन, रूस जैसे देश बाहरी लोगों का स्वागत नहीं करते। यही वजह है कि उनकी इकॉनमी ज्यादा ग्रोथ नहीं कर पाई।

बाइडन ने एक आयोजन में कहा, हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ रही है। इसकी एक वजह है क्योंकि हम और अन्य लोग भी मेहनत करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम प्रवासियों का स्वागत करते हैं। बाइडन ने चीन का उदाहरण देते हुए कहा, चीन की अर्थव्यस्था आखिर क्यों रुक गई है? जापान क्यों मुश्किल में है। भारत और रूस की क्या स्थिति है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि वे जेनोफोबिक हैं। ये लोग प्रवासी नहीं चाहते। लेकिन हमें तो प्रवासियों ने ही मजबूत बनाया है। बता दें कि आई.एम.एफ. ने इस साल 2023 के मुकाबले ग्लोबल स्लोडाउन की आशंका जताई है।

आई.एम.एफ. का अनुमान है कि जापान की ग्रोथ 0.9 फीसदी रहेगी। वहीं भारत जैसे विकासशील देश की ग्रोथ 6.8 फीसदी रहेगी। वैश्विक मुद्रा कोष ने अपने अनुमान में यह भी कहा है कि अमेरिका की आर्थिक विकास दर 2.7 फीसदी रहेगी। बीते साल के मुकाबले थोड़ा सुधार रहेगा क्योंकि 2023 में यह 2.5 पर्सेंट पर ही ठहर गई थी। एक्सपर्ट्स का कहना है कि अमेरिका की अर्थव्यवस्था में इस सुधार की वजह प्रवासी लोगों के आने से होगा। ये लोग वर्कफोर्स में शामिल होंगे और उससे इकॉनमी को भी मदद मिलने की उम्मीद है।

गौरतलब है कि अमेरिका अकसर कहता है कि, हम अफ्रीका से लेकर एशिया तक के लोगों का स्वागत करते हैं। इसी के चलते हमारी ग्रोथ हुई है। अमेरिका में भारतीय मूल के भी लाखों लोग बसे हुए हैं। हालांकि अमेरिका की राजनीति में प्रवासी लोगों की बढ़ती संख्या भी एक मुद्दा रही है। यही नहीं हेट क्राइम भी वहां बीते कुछ सालों में तेजी से बढा है। इस साल नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले भी प्रवासी लोगों की बढ़ती संख्या एक बार फिर से मुद्दा बन गई है। राष्ट्रपति बाइडन कई बार इस मामले को लेकर डोनाल्ड ट्रंप की आलोचना कर चुके हैं।

'राजनयिक पासपोर्ट पर भागे हैं प्रज्वल रेवन्ना'

नई दिल्ली, 2 मई (वार्ता)। कर्नाटक में जनता दल सेकुलर (जद-एस) के सांसद और करीब तीन हजार महिलाओं के साथ दुष्कर्म के आरोपी प्रज्ज्वल रेवन्ना राजनयिक पासपोर्ट पर जर्मनी फरार हुआ है और जाने से पहले उसने सरकार से किसी तरह की कोई जानकारी साझा नहीं की है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने आज यहां नियमित ब्रीफिंग में पत्रकारों के सवालों के जवाब में यह जानकारी दी।

- **भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि, प्रज्वल रेवन्ना ने अपनी यात्रा के लिए विदेश मंत्रालय से कोई अनुमति नहीं मांगी थी।**

जायसवाल ने कहा, उक्त सांसद की जर्मनी यात्रा के संबंध में विदेश मंत्रालय से न तो कोई राजनीतिक मंजूरी मांगी गई थी और न ही जारी की गई थी। जाहिर है, कोई वीजा नोट भी जारी नहीं किया गया था। कोई वीजा नहीं राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए जर्मनी की यात्रा करना आवश्यक है। मंत्रालय ने उक्त सांसद के लिए किसी अन्य देश के लिए कोई वीज़ा नोट भी जारी नहीं किया है...हां, उन्होंने राजनयिक पासपोर्ट पर यात्रा की थी।

चीन ने पी.ओ.के. की शक्सगाम घाटी में पक्की सड़क बनाई

- **भारत ने यह कहकर कड़ा विरोध जताया कि, यह क्षेत्र भारत का अभिन्न हिस्सा है, हम अपनी जमीन की रक्षा के लिए हर जरूरी कदम उठा सकते हैं।**

नई दिल्ली, 2 मई। पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर की शक्सगाम घाटी में चीन की नापाक हरकत सामने आई है। ताजा सैटलाइट तस्वीरों से पता चला है कि, चीन दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र के करीब पक्की सड़क बना रहा है।

दरअसल चीन सियाचिन कॉरिडोर के करीब अवैध रूप से कब्जे वाले कश्मीर में कंक्रीट सड़क का निर्माण कर रहा है। अब इसको लेकर भारत ने बड़ा कदम उठाया है।

भारत ने जमीन पर स्थिति को बदलने के अवैध प्रयास के तहत शक्सगाम घाटी में निर्माण गतिविधियों को अंजाम देने को लेकर चीन के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया है। विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बृहस्पतिवार को कहा कि शक्सगाम घाटी भारत का हिस्सा है और नई दिल्ली ने 1963 के तथाकथित चीन-पाकिस्तान सीमा समझौते को कभी स्वीकार नहीं किया, जिसके माध्यम से इस्लामाबाद ने गैरकानूनी रूप से इस क्षेत्र को बीजिंग को सौंपने का प्रयास किया था।

''दरबार पॉलिटिक्स''...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आए। उसके बाद के.सी. वेणुगोपाल राहुल के अगले प्रचार स्थल रायचूर पहुंचे और उन्होंने भी राहुल को अमेठी से चुनाव लड़ने के लिए राजी करने का प्रयास किया।

भाजपा द्वारा यह धारणा निर्मित की जा रही है कि पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा की स्मृति ईरानी के हाथों हारने के बाद राहुल यहाँ फिर से चुनाव लड़ने से डर रहे हैं।

राहुल ने केरल के वायनाड से भी चुनाव लड़ा था, जहाँ वे जीत गए थे। अब यदि वह अमेठी में जीत भी जाते हैं तो भी वह वायनाड को नहीं छोड़ना चाहते। वास्तविकता यह है कि अमेठी और रायबरेली के प्रत्याशी तय करने का निर्णय अंतिम क्षणों में लिया जाएगा। इससे यह पता चलता है कि कांग्रेस अपने महत्वपूर्ण निर्णय किस तरह से ले रही है और कांग्रेस के इन क्रियाकलापों पर पूरे देश की नज़र है।

सूत्रों का कहना है कि, प्रियंका गाँधी चुनाव लड़ने की इच्छुक हैं लेकिन, राहुल गाँधी नहीं चाहते कि, वे चुनाव लड़ें, क्योंकि इससे भाजपा को जोर शोर से यह कहने का अवसर मिल जाएगा कि, नेहरू-गाँधी खानदान पूरी तरह सक्रिय है और तीन गाँधी संसद में हैं। लेकिन, इससे भी अधिक, यह राहुल तथा प्रियंका के सलाहकारों के बीच की जंग है और सूत्रों का कहना है कि, राहुल की टीम ने लगातार उन्हें यह सलाह दी है कि, यदि प्रियंका संसद में पहुँच गईं तो वो एक बड़े ''पावर सैंटर'' के रूप में उभरकर राहुल के लिए, उनके नेतृत्व के लिए भारी चुनौती बन सकती हैं।

शायद इसीलिए उन्हें बिना किसी विभाग के ए.आई.सी.सी. महासचिव बनाया गया है और कोई चार्ज भी नहीं दिया है।

सोनिया गाँधी राहुल की सुनती हैं और जो वो कहते और करते हैं उससे सहमत होती हैं, चाहे वो बात या एक्शन प्रियंका के विरूद्ध ही क्यों न हो।

यह है ''दरबार पॉलिटिक्स''।

चूरू में भाजपा प्रत्याशी कांग्रेस के राहुल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **क्षेत्र के माली समाज ने बड़े पैमाने पर राहुल कस्वां का तिरस्कार किया, क्योंकि नामांकन सभा में कस्वां ने अशोक गहलोत की अनदेखी कर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा से हाथ मिलाया था और इसे माली समाज ने सहजता से नहीं लिया।**

लेकिन कांग्रेस के राहुल कस्वां को हुए इस नुकसान की भाजपा के वसुंधरा राजे गुट ने भरपाई कर दी है। सभी जानते हैं कि चूरू जिले में भाजपा मोटे तौर पर राठौड़ और कस्वां गुट में बंटी हुई है। कस्वां गुट को पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का पूरा समर्थन आज भी मिला हुआ है। आरोप है कि इसी गुट ने तारानगर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में राजस्थान विधानसभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ को पराजित करवाया था। भाजपा द्वारा देवेंद्र झांझड़िया के नाम की घोषणा होते ही राहुल कस्वां और उनके समर्थकों ने राजेंद्र राठौड़ पर टिकट कटवा देने के आरोप लगाने शुरू कर दिए थे। कुल मिलाकर चूरू लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में न तो मोदी लहर कायम रह सकी और न ही विकास के मुद्दों को उठाया जा सका। यहां तो सिर्फ राजेंद्र राठौड़ द्वारा राहुल कस्वां का टिकट कटवाना ही चुनावी जंग का मुख्य बिंदु बना रहा।

इसका फायदा राहुल कस्वां को यह मिला कि जाट समाज उनके पक्ष में खड़ा हो गया। माना जा रहा है कि जाट समाज के 80 प्रतिशत मतदाताओं ने राहुल कस्वां के पक्ष में मतदान किया है। राहुल कस्वां को टिकट नहीं मिला तो वे कांग्रेस में चले गए, परन्तु उनके कई समर्थकों और भाजपा के वसुंधरा गुट ने भाजपा में ही रहकर ही देवेंद्र झांझड़िया को पराजित करके राजेंद्र राठौड़ की राजनीति को पूरी तरह से खत्म करने की ठान ली। सारा खेल संकेतों के आधार पर ही खेला गया। वसुंधरा राजे गुट के कई भाजपा नेता गुप्त रूप से कांग्रेस के राहुल कस्वां के पक्ष में प्रचार करते रहे।

देवेंद्र झांझड़िया के पास उन्हीं लोगों का जमावड़ा रहा, जिन्होंने राजेंद्र राठौड़ को हराने में अहम भूमिका निभाई थी। जातिगत स्तर पर देखें तो एस.सी. और एस.टी. के 60 प्रतिशत वोट परंपरागत रूप से कांग्रेस के उम्मीदवार को ही मिले हैं। लेकिन सैनी समाज के वोट भी बंट गए, 40 प्रतिशत सैनी मतदाता ही कांग्रेस के साथ रहे। सैनी वोट बंटने के कारण यह रहा कि नामांकन सभा के दौरान राहुल कस्वां ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को छोड़कर कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविन्दसिंह डोटासरा से हाथ मिलाया था। सैनी समाज के लोगों ने उसी दिन इस बात की मन में गांठ बांध ली थी कि कस्वां को वोट नहीं देने हैं। ब्राह्मण, प्रजापत, नाई, स्वामी, खाती आदि जातियों के 50 प्रतिशत मतदाताओं ने कांग्रेस को तो 50 प्रतिशत ने भाजपा को वोट दिया है। राजेन्द्र राठौड़ की वजह से राजपूत समाज के सबसे अधिक 95 प्रतिशत वोट भाजपा के देवेंद्र झांझड़िया को मिले हैं। इस हिसाब से कांग्रेस के राहुल कस्वां जीत के अधिक निकट लग रहे हैं।

मजे की बात है कि चूरू में भाजपा का वसुंधरा गुट अपनी ही पार्टी के उम्मीदवार पर भारी पड़ रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अगर चूरू में भाजपा हारी तो कांग्रेस की बजाय अपनी ही पार्टी के वसुंधरा गुट से ही हारेगी। हालांकि हवा तो कांग्रेस के राहुल कस्वां के पक्ष में ही लग रही है लेकिन भाजपा के देवेन्द्र झांझड़िया को भी कम नहीं आंक सकते हैं। झांझड़िया के साथ भीतरघात हुआ है वैसे ही राहुल कस्वां के साथ भी हुआ है और जिसके साथ भारी भीतरघात हुआ है, वो ही चुनाव हारेगा।

'गैर जमानती वॉरंट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की प्रक्रिया से बचने अथवा साक्ष्य को तोड़ने-मरोड़ने या नष्ट करने की कोशिश करेगा।

जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली एक बैंच ने कहा कि, गैरकानूनी वारंट जारी करने के लिए हालांकि, कोई व्यापक गाइडलाइन्स मौजूद नहीं हैं, फिर भी शीर्ष अदालत ने कई मौकों पर टिप्पणी की है कि, गैर जमानती वारंट जारी नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि आरोपी पर जघन्य अपराध का आरोप ना लगा हो और उसके द्वारा कानून से बचने, साक्ष्य तोड़ने-मरोड़ने या नष्ट करने की आशंका ना हो।

बैंच, जिसमें जस्टिस एस.वी.एन. भट्टी भी थे, ने समन आदेश को खारिज करते हुए कहा कि, ''यह विधि की एक तय स्थिति है कि, गैर जमानती वारंट रुटीन में जारी नहीं किए जा सकते और किसी व्यक्ति विशेष की स्वतंत्रता को तब तक कम नहीं किया जा सकता जब तक कि जनता और देश के व्यापक हित में ऐसा करना जरुरी ना हो।''

वर्ष 2021 में, लखनऊ के स्पेशल चीफ जूडीशियल मजिस्ट्रेट ने मैनेजर सिंह नाम के व्यक्ति के विरुद्ध गैर जमानती वारंट जारी करते हुए कहा था कि, जमानत मिलने से पहले व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट दिए जाने का कोई प्रावधान नहीं है।

एक अन्य आदेश में यह बात भी थी कि, चूंकि जमानती वारंट जारी किए जाने के बावजूद आरोपी अनुपस्थित था, इसलिए उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए गैर जमानती वारंट जारी किए गए।

शीर्ष अदालत ने मेनका संजय गांधी व अन्य बनाम रानी जेठमलानी के केस में व्यवस्था दी थी कि, व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने की शक्ति का प्रयोग तभी करना चाहिए, जबकि तथ्य और परिस्थितियों के अनुरुप ऐसी छूट देना जरुरी हो।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्टीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908